दिवालीक दीप

दिवालीक दीप

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

DIBALIK DEEP (दिवालीक दीप)
Collection of Seed and Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88421-79-9
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2018)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा क्रम-

अनचोकक अन्हार/07

अपन बुधियारी अपने खेलक /12

चटवाह/22

भगैतिया/32

अधमरू साँपक फुफकार/43

यादास्त/54

हमर मेला चोरि भऽ गेल/63

गरदैन हलैल गेल/73

दिवालीक दीप/84

हारि केना मानब/96

अनचोकक अन्हार

दू बजे राति, भोरक आगमन नइ भेल छल। जीबू काका ओछाइनसँ उठि लोटा-डोल नेने चापाकलपर पहुँच दू बेर हेण्डिल चलौलैन कि बिजली गुम भऽ गेल। भादोक अन्हरिया पक्षक चतुर्दशीक अन्हराएल-कजराएल अन्हार, एकहाथ हेण्डिलपर रहैन से तँ जीबू काका अनुमानसँ बुझै छला जे हाथ चलौने कलसँ पानि निकलत मुदा दोसर हाथ जे खाली रहैन से हेरा गेलैन। हेरा ई गेलैन जे इंच-इंच नइ सुझने दोसर हाथे कएल की हएत? ने डोल देखै छिऐ आ ने लोटा, जँ टपा-टोइया करि किछु हँथोरि कऽ ताकियो लेब तैयो ऐठामसँ आगू केना बढ़ब? रस्ते अन्हारसँ अन्हरा गेल अछि! दर्जनो कारण रस्तामे रोड़ा बनि ठाढ़ अछि, केतौ-ने-केतौ ठेँस लगबे करत आ ओंघरा कऽ खसबे करब। तेहेन अन्हारमे पड़ि गेल छी जे कियो खोजो-पुछारि नइ करए औत।

दू बजे रातिमे जीबू काकाकेँ ओछाइनपर सँ उठैक कारण अपन सोचक अनुकूल छैन। अपना ढंगे सोचै छैथ आ अपने हाथे-पएरे करैत-धड़ैत जिनगी बिता रहल छैथ। ऐमे दोसराक खुशामदे की? तहूमे बिसवासक संग जीब रहल छैथ। यएह ने भेल जिनगीक मुक्ति जे स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिककेँ प्राप्त होइत अछि। जेकरा राजनीतिक भाषामे गद्दीक सुख कहल जाइए।

जीबू कक्काक स्पष्ट सोच छैन जे खान-पानक जे नियम-कयदा अछि ओ अपना जगहपर भलेँ नीक हुअए मुदा ओकर

नीकपन सभठाम काज देत सेहो बात नहियेँ अछि। जखन गाड़ी-सवारीसँ चलैक चलैन जइ तरहेँ जोड़ पकैड़ लेलक अछि तइसँ कि हम हटल छी, से तँ नहि छी। गाड़ीए छिऐ केतौ टायर-ट्यूब फाटत, तँ केतौ आगू-पाछूक सवारीसँ टकराएत, तँ केतौ कोनो खाधियेमे खसि कऽ उनैट जाएत। तैठाम अपन नियम-कायदाक जिनगीक सुफल की भेल आ मरत के? तँए एहेन रस्ता पकैड़ चलब सोल्होअना बिसवासू नहियेँ अछि जखन जिनगीए अबिसवासू अछि तखन शतायु जिनगी केना भेटत? निसचित केतौ-ने-केतौ ओंघराएब अछिए..!

तहिना योग तंत्रकेँ सेहो बुझै छैथ। जे आदमी भरि दिन चिमनीपर पजेबा उघि वा खेतमे कोदारि पाड़ि औत आ तखन जँ ओ व्यायाम करए लगत तखन देहक दशा की हएत? से तँ वएह ने बुझत जे ओहन अछि। तँए अहू क्रियाकेँ साए बरीस जीबैक जिनगी क्रिया नइ बुझै छैथ। तँए ई कहब जे वृहस्पैत सन गुरु चार्वाककेँ सिरचढ़ नहि छैन सेहो केना नइ कहल जाएत। से तँ छैन्हे। तेहने विचार जीबूओ काकाकेँ छैन्हे, तँए अपना विचारे मस्तीमे खेपै छैथ। अपन सोच छैन जे जइ समाजमे श्रमशक्ति लूटा गेल अछि आ लूटाइयो रहल अछि माने श्रमचोरक बाहुल्य भऽ गेल अछि, जइसँ घटैत-घटैत श्रमशक्ति दू-तीन घन्टापर आबि गेल अछि तैठाम जेतेक गुणा अपन शक्तिकेँ संजोगब ओतेक गुणा वृद्धि ने जिनगीमे भेल। जैठाम साए बरख जीअब किताबक बात भऽ गेल अछि, वास्तविक औरुदा उतैर कऽ पचास-साठि बर्खपर अँटकल अछि तैठाम अपने साए बर्खक धुनिमे रहब, तँ की धुनिया धुनकीमे नइ धुनत, से तँ धुनबे करत। ओहिना नइ ने विद्यापति खिसिया कऽ कहलैन जे ‘आध जीवन हम नीन गमाओल’ ऐठाम आबि जीबू काका अपना मनक विचारक बाट पकैड़ चौबीस घन्टाक दिन-रातिकेँ सोलह-सँ-अठारह घन्टाक अपन

दिनचर्याक कोल्हु गाड़ी अपन जिनगीक रथकेँ रथी बनि आगू मुहेँ ससारि रहला अछि। मनमे एते तँ बिसवास बनले छैन जे कर्मक दुनियाँ छी, जे जेतेक करत से तेतेक पौत आ जे जेहेन करत से तेहेन पौत आ जे जेना करत से तेना पौत। अही दिनचर्याक रथी बनि कलपर पानियोँ आनए आ मुहोँ-हाथ धोइक खियालसँ जीबू काका गेल छला। दरबज्जा, जैठाम जीबूकाका रहै छैथ तैठामसँ साए गजक[1] दूरीपर कल छैन।

कहब जे चार्वाक सन जखन जीबू काका छैथ तखन एहेन नँगरकट बिजलीपर सोल्होअना आश्रित किए भेला जे एहेन फेड़मे पड़ला। फेड़मे पड़ैक कारण भेलैन एकदिस बिजलीक इजोतमे आँखि चोन्हिया जाएब आ दोसर भकुआएल मने ओछाइनपर सँ उठले रहैथ। ओना, बिजलीपर आश्रितो छैथ आ नहियोँ छैथ। बिजलीक अतिरिक्त सेहो अपन इजोतक ओरियान केने छैथ, मुदा से अनचोकेमे छुटि गेलैन। फेर कहब जे जखन जीबू काका अपन जिनगी अपना हाथमे नेने चलै छैथ तखन ओछाइनपर सँ उठला पछाइत भकुआएल किए रहला?

ओना, जीबू काका ऐ बातकेँ नीक जकाँ बुझै छैथ जे लोक भकुआइए नीन टुटला पछाइत। ‘नीनो तँ नीन छी, कोनो पकला पछाइत टुटैए तँ कोनो आम जकाँ बोनाएले-डम्हाएलेमे टुटैए, तँ कोनो सोलहन्नी काँचेमे सेहो टुटि जाइए। जे जेतेक काँचमे टुटल ओ ओते भूत बनि आँखि भकुऔने रहत किने। मुदा से जीबू काकाकेँ नहि भेलैन। जीबू काका जनै छैथ जे रावणी जिनगीक सहोदरे भाए कुम्हकर्ण सेहो छी, बिना ओकरा मारने रावणी-जिनगी रामी-जिनगी नइ बनत, मुदा ओकरा जानोसँ मारि देने तँ काजो नहियेँ चलत, तँए

[1] लगभग दू साए हाथक दूरी

ओकरा मात्र अधमरू कऽ छोड़ि दइक अछि, से केनौं छैथ।

एक हाथे कलक हेण्डिल पकड़ने, दोसर खाली हाथे अन्हारमे वौआइत जीबू कक्काक मनमे जेना अनचोकेमे कजरियाएल इजोत छिटकलैन। जहिना कारिखसँ बनल काजरकेँ लोक आँखिमे अही दुआरे लगैबतो अछि जइसँ ओकर चमक आँखिक चमकी जगौत। तहिना जीबू काकाकेँ कजरियाएल अन्हारमे भेलैन।

जीबू कक्काक कजरियाएल चमकी जगिते जेना भक्क खुजलैन जइसँ चलै-जोकर रस्ता फरिच बुझि पड़ए लगलैन। कोठरीमे आबि अपन भोरक क्रिया-कलापमे लगि गेला।

पौने तीन बजिते, भोरक धाही जगि गेल। अपन महींस काल्हि साँझेमे उठि गेल छल मुदा अबैत अन्हार रातिकेँ देखि महींसकेँ पाल दिअबए नइ निकललौं। मनमे विचारि लेलौं जे जखने भोरक आगमन हएत तखने विदा हएब। सएह केलौं, महींसकेँ छोड़ लगा पीठपर चढ़ि 'चीहैत-चीहैत' करैत विदा भेलौं। जीबू काका जगले रहैथ, कोठरीसँ निकैल रस्तापर आबि कहलैन-

"हमरे जकाँ तोरो कपार छह!"

जीबू काका बेसीकाल चिक्कारी[2] भाषामे बजै छैथ, तँए धाँइ-दे किछु ने बजलौं। एतबे कहलयैन-

"काका जँ अहाँ सन कपार हमरो भऽ जाइत ते अहीं जकाँ ने हमहूँ अखन ओछाइनपर बैसल रहितौं।"

जीबू काका अपन विचारकेँ समटैत बजला-

"आइये रातिक बात सुनबए चाहलयह।"

आब कहू जे एहेन होइ जे काज छोड़ि गप-सप्प सुनितौं, मुदा

---

[2] अलंकारिक

से जीबू काकार्कें कहबैन केना। एतबे कहलयैन-

“काका, अपना नाचे सभ नचबो करैए आ अपने देखबो करैए।”

नहलापर दहला फेकैत जीबू काका बजला-

“सभकेँ सभ नचबो करैए आ सभकेँ सभ देखबो करिते अछि।”

कहलयैन-

“पाल खुआ अबै छी तखन निचेनसँ बैस आगूक गप करब। अखन जाइ छी।”



शब्द संख्या : 924, तिथि : 19 सितम्बर 2018

अपन बुधियारी अपने खेलक

भादवक अमावसिया। आइ लोक कुश उखाड़त अपन पितरक मृतात्माकेँ जल दइले। काल्हिये बेरमे जखन महींस चरबए मुरचा बाध गेल रही तखने परतीपर निम्मन कुश देखि नेने रही। सोलहन्नी गोकर्ण जकाँ। ओना, कुश देखला पछाइत मनमे दू तरहक विचार उठल। पहिल विचार उठल जे जँ कियो नइ देखने हएत तँ सभसँ नीक कुश अपने पइर लागत। मुदा तैसंग ईहो विचार जगल जे जखन बाधेक परतीपर अछि तखन हमरा सन-सन केतेको लोक देखने हएत किने जे हमरा जाइसँ पहिनहि उखाड़ि लेत तखन की करब? दुविधामे पड़ि गेलौं। मनमे ईहो हुअए जे कौल्हुका बदला जँ आइये कुश उखाड़ैक दिन रहैत तँ सभसँ नीक कुश अपने हाथ लगैत। मुदा लगले फेर ईहो भेल जे अखन महींस चरबए एलौं तँए ने देखलिऐ, तइसँ पहिने तँ अपनो नहियेँ देखने छेलौं। असमंजसमे पड़ले रही कि मनमे एकटा विचार जगल। विचार जगल, नीक हएत जे साँझ धरि अही सभमे महींसो चराएब आ कुशक ओगरवाहियो करब। ओगरवाही ई नहि जे लोक उखाड़त तँ मनाही करबै, ओगरवाही ई जे जे कियो घुमै-फिड़ैले औत आ देखत तेकरा चिन्ह लेब। कियो हएत तँ गौंए हएत किने। कट्ठा भरिक परतीपर अछि अपने केते उखाड़बे करब, दुनू गोरे विचारि लेब जे काल्हि अबैकाल (कुश उखाड़ैल) दुनू गोरे संगे आएब आ मिलि कऽ उखाड़ि लेब। संजोग बनल, किरिण डुमैत धरि कियो ने पहुँचल।

सूर्यास्त भऽ गेल, अन्हार जनैम-जनैम जखन पसरौ लगल आ करियाइयो लगल तखन मनमे भेल जे आब कियो ने औत। जँ एबो करत तँ झलफलमे नीक जकाँ देखबो ने करब। फरिच होइसँ पहिनहि पहुँच जाएब आ अगुआ कऽ निमनका कुश उखाड़ि लेब। जेते निम्मन कुश रहत ओते नीक ने जलतर्पण हएत। मन महुआ कऽ मधुआ गेल। टोलक कात जखन एलौं कि सज्जन भाय भेटला। मनमे चपचपी रहबे करए, चपचपाइत बजलौं-

“सज्जन भाय, एकटा निम्मन चीज हाथ लगल हेन, दुनू भैयारी मिलि काल्हि लऽ आनब। मुदा चीजक नाओं अखन नइ कहब, रस्ता-पेड़ा छिऐ कियो सुनि लेत ते अपना सभसँ पहिने लोकि लेत। तँए भोरमे जेबाकाल संग कऽ लेब।”

इजोरिया परीवक चान काल्हि उगत, अन्हरिया चतुर्दशीक चान पैछला भोरमे डुमल। बीचमे आइ अन्हरियाक अमावसया छी कुश उखाड़ैक दिन। चारि बजे भोरेसँ गाममे पीह-पाह शुरू भेल। माने लोक कुश उखाड़ैकेँ प्रथम काज बुझि खुरपियो आ भारपर अनैले भरउघो लऽ लऽ तैयार भेल, सभ अपन-अपन आँगनसँ निकलल।

गामक पीह-पाह सुनि अपनो खुरपी तँ लेलौं मुदा भरउघा नइ लेलौं। भरउघा नइ लैक कारण भेल जे मन गवाही देलक जे कोनो कि धान-चाउर आनब जे कन्होक खगता हएत आ भरउघोक। भेल तँ चारि-पाँच मुट्ठी कुश उखाड़ब, ओकरा कुशेक छीपसँ बान्हि जोड़िया लेब आ एक हाथे खुरपी आ दोसर हाथे कुश नेने आएब, तइले एते भयावह करैक कोन जरूरी अछि।

अँगनासँ निकैलते सज्जन भाय मोन पड़ला। सज्जन भाइक ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जापर मुँह लटकौने सज्जन भाय चौकीपर

बैसल रहैथ। सज्जन भाइक लटकल थुथुन देखि मनमे रंग-रंगक बात उठए लगल। अखन कुश उखाड़ैक मुहूर्त अछि तखन सज्जन भाइक घोघ एना किए फुलल छैन? कहाँसँ अखन चड़फड़ भेल तैयार कुश उखाड़ैले रहितैथ तँ अपने बेथे तेना बेथाएल छैथ जे की कहिऐन..! रस्तापर सँ सहैट कऽ अपनो दरबज्जा पहुँच लगमे बैस पुछलयैन-

"भाय, मन बड़ खसल देखै छी, किछु विशेष बात की?"

जेना कोनो घावकेँ खोदि साफ करैकाल टीस टहकैए तहिना सज्जन भायकेँ सेहो अपन विचारक टीस जगलैन। जगिते नोरसँ आँखि ढबढबा गेलैन, कलपैत बजला-

"आइ धरिक जिनगी पानिमे चलि गेल..!"

सज्जन भाय की बजला से बुझिये ने पेलौं। मनमे उठल- कुश उखाड़ए विदा भेल छी पितृगणकेँ आँजुरसँ जलधार करबैन आ सज्जन भाय कहै छैथ जिनगीए पानिमे चलि गेल! विचारमे केतबो ताल-मेल बैसाबी मुदा तालक कोन जे मात्रोक मिलान नइ भ पबए। अन्तो-अन्त नहियेँ मिलल। मुदा एते तँ बिसवास मनमे अछिए जे विचार केतबो गूढ़ आकि गहींर किए ने हुअए मुदा जँ ओकरा नीक जकाँ धौ-जन होइ तँ ओ जरूर अगूढ़ो आ सहीटो भइये जाइए। मुदा तइले मुँह चुप केने थोड़े हएत। ओ तँ चारू दिसक भूमिका बन्हेनहि हएत। बजलौं-

"भाय..?"

ओना 'भाय' सुनि सज्जन भाय सिहरला मुदा ओइ सिरसिरीमे माने दोसर लगि गेलैन। सज्जन भायकेँ बुझि पड़लैन जे करमू हमरा विचारसँ दलमलित भऽ गेल, तँए मुहसँ 'भाइये' टा निकललै।

हजारो लोकक गाममे, हमरा तीन गोरेक बीच जे दोस्ती अछि

ओ चारिमसँ नहि अछि। ओना, तीनू गोरे तीन जाइतिक छी, मुदा से बेवहारसँ आन नइ बुझैए। जइमे एकटा छैथ सज्जन भाय, दोसर अपने छी करमू आ तेसर छैथ धरमदेव भाय। ओइ दुनू गोरेकेँ जेठ रहने हम 'भाय' कहै छिऐन, आ ओ दुनू गोरे 'करमूओ' कहै छैथ आ 'बौओ' कहै छैथ। से कहै छैथ जखन जेहेन काजक मूड रहलैन। अपनो नीके बुझि पड़ैए किएक तँ जेते बेसी नाम रहत ओते बेसी बैंकमे खत्तो खुजत आ राशन सेहो बेसी भेटत। तहूमे जँ अपने जकाँ पितोक रहल तखन तँ घीबोसँ चिक्कन।

छाती फारि बमछैत सज्जन भाय बजला-

"बौआ करमू, आइ हम घरेमे बेपानि भऽ गेलौं।"

'घरेमे बेपानि भऽ गेलौं' ई की भेल! आन-आन जाइतिक बीच पानि-बेपानि भइयो सकैए मुदा से परिवारमे केना हएत? किछु फुरबे ने करए। झटहा फेक बजलौं-

"एहनो कहीं होइ..?"

चहकल हृदयसँ सज्जन भाय चहकला-

"बौआ करम, देखिते छह जे तीस हजारक नोकरी करै छी। दू हजार पौकेट खर्चले अपने रखि, अट्ठाइस हजार पत्नीक हाथकेँ परिवार चलबैले दइ छिऐन।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"से ते नीक करै छी, भने अपन भारक भारी मोटा हल्लुक रखने छी। जेते मोटा हल्लुक रहत तेते ने चलैमे डेग तेजीसँ ससरत।"

अपना जनैत हम सज्जन भायकेँ नीक बात कहलयैन मुदा हुनका कठाइन लगलैन जइसँ मुँह बिजैक उठलैन। बिजकैक कारण

भेलैन जे डेग हल्लुक हुअ कि भारी मुदा प्रश्न अछि डेगक। केहेन डेग..?

बिचलित मने सज्जन भाय बजला-

“बौआ, बजलह ते नीक बात मुदा से निर्भर करैए पात्र-पात्रपर। गाछक एकटा पात ओहनो होइए जैपर अरपित-परपित भोजनो करैए आ दोसर एहनो गाछक छितराह पात तँ होइते अछि जैपर भोजन पसारलो ने जा सकैए।”

ओना, विचारक क्रम थोड़े-थोड़ मनमे आबए लगल किए तँ पात्रक चर्च आबि गेल। पात्रे ने अपात्रो, कुपात्रो, सुपात्रो आ महापात्रो होइत अछि। एक तँ पहिने सज्जन भाय घरक चर्च केने छला, पछाइत पात्रक चर्च केलैन जइसँ बुझि पड़ल जे परिवारक बीच विचारक बेमनसता छैन तँए सज्जन भाइक मन कड़ुआ कऽ तितिया गेल छैन। अपनाकेँ अगुतबैत बजलौं-

“भाय, आइ कुशी अमावसिया छी, जँ पछुआ जाएब आ लोकसभ उखाड़ि लेत तखन अपने कोन कुश लऽ कऽ पितृगणक जलतर्पण करबैन। से नहि तँ दुनू भाँइ चलबो करू कुश उखाड़ए आ रस्तेमे गपो-सप्प करब।”

सज्जन भाय अपन बेथाकेँ मनेमे दाबि विदा भेला। आन-आन कुश उखाड़निहार अगुआ गेल छला जइसँ रस्ता सुनसान भइये गेल छल। टोलसँ निकैलते सज्जन भाय बजला-

“बौआ करम, दुनियाँमे जँ कोनो जीव बेठेकानक अछि तँ ओ छी मनुक्ख। एकर ने अपन ठेकान छै आ ने दोसरकेँ ठेकियाइये सकैत अछि।”

‘मनुक्ख’क नाओं सुनिते छातीमे चोट लागल। जँ फुटा कऽ बाजल रहितैथ तखन तँ कने कमो चोट लगैत वा नहियोँ लगैत मुदा

चर्च केलैन अछि सहरगंजा मनुक्खक जइमे अपनो तँ छीहे। मुदा लगले मन विचार देलक जे दुनियाँ दुनियाँ छी, कियो मनुक्ख जँ चोरि करैए तेकर माने ई नइ ने हएत जे मनुक्ख होइक नाते हमहूँ चोर भेलौं। मन कनी थीर भेल। बजलौं-

"भाय, मुरचा परतीपर कुश अछि, तँए बीचक रस्ताक समय जे अछि तहीमे अपन विचार अन्त करैक अछि। तँए सभ बात नीक जकाँ बुझा कऽ कहि दिअ। किए तँ कुश उखाड़ैले जाइ छी ओकर पात जेहने कपाह होइए तेहने गरनमा सेहो होइत अछि। तँए, ओइ समय अहाँक विचार सुनैले अनुकूल समय नइ भेटत। आ ने अहींकेँ बजैक होश रहत।"

जहिना गुड़ घाओसँ पीज निकलैकाल सुआसक आस मनमे उठए लगैए तहिना सज्जन भायकेँ सेहो भेलैन, जड़ियेसँ अपन विचार व्यक्त करैत बजला-

"बौआ करमू, शुरूमे जखन अपनो दरमाहा कम छल, ओना अखुनका जकाँ महगियो कम छल आ जिनगियो पछुआएल छल, जइ दिनक बात छी। जखन दुरागमन भऽ पत्नी एली तखन माए कहली जे 'बौआ, जइ परिवारमे जेते बेसी लोककेँ घर चलबैक लूरि होइए ओ परिवार ओतेक नीक भेल। तँए घरक भार कनियाँ-हाथमे दऽ दहुन।"

मुहसँ अनेरे बजा गेल-

"वाह!"

'वाह'क माने सज्जन भायकेँ की लगलैन से तँ ओ जानैथ मुदा आँखि ढबैक गेलैन, बजला-

"माइयक विचार तँ तहिया नइ मानलौं मुदा साल भरिक पछाइत जखन माए मरली तखन पत्नीक हाथमे घरक भार दऽ

देलिऐन।”

बजलौं- “नीक केलौं। बाहरे मरद आ घरे घरणी हएब नीक भेबे कएल।”

खिसिया कऽ सज्जन भाय बजला-

“की नीक भेल कपार! वएह कपार ने आइ कपारकेँ फोड़ि रहल अछि!”

अपना आवेशे सज्जन भाय की बजला से नइ बुझि पेलौं। अपन-अपन सभकेँ बजबोक आवेश होइए आ विचारोक आवेश होइते अछि। कहैकाल मे ने कहि देबै जे समुद्र हुअए कि धार आकि पोखैरिये हुअए कि डबरा, ओकर जे घाट भेल से घाटे भेल, मुदा से मानल केना जाएत! समुद्रो तँ समुद्र छी, कोनो कारी अछि जे कालासागर कहबैए, तँ कोनो लाल अछि जेकरा लालसागर कहै छी। तहिना कोनो शान्त अछि, कोनो अशान्त आ तैसंग प्रशान्तो अछिए। सबहक घाट केना एकरंग हएत? तहूमे एको समुद्रकेँ एकरंगक नहि अनेको रंगक घाट होइते अछि। जइ घाटपर फूल धुअल जाइए ओ फुलधुआ घाट भेल आ जैपर माछ धुअल जाइए ओ मछधुआ घाट भेल आ जैपर साग-पात धुअल जाइए ओहो तँ सगधुआ घाट भेबे कएल किने। तहिना धारो, पोखैरियो आ डबरोमे अछिए...। तखन एक्के शब्दसँ केना सभकेँ निरमौल जाएत? मुदा मनमे ईहो कछमछी रहए जे सज्जन भाइक बेथाक कथा सेहो बुझि ली आ कुशो उखाड़ि ली। तैबीच अखन तक ने सज्जन भाय अपन बेथाक मूल-कन्द उखाड़लैन आ ने अपने बुझि पेलौं हेन। जेतए जा रहल छी सेहो लगिचा गेल अछि। मन बेगाएल, बजलौं-

“आबो अहाँकेँ ई ने ते बुझि पड़ैए जे दुरगमनिया सासुरमे छी जे एते आहे-माहेकेँ पकैड़ महियबै छी, बिसैर जाउ ओइ दिन-

दुनियाँकेँ, गीत सवेद सभी बिसरी जब हाथ पड़ै हर की लगना।"

हमर बात सुनि सज्जनो भायकेँ मनमे कनी गरमी एलैन। बमछैत बजला-

"बौआ, तोरासँ मिसियो भरि लाथ नइ करै छियअ। जेतेक पाइ पत्नीक हाथमे दइ छेलिऐन तइमे दू तरहेँ ओ कटौती करै छेली।"

अपनो मन बेगाएल रहबे करए, बजा गेल-

"ओइ कटौतीक पाइकेँ अहाँ की केलिऐ?"

निसांस छोड़ैत सज्जन भाय बजला-

"किछु ने केलिऐ।"

बजलौं-

"चलू आगू बढ़ू। केना कटौती केलैन?"

सज्जन भाय बजला-

"दू तरहेँ जे कटौती पत्नी करै छेली ओ पहिल छल जेते पाइ महिनामे दइ छेलिऐन तइमे चौथाइसँ बेसीए बँचत होइ छेलैन आ दोसर-सालक चारि मास ओ पाबनियेँ-तिहारक उपास करै छेली, सेहो बँचत होइ छेलैन।"

'उपास'क नाओंपर मन चनैक गेल। कोन उपास? दुखउपास की सुखउपास? मुदा चलैत गाड़ीमे बेसी ब्रेक लगौलासँ जहिना गाड़ीक अपन गतिक गति कमि जाइए तहिना ने विचारोक गाड़ीक गतिक गति हएत। तँए से सभ नहि, पुछलयैन-

"आगू की भेल?"

मौलाएल अधखिल्लू फूल जकाँ सज्जन भाय खलखलाइत बजला- "दुनू बचतकेँ पूजी बना पत्नी तरे-तर महाजनी करए

लगली। सूदिपर रूपिया लगबए लगली। समय आगू बढ़ने गामक महाजनीमे सेहो बदलाव एबे कएल अछि। गामक मर्दकेँ परदेश खटने गाम-गाममे परिवारक भार स्त्रीगणक हाथ आबिये गेल अछि। बाहरी आमदनी लोकक मनोकेँ बदलबे केलक अछि, सुविधाभोगी सोभाव मनुक्खक आदियेकालसँ रहबे कएल अछि।"

आस दैत बजलौं-

"तब की भेल?"

सज्जन भाय बजला-

"तब की हएत कपार। पुरुखपना घोंसैर गेल।"

'पुरुखपना' सुनि जिज्ञासा जागल, बजलौं-

"नइ बुझलौं भाय सहाएब?"

सज्जन भाय बजला-

"परसूखन धरमदेव दोसक माए, केहेन बिमार पड़ली से देखबे केलहक। बेचारा किछु रूपिया-ले आएल छला। हुनकर बिपैत देखि मन कहलक, जेते मंगता तइसँ आगर करि देबैन। अपने ते हाथमे रुपैआ कहियो रखलौं नहि जे रहत। नइ छल। मुदा पत्नी महाजनी नइ करै छैथ सेहो झूठ केना बाजब। माइयक रुपैआक नाओंपर अपन कारोबारक ट्रेड-मार्क लगौने छैथ।"

अपन मन जेना सज्जन भाइक धक्कासँ धक-धका गेल। हुनकर तँ धक-धक करैत धकधकाइते छेलैन। आगूक अनुमान मौगिआही सोभावक अनुकूल अपन आगू बढ़ि गेल। बजलौं-

"भाय, मुरचा परती लग पहुँच गेलौं। जल्दी बाजब अन्त करू।"

ढरकैत आँखिक नोराएल मने सज्जन भाय बजला- "अपन

विचार छल जे दोसकेँ ओहिना मदैत कऽ देबैन। पत्नी अड़ि गेली जे पाइ नैहरक छी, बिना सुदिये नइ देब।”

सज्जन भाइक विचार सुनि मन बिसाइन-बिसाइन भऽ गेल। बकार बन्न भऽ गेल। की बजितौं निरलज्जतोक सीमा तँ असीम अछिए...।



शब्द संख्या : 1897, तिथि : 23 सितम्बर 2018

चटवाह

भोरे बरदकेँ घरसँ निकालि थैरमे बान्हि गाएकेँ घरसँ निकालिते रही कि नागेसर भायकेँ दच्छिन-सँ-उत्तर-मुहेँ अबैत देखलयैन। ओना, नजैर गाएपर छल तँए नागेसर भायपर अझप्पे नजैर पड़ल जइसँ चेहराक रंग-रूप नीक जकाँ नहि देखि पेलौं मुदा नागेसर भायकेँ तँ देखबे केलिऐन। हाथसँ गाएकेँ खुट्टामे बन्हैत मुहसँ नागेसर भायकेँ पुछलयैन-

“भाय, केतए-सँ भोरे-भोर अबै छी?”

ओना, चारि-पाँच बरख नागेसर भाय जेठ छैथ, तँए सामाजिक लोक लाजे ‘भाय’ कहै छिऐन। ने ओ अपन परिवारक छैथ माने वंशगत परिवारक आ ने लतरल लत्ती जकाँ दियादेवाद छैथ मुदा समाजक बीच जे धारा प्रवाहित अछि तइ हिसाबे ‘भाय’ कहै छिऐन। सामाजिक धारा ई अछि जे उमेरक हिसाबसँ आनो-आनकेँ, माने जे अपन वंशगत परिवारक नहियोँ छैथ हुनको लोक ‘बाबा, ‘काका’, ‘भैया’ इत्यादि कहिते छैन। तही हिसाबसँ हमहूँ हुनका ‘भाय’ कहै छिऐन। गाइयक डोरी बान्हि आगू बढ़लौं कि ताबे नागेसरो भाय रस्तापर सँ उतैर दरबज्जा लग पहुँचला। लग पहुँचते नागेसर भाइक चेहरापर नीक जकाँ नजैर पड़ल। नजैर पड़िते बुझि पड़ल जे अस्सी मन पानि नागेसर भाइक मनपर पड़ल छैन। जेठुआ मेघ जकाँ घोघ लटकल देखलयैन। मिरमिराइत नागेसर भाय बजला- “ओहिना गाममे छिछिआइ छी।”

नागेसर भाइक गपक कोनो अरथे ने लागल। तैपर मुहोँ लटकल छेलैन आ चेहरोक रंग उड़ल-उड़ल सन छेलैन जइसँ अनेको प्रश्न मनमे उठि गेल। मुदा एक तँ भोरक समय, यत्र-कुत्र नहियेँ बाजल जा सकैए आ दोसर दरबज्जापर छैथ। हुनकर बातकेँ दहलबैत बजलौं-

“भाय, पहिने चौकीपर बैस तमाकू खाउ, पछाइत दुनियाँ-दारीक गप-सप्प हेतइ।”

ओना, तरे-तर नागेसर भाइक मन मन्हुआएल रहबे करैन मुदा विचारकेँ पेटेमे दाबि कऽ रखने छला। जँ आनठाम आन गोरे लग रहितैथ तखन प्रभावशाली भाषण करैत अपन प्रभावसँ प्रभावित कऽ नेने रहितैथ मुदा जहिना हम हुनका चिन्है छिऐन तहिना ओहो हमरा चिन्हते छैथ तँए वाणीकेँ समेट मनेमे रखने छला। नागेसर भाइक चेहरासँ अनेको रूप टपैक रहल छेलैन, जेना- लटकल मुँह, भोरे-भोर छिछियाएब, तैपर सँ पैंसैठ बर्खक टपान टपल गामक एकटा प्रवुद्धजन! गामक अस्सी-सँ-नब्बे प्रतिशत लोक हिनका आदरक नजैरसँ देखिते छैन जेकर जीबैत रूप अछि जे नवतुरिया धिया-पुतामे कियो ‘ओझहाबाबा’, तँ कियो ‘भगतबाबा’ तँ कियो ‘गुनीबाबा’ कहिते छैन। तैसंग ओइसँ ऊपरका लोक माने चेष्टगर लोक सेहो कियो ‘भगतकाका’ तँ कियो ‘गुनीकाका’ सेहो कहिते छैन। जनिजाति तँ सहजे बताहे भेल छैथ जइसँ जिनका जे नीक नाम रूचै छैन से से कहै छैन। तहिना तहूसँ ऊपरक उमरदार आदमी सेहो ‘भगत भाय’, ‘गुनीभाय’ कहिते छैन। मुदा हम तइ सभसँ अलग सोझे ‘भाय’ कहै छिऐन, उमेरक लेहाजसँ।

नागेसर भाइक रूप-रंग देखि अनेको प्रश्न मनमे उठि रहल छल जे पुछिऐन मुँह किए लटकल अछि आ ठोरसँ फुफरी किए

उड़ैए। मुदा अनेरे किए झूठ-फूसमे झूठा-फूसाक संग अपनो सार्थक समयकेँ निरर्थक बनाबी। कहब जे टोकबे किए केलिऐन, तइमे कनी नजैर मिलानी भऽ गेल। नजैर मिलानी ई भेल जे जहिना गाइयक डोरी पकड़ने रस्ता दिस तकलौं तहिना चटपटाएल नागेसर भाइक मन सेहो गप-सप्प करैले चटपटाइत देखलयैन। जइसँ भोरू पहरक दुआरे मनमे आबि गेल जे भरिसक तमाकू दुआरे दस्त ढील नइ भऽ रहल छैन तँए कछमछा रहल छैथ। तँए कहलयैन, तमाकू खा लिअ। जँ कोनो मुसीबतमे पड़ल छैथ तँ अपने ने मुँह खोलता। ओना, मुसीबतो नीक-बेजाए दुनू होइए। दुनू मानेकेँ अपन-अपन भाँजो होइते अछि। जँ नीक-ले मुसीबत पड़लैन ओकर महत् अलग भेल आ जँ अधला वृत्तिक मुसीबत छैन तँ ओकर महत् अलग भेल। आँखि मुइन सभ मुसीबतकेँ एक्के कसौटीपर तौल बाजब ओ तँ अँखिमुन्ना गुण भेल। ओना, आँखिमुनो गुण दू रंगक अछिए। एकटा अछि नीककेँ आँखि मुइन मानि चलब आ दोसर भेल अधलाकेँ नीक मानि आँखि मुइन मानबो करब आ चलबो करब।

ओना, सँपकट्टा वा छुछुनैरकट्टा जकाँ भीतरे-भीतर नागेसर भाय कछमछाइते छला तँए हुअए जे बफैर कऽ बाजी, मुदा चालीस सालक पैछला जिनगी दुनू गोरेकेँ एते दूरी बनाइये चुकल अछि जे जहिना विषवत रेखा टपला पछाइत लोक बुझैए जे हम उत्तरी ध्रुवक यात्रापर छी आकि दछिनी ध्रुवक। तैबीचक लोक तँ बुझिये ने पबैए जे दुनियाँक दूटा छोरो अछि आ दूटा धुरियो अछि आ अपने कोन छोर पकैड़ चलि रहल छी। बड़ीकालक पछाइत, तैबीच एकबेर तमाकू खा थुकैर सेहो फेक चुकल छेलौं आ दोसरो जूमक तैयारीमे थोपड़ी दऽ तमाकुलक गरदीकेँ उड़ा चुकल छेलौं, नागेसर भाय बजला-

“आब जीब कठिन भऽ गेल। सौंसे दुनियाँ एक्के बेर उजैड़

गेल।”

‘आब जीब कठिन भऽ गेल’, नागेसर भाइक ई विचार अपनो नीक लागल जे अपनो जीब तँ कठिन भइये गेल अछि, मुदा ‘एक्के बेर दुनियाँ उजैड़ गेल’, एकर कोनो माने लगबे ने कएल। तहूमे अपने उजड़ब माने अपन परिवारकेँ उजाड़ब आ दुनियाँ उजड़ब, दुनू दू भेल। दुनियाँ ते सदिकाल किछु-ने-किछु उजैड़ते रहैए आ बनिते रहैए, मुदा अपन जिनगी तँ से नइ छी जे सदिकाल बनत आ सदिकाल उजड़त। एकर तँ अपन आधार छै, अपन घाट आ अपन बाट छइ...। बजलौं- “भाय ई की कहलिऐ जे एक्केबेर दुनियाँ उजैड़ गेल? जखन दुनियेँ उजैड़ जाएत तखन रहब केतए?”

जहिना हृदयबेधी वाण लगने लोकक मन थरथरा जाइए, हृदय दलमलित हुअ लगैए तहिना नागेसर भायकेँ सेहो हुअ लगलैन। मन थरथराए लगलैन जइसँ मुँहक बोली बन्न भऽ गेल छेलैन। मुदा जाबे अपने मुहेँ अपन बेथा नइ बजता ताबे बुझब केना। तहूमे ओहन लालबुझक्कर नहियेँ छी जे भुतलग्गु जकाँ अनेरे बड़बड़ाए लगब। मनमे भेल जे दोहरा कऽ फेर पुछिऐन मुदा लगले ईहो भेल जे नइ सुनने रहितैथ तखन ने पुछब उचित होइत मुदा जखन लगमे बैसल छैथ तखन नइ सुनलैन सेहो केना मानल जाएत। भऽ सकैए जे जँ सभ शब्द नहियोँ सुनने रहितैथ तँ उनटाइयो कऽ पुछबे करितैथ। सेहो नहियेँ पुछलैन। तखन किए ने बाजि रहल छैथ? मनमे ईहो हुअए जे भऽ सकैए कोनो एहेन काज भेल हेतैन जइसँ जिनगी तँ प्रभावित होइत हेतैन मुदा लाजक संकोचे नइ बजैत होइथ।

चालिस-पैंतालीस बर्खसँ नागेसर भाय चटवाहक काज करैत आबि रहल छैथ। चालीस कि पैंतालीस बरख तँ डायरीमे लिखि कऽ नइ रखने छी जे निश्तुकी कहब, मुदा अनुमानसँ कहि रहल छी।

किए तँ जखन उठैत जुआनी नागेसर भाइक छेलैन तहियेसँ देखैत आबि रहल छी जे नागेसर भाय गामक एक नम्बर चटवाह छैथ, केहनो साँप काटल बीखकेँ चाटीए-सँ उतारि दइ रहथिन। तहूमे केकरो ऐठाम जँ सँपकटिया भेल तैठाम ओ खबैर होइते अपनो वा आनोक काजकेँ छोड़ि दौड़ले जाइ छलाह। जाँति-पाँजि, दियाद-वाद किछु ने मानै छला। अपनाकेँ उपकारी कहि उपकार करए पहुँचिये जाइ छला। चलतियो एहेन रहैन जे तीन-तीन, चरि-चरिटा सँपकट्टाक नम्बर लागि जाइ छेलैन।

ओना, जइ गाममे बिसहाराक गहबर छल तइ गामक लोककेँ चटवाह बनब असान छेलइ। किए तँ दसमीमे जखन दसो दुआरि खुजि जाइए तखन बिसहाराक गहवरक भगत सेहो दसमीक पहिले दिनसँ गहवरमे भगतै करए लगै छला। रंग-रंगक डाली पहुँचते छेलैन, केकरो धिया-पुता नइ होइ छल तेकर डाली, तँ केकरो घरमे डाइन-जोगिनक उपद्रव बढ़ि गेल तेकर डाली, तँ केकरो धिया-पुता बहवारि भऽ गेल तेकर डाली इत्यादि-इत्यादि अनेको डाली पहुँचते छेलैन आ साँझू पहर जखन भगत गोसाँइ खेलाइ छला माने देवता देहपर अबै छेलैन तखन फूल-अच्छत-भूभूतसँ ओकर गुहारि करिते छला। भगत जहिया मरला तहियासँ भगताइयो बन्न भेल आ गहवरो खसल। खाएर जे भेल। गामोक लोक (जे चटवाह बनए चाहै छल) आ आनो अड़ोस-पड़ोसक गामक लोक आबि-आबि चाटी धड़ै छल आ जेकर चाटी उठल (उठल- माने आगू घुसैक चटिवाहि करै छल से) ओ चटवाह बनै छल। नागेसर भाय चनौरा गहवरक सीख छला। इलाकामे सभसँ जगता-जोर गहवर ‘चनौरा-गहवर’केँ बुझल जाइत छल। महंथानाक गहवर। दुर्गोपूजा आ बिसहरोक गहवर महंथजी बनौने छला। ओना, छोट-मोट[3] स्वास्थ्य केन्द्र सेहो बनौनहि छला।

[3] ग्रामीण स्तरक

जइमे एम.बी.बी.एस डॉक्टर तँ नहि छला मुदा एकटा नर्स जरूर रहै छेली। ओहो तेहेन ट्रेण्ड (ट्रेनिंग कएल) नहियेँ छेली मुदा पित्ती डॉक्टरकेँ रहने बहुत किछु सीखि नेने छेलीहे। महंथजी महंथेजी छला। बिआह नइ केने छला। ई दीगर भेल जे महंथजी अपने ऐठाम नर्सकेँ रहैक बेवस्था केने छला। आन गामक बेचारी नर्स, तँए डेराक जरूरत रहबे करैन। तैपर सँ महंथानाक आवासमे डेरो भेट गेलैन। मुदा एहेन कहियो ने भेलैन जे कुत्ताक बीख जकाँ लसैर लगलैन।

अनहरिया पखक तृतीया इजोरिया जकाँ गाममे बुधिक चान जरूर उगि चुकल छल मुदा छोट रहने (कम समैयक प्रकाश) गाम अन्हारक अन्हारमे पड़िये जाइ छल। जइसँ जिनगीक सभ खगताक रस्ताक दुआर बाधित छेलैहे मुदा केतबो लोक पछुआएल छल तँए ओकरा मन-पेट नइ छेलै सेहो तँ नहियेँ मानल जा सकैए। से तँ छेलैहे, तँए अपन विचारो आ विचारक विश्वसनीयता सेहो छेलैहे। ओही जिनगीक जुग छल जइमे ओझा-गुनी, चटवाह, डानि-जोगिन सबहक उत्पैत भेल छल।

भौगौलिक दृष्टिसँ अपना सबहक इलाका केहेन अछि आ केहेन छल से तँ सब भोगिये रहल छी जे गामक फेदार मोरंगक दफेदार बनिते अछि। एकदिस कोसी धारक बाढ़िक पानिक विभीषिका जइमे नेपालक पहाड़ो आ जंगल-झाड़सँ सेहो बाढ़िमे साँप-कीड़ा भँसि-भुँसि आबिये जाइ छल। सतासी (1987) इस्वीक बाढ़िक विभीषिका जकाँ पहिनौं भेल हुअए तँ भेल हुअए मुदा तीन-चारि जेनरेशनसँ नहि भेल छल, जइमे साँपक उपटान नीक जकाँ भेल। मुदा तइसँ पहिने सँपकटियाक संख्या बहुत बेसी छल। वैज्ञानिक ढंग, वैज्ञानिक ढंगक माने भेल जाँचल-परखल ढंग, जे विश्वसनीय अछिए। तेकर बहुत बेसी अभाव छल। ओना, दुनियाँक आन-आन किछु देश अगुआएलो आ किछु पछुआएल सेहो अछिए

मुदा अपना सभ हजारो बर्खक गुलामीसँ लगले निकलले छेलौं, तँए अभावे-अभाव सभ कथुक रहबे करत किने।

दोसर उपटान साँपक 1988 इस्वीक भुमकममे भेल। धरती डोलने बिल सभ दबाएल जइसँ बिलमे रहैबला साँप नष्ट भेल। ओना, साँपोक वंशवृद्धि अलग-अलग अछि। किछु साँप बच्चा दइए तँ किछु साँप अण्डा दइए। तैसंग प्रकृत प्रदत्त सेहो अछि। अगता बर्खाक मौसममे साँपक पतौरा धरतीपर अकाससँ खसैए जइमे साइयो साँप निकलैए। नब्बे-बेरानबेक[4] शीतलहरी विषैला-सँ-विषैला साँप धरिकेँ, खासकए गहुमनकेँ तेना उपटौलक जे बीछा गेल। तैसंग अस्पतालो सभमे आ प्राइवेटो क्लिनीकमे साँपक बीखक इलाज हुअ लगल जइसँ सँपकटिया मृत्युक दर कमल। आजुक आर्थिको दृष्टिसँ आ जरूरतोक दृष्टिसँ लोक सजग भेबे कएल अछि जइसँ साँपक कोन बात जे छुछुनैरो कटलाहा सभ डॉक्टर ऐठाम पहुँचए लगल अछि। साँपे जकाँ पाँखिबला फैनगा-फैनगी सेहो जनमारा अछिए मुदा तहूसँ लोककेँ आफियत भेटिये रहल अछि।

समय आगू बढ़ल, नागेसर भाय सन-सन केतेको लोकक हाथक काज छीनाएल। जखन हाथक काजे छीना गेल तखन ई हाथ करत की, आ नइ करत ते खाएत की, अही चौबट्टीक मोनिमे नागेसर भाय खसला अछि। खसला पछाइत सुमारक सोभाविके अछि। जइ लूरिक चलैत समाजमे पेटक संग विचारो चलै छल, से जिनगीए उनैट कऽ पुनैट बिलैट गेल, आब केतए रहब? नागेसर भायकेँ सुमारक होइ छैन जे जइ जिनगीमे भैया, काका, बाबा बनि जीबै छेलौं तैठाम कोचिंगक जे छौड़ा सभ अछि सेहो सभ तेना कऽ ताना मारैए जे देह झनझना कऽ तुनतुना-तनतना जाइए मुदा करब की।

---

[4] 1990-92

आब की हमर ओ उमेर अछि जे छौड़ा-सभसँ मुँह लगाएब। सुमारक होइ छैन जे जइ हाथक चाटी-बले ओहन जिनगी बना चलैत आबि रहल छेलौं, तैठाम कोनो पूछ नहि! जइसँ तरे-तर नागेसर भाइक मन मोम जकाँ पिघैल-पिघैल जरि रहल छैन मुदा मनक एते शक्ति नहि जुटा पेब रहल छैथ जे अपन जिनगीक हारकेँ जीत दिस बढ़ौता। अखन तक तँ नीके-नीक जिनगीक बीच ने जीबैत आबि रहल छी तखन बीच रस्तापर ओहन मोनि केना फुटि गेल जे बुझबे ने केलौं! झोंकमे झोंकाइत नागेसर भाय बजला-

"रस्तेपर मोनि फुटि गेल!"

ओना, रस्तापर मोनि फुटबक एक माने भेल जे बाढ़िक समय एहेन होइ छै जे धाराक प्रवाहमे रस्ता ढहि-टुटि कऽ धाराक मोड़ सेहो बनैए जइसँ मोनि फुटै छइ। आ दोसर होइए जे चढ़ानसँ निचान माने ऊपरक जमीनसँ नीचरस जमीनमे धाराक धारसँ जे खाधि बनैए ओहो बढ़ैत-बढ़ैत मोनि बनैए जे नम्हरो-गहींरो बनैए आ उथरो-आथर बनिते अछि। मुदा ऐठाम तँ नागेसर भाय अपन जिनगीक गप कऽ रहला अछि, खेत-पथारक रस्ताक मोनि जकाँ ओ मोनि थोड़े हएत, तँए किए ने नागेसरे भायसँ बुझि ली। बजलौं-

"की मोनि कहलिऐ भाय?"

हमर बात सुनिते नागेसर भायकेँ मनमे जेना खौंत फेकलकैन तहिना बजला-

"अपन मनक मोनि सेहो फुटल आ गामक जे छौड़ा-माड़ेरक विचार सुनै छी ते बुझि पड़ैए जे अपनोसँ बेसी ओकरे सबहक मोनि फुटल छइ। की कहबह!"

नागेसर भाइक जिनगी ओहने बुढ़ाएल माछ जकाँ भऽ गेल छैन जहिना सौभरी ऋृषि यमुना नदीक जलमे तपस्या करैत नदी-

माछक गति देखलैन जइसँ जहिना विराग उत्पन्न भेलैन तहिना तँ ने नागेसरो भायकेँ भऽ रहल छैन। फेर लगले मनमे उठल जे सौभरी ऋृषि जकाँ नागेसर भाय जलसमाधि थोड़े नेने छैथ जे विचारसँ वैरागपन औतैन। हिनका तँ गरदैनमे बड़का ढोल बान्हि देबैन तैयो बकार नइ फुटतैन। मन छलैक गेल, विचारक धारा एकाएक धड़धड़ाइत निच्चाँ खसए लगल। मुदा तैयो खसैत-खसैत मन बजिते गेल जे शुरूए-सँ नागेसर भायकेँ मनाही करैत एलौं जे मनुक्ख बनि जखन जन्म लेलौं तखन मनुक्खक रूप धारण करब तखने ने मानव मनुक्ख कहाएब, से सभ दिन गुरुआइ करैत रहि गेला आ आब कनै छैथ। मनकेँ मारि बजलौं-

“भाय, आब अहाँकेँ कोन मतलब ऐ दुनियाँ-दारीसँ अछि, ने रहब ओइ टोल ने सुनब ओकर बोल, बेटासँ खरचा लिअ आ दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस रस्ता दिस तकैत सीताराम सीताराम राधाकृष्ण राधाकृष्ण करू।”

हमर बात सुनिते नागेसर भाइक मन जेना फुटि कऽ छिड़िया गेलैन तहिना बजला-

“बौआ, तोरासँ लाथ की। दुनू बेटो मुँह फुला कऽ अपन-अपन बहु-बेटा लऽ कऽ जेतए नौकरी करैए तेतइ चल गेल अछि। दुनू परानी-बुढ़बा-बुढ़िया घरमे छी।”

पुछलयैन-

“बेटा किए मुँह फुलौने अछि?”

नागेसर भाइक बेइमान मन इमानक धरती पकैड़ लेलकैन, जइसँ विचारमे बदलाव आबिये गेलैन। बजला-

“बौआ, इमान-धरमसँ बजै छी, दुनू बेटाक परोछक बात छी, जेठका बेटा साइंस पढ़ने खोंटकर्मा भइये गेल। बेर-बेर ओ मनाही

केलक जे अहाँ झूठ-फूसक धन्धा छोड़ू, मनुक्ख छी मनुक्ख जकाँ रहू, मुदा..?”

‘मुदा’ कहि नागेसर भाय चुप भऽ गेला। मन मानि गेल जे बेटा लग अपन दोख कबुल नइ करए चाहलैन, बजलौं-

“हे जेठका बेटा अपन जेठपन देखौलक, तँए फुलि रहल मुदा छोटका किए फुलल अछि?”

नागेसर भाय बजला-

“जेठके ओकरो तेना कऽ दुइर केलकै जे ओहो ओहिना दुरि भऽ गेल। हमहूँ अड़ि गेलौं, आमदनियोँ छल आ समाजमे पूछो तँ रहबे करए।”

बजलौं-

“अच्छा आब छोड़ू मायाजालकेँ, बेटासँ खरचा दिया दइ छी। शान्तिसँ रहू।”



शब्द संख्या : 2134, तिथि : 4 अक्टूबर 2018

भगैतिया

तीस बर्खक पछाइत गोपालपुर गाम पहुँचते मोन पड़ला दुखन भगत। कोसी धारक बीच ओ गाम बसल अछि। एहेन शंका नइ करब जे धारक बीच गाम केना बसल अछि। धारक पेटमे तँ पानि रहै छै तैबीच घर केना बनत आ बिनु घरे गाम केना बसत..? सभ सौभरीए ऋृषि जकाँ नइ ने छैथ जे जलक भीतर समाधि धेने रहता। धारक बीचक माने भेल जे गोपालपुर गाम अपन सीमा चौहद्दीक निर्धारित जमीनक बीच अछि, मुदा धारक तँ कोनो सींग-नाँगैर अछि नहि जेमहर मन भेलै तेम्हरे विदा भेल। भलेँ नामक संग गुण-धर्म किए ने ओइ धारक रहि जाए मुदा जइ गाम देने मुँह बनौत तइ गामक माटि ओहिना थोड़े देत, ओ तँ ओकर गुण-धर्मकेँ प्रभावित करबे करत किने। खाएर जे करए। पहिने जे कोसी धार बहै छल माने आइसँ तीस बरख पहिने, ओ गामसँ माने गोपालपुरसँ पूब उत्तरे-दछिने बहै छल। साले-साल पच्छिम मुहेँ कटनियाँ करैत घुसकए लगल। जइसँ गोपालपुरक जीवन–मनुक्खसँ लऽ कऽ माल-जाल धरिक–दूभर हुअ लगल, मुदा गामक लोककेँ दोसर चारे की? ओना, किछु गोरे परिवार संग गाम छोड़ि नेपालमे बसि गेला आ किछु गोरे नोकरी करए शहर गेला ओ ओतै रहैक घर बना लेलैन। मुदा गामो तँ गाम छी, केतबो लोक मिथिला छोड़ि बाहर विदेश तक किए ने बसल हुअए मुदा मिथिलाक जनसंख्या ओइसँ मेटा थोड़े गेल, ओ तँ तेहेन माटि-पानिपर अछि जे आन देशमे दर्जन पैदा

केलापर (बाल-बच्चा) पुरस्कार भेटैए, मिथिलामे ओहन-ओहनकेँ मानियोँ ने अछि।

तीस बर्खक बीच गोपालपुर गामक लोक एकैस बेर धराड़ी बदललक। जे धार गामक पूब देने बहै छल ओ अखन गामक पच्छिम देने बहि रहल अछि, मुदा पुरनो धार सभक पेट तँ ओहिना बनल अछिए। बरसातमे पानिसँ भरबे करैए, तँए कोसी धारक बीचक गाम भेल गोपालपुर।

तीस बर्खक बीच गोपालपुर नइ जाइक कारण की भेल। जैठाम जेबाक कारण अछि तैठाम नइ जेबाक कारण केतए-सँ आएल? भाय, अहाँसँ लाथ की, तीस बरख पूर्ब गोपालपुरसँ आवाजाही नीक जकाँ छल। कम-सँ-कम सालमे एकबेर, नहि जँ परिवारमे बेसी काज[5] भेल तँ दुइयो बेर तीनियोँ बेर जाइ छेलौं। नइ जाइक कारण भेल जे बाढ़िक समय बहिनक सासु साँप कटने मरि गेली ओहीमे नौत पुरए गेल छेलौं। तीनटा धारमे, ओहन धार जे भुतिया गेल छल, माने मरैन भऽ गेल छल- डुमए लगलौं। तेसर बेर जखन बँचलौं तखन मन कहलक जँ अपने आँखि मुना जाएत तखन एहेन-एहेन सम्बन्धक कोन बेगरता अछि। पारिवारिक सम्बन्ध अछि, बड़बढ़ियाँ। सभ जखन परिवारमे छीहे तखन अपन-अपन परिवारक रछिया करैत ने दोसरोक करब। ओही बाढ़िक डर तीस सालसँ पछुअबैत आबि रहल अछि, तँए तीस बर्खक पछाइत गोपालपुर गेल छेलौं। रस्ता कातेमे दुखन भगतकेँ देखलयैन। दुनू आँखिक आन्हर दुखन भगत एकचारीबला दरबज्जाक चौकीपर बैसल छला। नजैर पड़िते अपन मन रोकलक। मन रोकलक ई जे जइ गाम पहुँचलौं ओ गौंआँ ने आगत बुझि टोकता।

---

[5] ओहन काज जइमे नौत-हकारक चलैन अछि

आन्हर दुखन भगत, देखबे ने केलैन तँ टोकता की। धोखे-धोखीमे दुनू गोरे बीरानक-बीरान बनले रहलौं। ओना, कहब जे एहनो तँ बहुत लोक छथिये जे अपन पद-गरिमाकेँ निमाहैत अगुआ कऽ नहि टोकए चाहै छैथ। भाय, जहिना पसीन अपन-अपन होइए तहिना ने विचारो अपन-अपन होइते अछि। सूर्यास्तक समय भऽ गेल छल। दस बरख पूर्ब बहिन मरि गेल, मुदा परिवारो बँचल छै आ गामो बँचल अछिए। ओना, स्वतंत्र देशक जेते तेजीसँ उन्नैत करैक जरूरत गामकेँ छल तेते तँ नहियेँ भेल अछि मुदा किछु-किछु तँ भेबे कएल अछि। सड़क आ सड़कमे पुल बनने गाम अबै-जाइक सुविधा बनि गेने गाड़ी-सवारीक अबरजात सेहो बनियेँ गेल अछि।

ओना, तीस बरख पूर्ब जे घर-घराड़ी बहिनक छेलै ओ अखन नहियेँ छै मुदा ओइसँ नीक अखुनका जरूर बनि गेल छइ। पुछैत-पुछैत पहुँचल छेलौं। पहुँचते परिवारक कियो ने चीन्हलक। परिचय-पात भेला पछाइत चीन्हलक। चिन्हते देरी आगत-भागत करए लगल। कुशल-छेम भेला पछाइत भाँजपर चढ़ल जे अपन परिचित एक्को गोरे, सिवा दुखन भगत छोड़ि गाममे कियो दोसर नहि अछि। ओना, बहिनक परिवार जहिना लोकसँ सम्पन्न बुझि पड़ल तहिना गुजरो-बातसँ। अपनासँ जेठ मसियौत बहिनक सासुर गोपालपुर छी। मौसीकेँ एकोटा बेटा नहि, दूटा बेटीए-टा। मौसियोक आवाजाही अपना ऐठाम आ अपनो सबहक आवाजाही मौसी ऐठाम तहियेसँ अछि जहिया अपन जन्मो ने भेल छल। जहिना मौसीकेँ नैहर छुटि गेल छेलैन तहिना अपनो मात्रिक आ माइयोक नैहर छुटिये गेल छल। किए तँ नैहरक गाम कमला धारक दछिनवरिया दहिना मुँहथैर भट्ठा पड़ने उपैट गेल। ओ सभ–माने मामाक परिवार–गामसँ उपैट कलकत्तेमे कमेबो करै छैथ आ भाड़ाक घरमे रहबो करै छैथ।

जहिना माए मौसीक परिवारकेँ नैहर जकाँ बुझै छैथ तहिना

मौसियो बहिनक परिवारकेँ नैहर बुझि नीक जकाँ आवाजाही रखने छेली। जइसँ अपनो सभ मौसी गामकेँ मात्रिके बुझै छेलौं। मौसीकेँ दूटा बेटीए-टा छेलैन संजोग एहेन जे अपने दू भाँइये छी बहिन नहि अछि। भरदुतियामे अरबैध कऽ जाइते छेलौं। ओना, अपना ऐठामक परम्परामे एक बहिनकेँ दोसर बहिन ऐठाम ऐबा-जेबाक बेवहारिक चलैन नहि अछि मुदा परिस्थिति तँ सभ कथूकेँ बदलैत चलिते अछि। तही बदलल परिस्थितिमे मौसीक आवाजाही सेहो अपना ऐठाम भेलैन आ माइयो मौसी ऐठाम अबै-जाइ छेली। मसियौत दुनू बहिनक बिआह भेल। जेठ बहिनकेँ गामसँ सटले दोसर गाममे भेल तँए आएब-जाएब असान रहल, मुदा दोसर बहिनक बिआह गोपालपुर भेल।

जलखै-चाह केलाक पछाइत गप-सप्प करैले मन उबियाए लगल। केकरासँ गप करब? मन तेना उबिया गेल जे किछु नीके ने लगैत रहए। गप-सप्पक माने भेल जे बराबरीमे दुनू दिससँ चलैए। ऐठाम तँ से नहि अछि। जहिना बचहन भागिन-भगिनी अछि तेहेन चेष्टगर मरदा-मरदी नहियेँ अछि। बच्चा सभसँ गप-सप्प करैक मन नइ भेल। अखन पढ़ैयो-लिखै दिस धियान नहियेँ गेल। अखन दुख-सुखक गप-सप्प करैक मन अछि। तइले तँ ओहन संगी चाही। हारि-थाकि दुखन भगत लग विदा भेलौं। विदा होइसँ पहिनहि भाँज लगि गेल छल जे दुखन भगत दुनू आँखिक आन्हर भऽ गेल छैथ। एहेन मुसीबतमे जखन बेचारे पड़ल छैथ, तैठाम जँ हम अपन गौंआँ-अनगौंआँक बड़प्पन ताकए लागी, ई नीक नहि। पहुँचलौं। देखलयैन दुखन भगतकेँ एकचारीक चौकीपर असगरे बैसल।

मोन पड़ि गेल तीस बरख पूर्बक दिन, जखन दुखन धामि मानल जाइ छला। ओइ समयमे ऐठाम दिन-राति दस गोरे दरबज्जापर बैसितो छेलैन, खेबो-पीबो करैन आ सभ मिलि झालि-

मृदंगपर भगैतियो गबै छला। आइ दुखन भगत, असगरे दरबज्जाक जिनगीसँ उतैर एकचारी जिनगीमे बास कए रहला अछि। गाम-गाम बिजली भेलो पछाइत गोपालपुरमे अखनो डिबिये-लालटेन अछि। सीसीक गरदैनमे तार बान्हि चारसँ लटकल डिबियाक इजोत। फरिक्केसँ बजलौं-

“धामि साहैब, नमस्कार..!”

‘नमस्कार’क उत्तर नहि दैत दुखन भगत बजला- “अहाँकेँ चिन्हलौं नहि?”

दुखन भगतक विचारसँ मिसियो भरि मनमे कुवाथ नहि भेल, जे दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ एहेन बात किए कहलैन। सभ कि औढ़वदानी (औढ़रदानी) भोलेनाथ नहि ने छैथ जे बिनु परिचय पुछनौं किनको असीरवादी दए देता। अपन तँ देखल-सुनल दुखन भगत छैथ जिनकर जवानी-जुआनी नेने चमकैत छेलैन। जे शरीरसँ अथबल भऽ गेल छैथ मुदा मन तँ वएह ने छैन जे धरमराजक भगैत गबैत-गबैत झालि-मृदंग बनि जाइ छला। एक्के शब्दमे बजलौं-

“फल्लाँ गामक फल्लाँ छी।”

नाम सुनिते अन्हराएल आँखिये चौकीपर उठि कऽ दुखन भगत दुनू बाँहि पसारि छाती मिलबए चाहलैन मुदा तैबीच मनाही करैत बजलौं-

“अहाँ जेतए बैसल छेलौं तेतै बैस रहू हमहूँ चौकीएपर अहींक बगलमे बैसै छी।”

जहिना बजलौं तहिना दुखन भगत अपना जगहपर बैस गेला। बगलमे हमहूँ बैसलौं। दुखन भगत पुछलैन- “देस-कोसक हाल कहू।”

दुखन भगतक प्रश्न सुनि क्षुब्ध भऽ गेलौं जे अपने आन्हर भेल

एकचारीमे असगरे बैसल काहि काटि रहल छैथ तखनो देशे-कोसक हाल-चाल पुछलैन। विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"यार, की कहब देश-कोसक हाल, परिवारेमे तेना ओझरा गेल छी जे किम्हरो तकैक पलखतिये ने होइए।"

हमर विचार जेना दुखन भगतकेँ नीक लगलैन तहिना बजला-

"सबहक तँ यएह हाल अछि।"

गर भेटल बातकेँ आगू बढ़बैक। ओना, अपनो बुझल अछि जे दुखन धामिकेँ जहिया पाँचटा धिया-पुता भऽ गेल छेलैन तहिये पत्नी मरि गेलैन। चालीस-पैंतालीस बर्खक उमेर तहिया दुखन धामिक रहैन। की बोलीक टाँस आ भगैतिक सूर छेलैन कण्ठमे! केकरो मोहित करैक शक्ति छेलैन। बीस-बाइस बर्खक एकटा लड़की फनैक कऽ दुखन धामिक संग बिआह ऐ कहा-बधीपर करैले राजी भऽ गेल जे पाँचो बेटा-बेटीक निमरजना हम अपन कोखिक बेटा-बेटी जकाँ करबै। दुनूक बिआह भेलैन...। ओना, अपना मनमे छल जे दुखन भगतसँ भगैतिक सम्बन्धमे बुझी मुदा से भेल नहि। चौकीपर बैसते दुखन भगतक समदाही स्त्री, समदाही ऐ दुआरे कहलौं जे जखन रूपनी अपन परिवारक विचारसँ छिटैक दुखन भगतपर आसक्त भऽ गेली तखन भगैतियो समाज आ गामोक समाज सम्बन्ध स्थापित करौलक, तँए समदाही स्त्री। मुदा रूपनीक विचार से नहि छेलैन ओ स्वयंवरी बिआह मानि अपनाकेँ बियौहती स्त्री मानैत रहली। खाएर जे अछि ओ दुखन भगत आ रूपनीक बीचक अछि। तइसँ हमरा कोन मतलब, छिपलीमे दू कप चाह नेने रूपनी एकचारीमे पहुँच बजली-

"पान खाइ छी कि सिगरेट पीबै छी?"

रूपनीक हाव-भाव आ बेवहार देखि अपन मन सीकपर लटैक

गेल। एकदिस देखी जे जे बौस धरतीपर रहैए ओकरा जँ घरक चारमे लटकल सीकपर रखि दियौ तँ ओ अनेरे ने धरतीसँ उठि आकस छुबि लइए आ दोसर दिस दुखन भगतक दशा देखै छी जे अहू जुगमे दुनू आँखि मरा काहि काटि रहल छैथ। अपने तँ सर्वभक्षी छीहे। चाहो पीबै छी, कॉफियो पीबै छी, सिगरेटो पीबै छी आ बीड़ियो तँ पीबिते छी। तैसंग तमाकुलो खाइ छी आ भाँगो-गाजा तँ पीबिये लइ छी। तँए, अनेरे फुटा कऽ की बजितौं। सरदरे बजलौं-

"घरवारीकेँ जे सभ जुड़तैन से सभ खाइ-पीबै छी।"

ओना, दुखन भगत सेहो सभरसिया लोक, मुदा जिनगी टुटने बेचारे एकरसिया भऽ गेल छैथ। चाहेटा पीबै छैथ। चारि घोंट चाह पीबिते दुखन भगतक मन कलशलैन। कलैशते बजला-

"यार, दुनियाँमे जँ केकरो पत्नी अछि तँ हमर रूपनी अछि।"

दुखन भगतक पत्नीक प्रशंसा सुनि बजलौं-

"यार, मानि लेलौं जे अहाँक जोड़ा धरवाली दोसरकेँ नहि छै मुदा अपना आँखिमे इजोत केना औत से आन घरवाली आनि देत?"

हमर बात सुनि जहिना दुखन भगतक मनमे उत्साह जगलैन जे शरीरसँ पूर्ण स्वस्थ छी, आँखिक चलैत अथबल भऽ गेलौं, तहिना रूपनीक मनमे सेहो जगलैन जे अखन धरि जे बुझै छेलौं जे बन्न आँखिमे इजोत नइ अबैए, से बात नहि अछि। पतिकेँ अगुअबैत रूपनी बजली-

"हम तँ मौगी-मेहैर भेलौं, नइ बुझै छी, जँ हिनका सन लोकक इलाज होइत होइ तँ करा दियौ, जाबे जीब गुण गबैत रहब। जेना जे खर्च पड़तैन तेकर ओरियान हम करब।"

रूपनीक विचार सुनि मनमे खुशीक एक नव रूपक दर्शन भेल। मुदा तेकरा समेट मनेमे चौपेत रखि बजलौं- "यार, अहाँक

मेरियामे के सभ जीबै छैथ?"

जेना अपन परिवारमे मृत्युक घटना भेने मन पीड़ा जाइ छै तहिना दुखन भगतक भेल। बजला-

"कियो ने जीबैए। हमहींटा जीबै छी। जहिना कोनो गाछक डारि-पात कटि गेने गाछ ठूठ भऽ जाइए तहिना ठूठ भेल पड़ल अन्तिम दिन गनि रहल छी..!"

ओना, दुखन भगत बौधिक क्षेत्रमे अगुआएल जरूर छैथ, से छैथ मुदा संगीत कलामे। जीवन-क्रियाक बोध ओते नइ छैन जेतेसँ जीवन सुचारू ढंगसँ चलैए। ओना, मन आ शरीर दुनू दू छी। मनक दुनियाँ अलग अछि आ शरीरक अलग अछि। जहिना मनक दुनियाँ अगम अछि तहिना शरीरोक दुनियाँ अथाह अछिए। लाखो रंगक रोगक आक्रमण जहिना शरीरमे होइए तहिना मनोमे होइते अछि। मुदा जेते पियास अपने लगल अछि तेतबे पानिक खगता ने अछि आकि समुद्र उपछैक भाँज करब। अपन जे जीवन अछि ओ केना दौड़ैत अन्तिम साँस धरि चलत तेतबे खगता ने अपन अछि। तइले जेहेन जीवन धारित केने छी तेही अनुकूल ने अपन धारणा बना धड़ैत चलब। तइमे दुखन भगत एकभग्गू छला। संगीत कलामे सिद्धस्त छला खासकए भगैतिक गायनमे। मुदा शरीर क्रियामे अनाड़ीक अनाड़िये रहला जेकर परिणाम भेलैन जे सत्तैर बर्खक उमेरक पछाइत आन्हर भऽ गेला, जे पाँच बर्खसँ घिसिऔर काटि रहल छैथ।

एक तँ दूरक सफर केने गेल छेलौं, तैपर रातियो बेसी भेल जाइ छल तँए सभ विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"यार, जखन आँखिक इलाजक भार लेलौं तखन पान-सात दिनमे फेर अबै छी, परिचिते डॉक्टर सभ छैथ तँए अहाँ बुझि लिअ

जे बीचक जे दिन अछि तेतबे दिन आन्हर छी। अखन थकलो छी आ ओंघीसँ देहो भँसियाइए।”

जहिना दुखन भगत तहिना रूपनी सेहो हमर विचारसँ प्रभावित भेलैथ। प्रभावमे आबि दुखन भगत बजला-

“यार, जखन भगैतिक विषयमे पुछलौं, तखन पहिने यएह कहि दइ छी। हमर मात्रिक धरमपुर अछि। धरमपुर परगनो छी आ गामो अछि। ओतैसँ हम हाइ स्कूल तक पढ़बो केलौं आ भगैत सेहो सीखलौं। मामा हमर भगैतिया पार्टी चलबै छला।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“ओ केहेन भगैतिया छेला?”

दुखन बजला-

“ओ तँ सोल्होअना रमता भगैत छला। जहिना अपना सबहक इलाकामे रामलीला पार्टी, कृष्णलीला रास गामे-गाम होइ छल तहिना भगैतिया पार्टीक भगैत सेहो होइ छल। ओहूमे केतेक रंगक छल मुदा ओते पहाड़ धुनैक कोन खगता छेलैन, खाली धरमराजे टाक गबै छला। सात दिनक हुनकर भाँज छेलैन। दस गोरेक पार्टी छेलैन, झालि-मृदंगक संग गबै छला। एक धुन, एक लय, एक स्वर चलै छेलैन।”

बजलौं-

“केते दूर धरि ओ घुमै छला।”

दुखन भगत बजला-

“अपन इलाका तँ छेलैन्हे। दच्छिनमे गंगा किछेर, पूबमे कमाख्या आ उत्तरमे सतकोसी तक हुनका लोक भगैतिया रूपमे जनै छेलैन।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“पछवरिया घाटक सीमा नइ कहलिऐ?”

‘पच्छिम’ सुनि दुखन भगत मुस्कियाए लगला। मुस्कियाइत बजला-

“पच्छिममे कमला धारक इलाकामे कमला गीत चलै छल, जहिना धरमराजक भगैत झालि-मृदंगपर आठ-दस गोरे मिलि गौल जाइ छल तहिना कमला भगैत सेहो गौल जाइ छेलै, वएह हुनका सबहक पछवरिया सीमा छेलैन।”

ओना, आरो बहुत बात बुझैक छल मुदा भानस भऽ गेने बहिनक ऐठामसँ तेते हकवाहि भेल जे आगूक बात बाँकीए रहि गेल। अपनो मन थकान दुआरे छटपटाइत रहए जे कखन बिछानपर जाएब। बजलौं-

“यार, अखैन छुट्टी दिअ।”

दुखन भगत बजला-

“आगूक गप काल्हि हेतइ।”

बजलौं-

“काल्हि भोरे चलि जाएब। एको दिन गाम छोड़ै छी ते तेते बिदैत होइए जे की कहब!”

जिज्ञासा करैत बजला-

“से की, से की?”

बजलौं-

“जनिते छी जे खेत-पथार अपना रहने गिरहस्ती करै छी। बाड़ी-झाड़ी सेहो लगौने छी। एको दिन जँ सून रहल ते तेते ने उजाड़ भऽ जाइए जे केते दिनक केलहा पानिमे चलि जाइए।”

दुखन भगत-

“से की?”

अपसोच करैत बजलौं-

“यार, जहिना नील गाइयक उपद्रव अछि तहिना सुगरक सेहो अछि, तैसंग गाममे तेते ने बानर आबि गेल अछि जे दिन-रातिक ओगरवाहि लगि गेल अछि। तँए नइ रहब।”

पियासल बच्चा जहिना माइक हाथमे गिलास देखि तिरपित होइए तहिना दुनू परानी दुखन आँखिक इलाज सुनि भेला।



शब्द संख्या : 2177, तिथि : 8 अक्टूबर 2018

अधमरू साँपक फुफकार

दरबज्जापर सँ विदा भऽ सुमंगल सड़कपर चढ़िते छल कि दच्छिन दिशासँ अबैत सोमेश्वर पुछलक-

“कतक चढ़ाइ छह सुमंगल?”

ओना, सुमंगलकेँ ई माइख नहि भेल जे यात्रापहर कियो किए टोकलक। नीक काजक फलो नीक होइते छै, तँए जँ नीक काज करए विदा भेल छी तँ नीक फल भेटबे करत, तइमे यात्रापहर टोकबाक वा नहि टोकबाक महत्ते की छइ। बिना किछु बढ़ौने-छिपौने सुमंगल बाजल-

“साहित्यिक कार्यक्रम मधुबनीमे छी, ओत्तै जाइ छी।”

‘साहित्यिक कार्यक्रम’ सुनि सोमेश्वरकेँ मनमे की भेल से तँ ओ जानए मुदा गम्भीर होइत बाजल-

“ऐ सभ लपौड़ीमे की पड़ै छह!”

नीक काजकेँ लपौड़ी सुनि सुमंगलक मनमे अनेको प्रश्न सुतपुतिया झिंगुनीक घोदा जे एक संग अनेको फड़ बनि उठैए तहिना उठल। मुदा समैयक सार्थकताकेँ देखैत आगू किछु ने बाजि सोझे चौकपर विदा भेल।

गामक पाँचो साहित्यप्रेमी एकठाम भऽ चौकपर सँ टेम्पू पकैड़ मधुबनीक कार्यक्रममे भाग लेबए विदा हेता जे काल्हिये विचारि नेने छला। सुमंगलक घरसँ चौकक दूरी करीब दू फर्लांग अछि। ‘अखिल

भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ' लिखल झोरा कन्हामे लटकौने, जइमे कागजो-पत्तर आ कपड़ो-लत्ता छल, सुमंगल जखन चौकमुहाँ भेल कि मनमे अनेको प्रश्न उठए लगलै। सोमेश्वर किए एहेन बात बजला जे ऐ सभ लपौड़ीमे किए पड़ै छह? जँ साहित्यिक कार्यक्रम लपौड़ी छी तँ सफलभूत काज की छी? की सोमेश्वर साहित्यकेँ नइ बुझै छैथ तँए बजला आकि बुझैत बजला? एहनो तँ होइते अछि जे जइ काजक वास्तविक रूप-गुण-फल नइ बुझैए ओइ काजकेँ ओते महत् नहि दैत ओकरा 'लपौड़ी' बुझैए। मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि, संगे-संग दुनू गोरे बी.ए. पास केने छी। तखन हुनका नइ बुझैबला मानब आकि बुझनिहार मानब?

सुमंगलक ठमकैत मनमे दोसर प्रश्न उठल जे सोमेश्वर जखन गौंए छिया ते बादेमे पुछि लेबैन जे जँ साहित्यिक सेवा 'लपौड़ी' छी तँ धरम सेवा की छी..?

मुदा लगले सुमंगलक मनो आ डेगो आगू बढ़ल कि दोसर संगी– रतीशकेँ दोसर रस्ते चौकपर अबैत देखलक। अपन उपयोगी समय देखि सुमंगलक मनमे खुशी उपकल। खुशी उपकैक कारण भेलै जे पैघ (नीक) काज करैक रस्तामे जँ छोट-छीन काज–ओहन काज जे समैयक हिसाबसँ न्यून परिणाम दइए–बाधक बनि आबए तँ ओकरा नजरअन्दाज करैत टारैत-बहटारैत चली। रतीशकेँ देखिते सुमंगल बाजल-

"रतीश भाय, हमरा ते होइ छल जे संगी सबहक बीच हम पछुआ गेलौं।"

घड़ी देखैत रतीश बाजल-

"पछुआएब किए, समयसँ तीन मिनट अगुआएले छी। चारि बजे टेम्पू पकड़ैक विचार तय भेल अछि, अखन तीन मिनट बाँकीए

अछि। भेल तँ एक मिनटक रस्ता शेष अछि तैयो दू मिनट पहिनहि टेम्पू लग पहुँचबे करब।”

ओना, सुमंगल रतीशसँ गप-सप्प करैमे अपनाकेँ बहलबए चाहै छल मुदा सौनक मेघ जकाँ करियाएल-करियाएल वादल आबि मनकेँ घेर लइ छेलइ। वादलसँ घेराइते सुमंगलक मनमे उठए लगै छेलै जे जे काजकेँ हम कल्याणकारी बुझै छी तेकरा सोमेश्वर किए लपौड़ी कहि अकल्याणकारी काज कहि सोझा-सोझी तँ नहि मुदा परोक्ष रूपेँ तँ मनाही कइये रहला अछि। ओना, सुमंगलकेँ रतीशसँ भेँट भेने, टेम्पू पकड़ैक हलतलबी आ मधुबनीक कार्यक्रम मनक वादलकेँ उड़िया-उड़िया कात करिते छेलै मुदा उमड़ैत-घुमड़ैत सोमेश्वरक विचारक करियाएल वादल सेहो बीच-बीचमे सुमंगलक मनकेँ घेर लइ छेलइ। जहिना एकदिस तीख रौद रहैए आ दोसर दिस बरखो एक्के संगे होइए, तेकरे ने लोक बानर-बनरनीक बिआहक शुभ मुहूर्त्त बुझैए, तहिना सुमंगल मनक दुनियाँमे विचार उठल जे कोनो मनुक्खकेँ जहिना जीवनक पैघ घटना वा मनक विचारक दुनियाँमे पैघ वैचारिक बाधा आगूमे उपस्थित होइ छै तखने ने ओ जीवन-मरणकेँ एक पाशापर रखि सोचि-विचारि बढ़ैए। मुदा चौक लग अबिते रतीश बाजल- “सुमंगल, अपने सभ अगुताएल छी, किए तँ ने सतीशे भाय आ ने सिंहेसरे भाय आ ने सोहने भाय केतौ नजैरपर चढ़ि रहल छैथ।”

ओना, सुमंगलक मनकेँ सोमेश्वरक विचार डगमगा रहल छेलै मुदा रतीश लग ओइ विचारकेँ बाजए नहि चाहै छल। नइ बजैक कारण मनमे उठै छेलै जे अपन देही जे समस्या (जिनगीक बाधा) अछि से जेतेक बेसी अपने लुरिये-बुधिये सम्हारि सकी ओ ओतेक नीक भेल। किए केकरोसँ रीन लऽ अपन जिनगी सम्हारब। ओना, रीन लेब आ रीन देब दुनू दू विचार छी, मुदा रीनदाता तँ तखने ने

उठि कऽ ठाढ़ होइए जखन रीनखाता भेटै छइ। खाएर जे छै ओ रीनदाता-रीनखाता जानए, सुमंगलकेँ ओइसँ कोन मतलब छइ। सुमंगल बाजल-

"रतीश भाय, भोजक आगू आ रणक पाछू रहब काबील लोकक काज होइए, अपना सभ ते सहजे बुड़िबक छीहे, तखन चिन्ते कथीक।"

सुमंगलक विचार रतीश सुनिते बाजल-

"अपना सभ कि बुड़िबक आइसँ छी, तहियेसँ छी जहियाकेँ नइ बुझै छी।"

रतीशक बात सुमंगल नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। बुझबो केना करैत, सोमेश्वरक विचार आबि-आबि मनकेँ घेर लइ जइसँ बुधि विचलित भऽ जाइ। बाजल-

"रतीश भाय, मन दोसर दिस चलि गेल छल तँए नीक जकाँ नइ बुझलौं।"

रतीश बाजल-

"सुमंगल, अखन अपनो मन तिखाएले अछि। तँए पहिने चाहक दोकानपर चलह। चाहो पीब आ गपो-सप्प करब।"

सुमंगल-

"रतीश भाय, हम तँ बेरुका चाह पीब नेने छी तँए अखन चाह पीबैक मन नइ अछि। अहाँ पीने आउ, हम एतै बैसै छी। जँ कियो एबो करता तँ कहबैन रतीश भाय, चाहक दोकानमे छैथ।"

'बेरुका चाह' सुनिते रतीश खौंतियाइत बाजल-

"सुमंगल, की कहबह मौगी सबहक हाल, पुरुखक एकसाए गपकेँ ओ एकटा गनैए। दुइये बजेसँ घरवालीकेँ कहैत एलिऐन जे

मधुबनी जाएब अछि। चारि बजेसँ पहिने चौकपर पहुँचब अछि, तँए समयपर चाह पियाएब।”

सुमंगल बाजल-

“तैबीच मे की भेल?”

रतीश बाजल-

“भेल की! जे हेबाक छल से भेल। अनहोनीकेँ कियो रोकि सकैए।”

सुमंगल-

“भाय, मधुबनी जखन पहुँचब तखन अलंकार झाड़ब, अखन गमैया गप कहू ने।”

रतीश-

“मुँह बीजका-बीजका पत्नी टोकारा दइ छेली जे जखन रणभूमिमे जा रहल छी तखन जँ हम सिंगार-पेटार कऽके नहि अरियाति विदा करब से अहीं कहू जे उचित हएत?”

रतीशक संग सुमंगल ऐ दुआरे बेसी गपकेँ नहि नमराबए चाहै छल जे तरेतर सोमेश्वरक बदरियाएल विचारक वादल उमैड़-उमैड़ मनकेँ घेरए लगै छेलै। जइसँ एकान्त चाहै छल।

संजोग बनल, समैयक खियाल करैत रतीश असगरे चाह पीबए चाहक दोकानपर गेल। एकान्त होइते सुमंगलक मन महान दार्शनिक सिसरो लग पहुँच गेल। हमरे सन परिवारमे ने हुनको जन्म भेल छेलैन..!

सुमंगल आगू दिस अखियास कइये रहल छल कि कन्हामे झोरा लटकौने सतीश सुमंगलकेँ पाछुएसँ दुनू कन्हापर अनचोकेमे हाथ देलक। कन्हापर हाथ पड़िते सुमंगल चौंक उठल। पाछू उनैट

तकलक तँ सतीशकेँ देखि मुस्की मारि बाजल-

"आब अपना सभ तीन गोरे भेलौं।"

रतीशकेँ सतीश नहि देखने छल, बाजल-

"सुमंगल, दू-सँ-तीन तँ होइए मुदा तीनसँ दू केना हएत?"

एक तँ सुमंगलक मन अपने सोमेश्वरक विचारक बोनमे औना रहल छेलै तैपर सँ सतीश सेहो दोसर बोन आगूमे रोपि देलकै। दोसर बोनक माने भेल दू-सँ-तीन हएब आ तीनसँ दू हएब। एक-दूक पछाइत तीन होइए मुदा तीनमे जखन किछु ने घटाएले गेल तखन दू केना भेल?

एक तँ ओहुना मनमे बाढ़ि एने धारेक पानि जकाँ मनो उधिया लगैए तखुनका बात-विचार आ जखन धारक मरनासन रूपमे पानि पताल धेने रहैए तखुनका बात-विचारमे विपरीत अन्तर आबिये जाइए। तहिना सतीशक बात सुनि सुमंगलकेँ भेल मुदा गाड़ीक इमरजेंसी ब्रेक जकाँ अपना मनमे लगबैत सुमंगल बाजल-

"रतीश भाय, चाह पीबै गेल छैथ?"

चाहक नाओं सुनि सतीश बाजल-

"तखन हमहूँ चाह पीने अबै छी?"

"किए, घरपर सँ चाह पीब नइ आएल छी?"

सुमंगलक प्रश्न सुनि सतीशक मन धारक उधियाएल पानि जकाँ उधैक उठल। बाजल-

"अधजीबू चाह कहियौ कि अधमरू चाह पत्नी पीऔने छेली। तँए मन नइ भरल अछि।"

'अधजीबू-अधमरू चाह' सुनि सुमंगलक मनमे पहाड़ जकाँ फेर नव प्रश्न आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। की भेल अधजीबू चाह आ की

भेल अधमरू चाह..?

मुदा रच्छ रहल जे सतीश बजैत-बजैत चाहक दोकान दिस बढ़ि गेल। तँए सुमंगलकेँ सतीशक बातकेँ औंटै-पौड़ैक खगते खतम भेल। सतीशकेँ लगसँ हटने सुमंगलक मन थीर तँ भेल मुदा जेहेन बोनमे विचार फँसि गेल छेलै जे अनभुआर जकाँ ने किछु देखि पबै छल आ आ ने चीन्हे पबै छल। जइसँ मन चारूकात औना अबै मुदा ने किछु देखैमे अबै आ ने चीन्हैमे, संजोग बनल जे चाह पीब रतीशो आ सतीशो पहुँच गेल। दुनूक मन फुलाएल रहबे करइ। अबिते सतीश बाजल-

“घरवालीक जोड़ा भगवान केकरो लगौलैन, जँ इमनदारीसँ लगौलैन तँ नीक लगौलैन आ जँ बेइमानीसँ लगौलैन तँ अधला लगौलैन, मुदा हमरा की लगौलैन से दसम बरीस बीत रहल अछि बिआहक मुदा अखन तक गरथाहेमे छी।”

अपन मनक विकार (माने सोमेश्वरक विचार) सुमंगलकेँ दबि चुकल छल, मुदा बीच-बीचमे जे कनी-मनी हरियरीक टुस्सी अबै छेलै ओही टुसियाएल हरियरी पेब सुमंगल बाजल-

“सतीश भाय, रुपैआकेँ लोक उनटा-पुनटा कऽ देखि परखैए मुदा लोककेँ लोक जेतए एक्के नजैरमे परेख जाइए तेतए अहाँ दसो बरिसमे नइ परेख पेलौं?”

सतीशक मनमे जेना प्रश्नक उत्तर पहिनहिसँ तैयार रहल होइ तहिना बाजल-

“सुमंगल, उनटा-पुनटा कऽ जे लोक रुपैआकेँ देखैए ओ रुपैआक चालि-ढालि परेख लइए जे चलैबला अछि आकि जलिया अछि। मुदा लोककेँ परखब ओत्ते असान अछि जे एक्के नजैरमे परेख लेत।”

जिज्ञासासँ सुमंगल बाजल- “से की भाय?”

जेना अपन मनक भरास निकालैक अवसर सतीशकेँ भेट गेल होइ तेहने मन बनि गेल छेलइ। बाजल-

“सुमंगल, रुपैआकेँ आड़ि-धुर अछि तँए सुचलिया-कुचलिया दुनू रुपैआकेँ परखब असान अछि, मुदा लोक तँ लोक छी, ने सींग छै आ ने नाँगैर। झड़ाह लोक अछि की फड़ाह अछि से परिखब ओते असान अछि जे एक्के नजैरमे परेख लेब।”

सतीशक बात सुनि सुमंगल मने-मन विचारलक जे अखन सतीशक विचार चढ़ाउ अछि आ अपन विचारक मन उतराउ अछि तँए विचार समतल नइ भऽ सकैए। अनेरे किए बातकेँ बतंगर बनाएब। सोझे मुहेँ किए ने बाजब। मनकेँ थीर करैत सुमंगल बाजल-

“भाय, अखन धरि नहि बुझि पेलौं जे अधजीबू चाह की कहलिऐ आ अधमरू चाह की कहलिऐ?”

सतीशकेँ उत्तर दइसँ पहिने रतीश घड़ी देखि नेने छल। चारि बाजि दू मिनट भऽ गेल छेलै, बिच्चेमे बाजल- “सतीश भाय, चारिसँ ऊपर समय चढ़ि रहल अछि मुदा अखन तक ने सिंहेश्वरे भाय आ ने सोहने भाय पहुँचला अछि।”

समय अगुऐने मोबाइलिक सुविधा भइये गेल अछि। सतीश सोहनसँ सम्पर्क करैत बाजल-

“भाय, केतए छी?”

ओना, सोहन समय बनबैकाल अपनो छेला मुदा कोनो समय, समय देखि सेहो बनौल जाइए आ काजक क्रमक अनुसार सेहो बनौले जाइए। सोहन अपन पूर्व निर्धारित काज–बैंकक काज–केलाक पछातिक नम्बर मधुबनी जेबाक काजक क्रम बनौने छला। तँए पछुआएल छला। जीरो बैलेंसमे खाता खुजैक धुमसाही रहने

सोहनकेँ बैंकमे देरी भऽ गेलैन। संजोग एहेन जे नहेबो ने केने छला। चारि बजे घरपर पहुँचले छला। अबिते पहिने नहा कऽ चाह पीलैन आ मधुबनी जेबाक तैयारीमे जुटि गेला। सतीशकेँ कहलैन जे अहाँ मधुबनी फोन कऽ कहि दियौन जे हम सभ विदा भऽ चुकल छी, आधा-पौन घन्टामे पहुँच रहल छी। हुनको सभकेँ जँ बेवस्था करैमे किछु भाँगठ हेतैन सेहो तैबीचमे कऽ लेता।

सबा चारि बजे सिंहेसरक संग सोहन चौकपर पहुँचला। चौकपर अबिते टेम्पूबला तैयार भेल। सुमंगलक चिन्तित मन रहने कनी मन्हुआएल रहबे करए। तैबीच सभ कियो टेम्पूमे बैसला। सुमंगलकेँ खसल मन देखि सोहन बजला-

“सुमंगल, तोहर मन किए खसल छह?”

सोहनक प्रश्न सुनि सुमंगलक मनमे विचारक द्वन्द्व शुरू भेल। विचारक द्वन्द्व ई जे अखन तक सुमंगल सोमेश्वरक विचारकेँ बेकतीगत बुझि बाजए नै चाहै छल मुदा विचारमे बदलाव आबि रहल छेलै जे जखन सोमेश्वर साहित्यिक क्रियाकेँ ‘लपौड़ी’ बुझि बाजल तखन ओ प्रश्न हमरेटा तँ नहि भेल, भेल तँ सबहक भेल। तँए सभ लग बजैमे संकोचे की...। बाजल-

“सोहन भाय, सोमेश्वर कहलक जे कोन लपौड़ीमे पड़ल छह!”

सोहन मने-मन विचारिये रहल छला जे एहेन प्रश्न तँ वैचारिक मनक भेल। तइ बिच्चेमे रतीश टपैक पड़ल-

“सोमेसरा की बाजत! चोरी कऽ कऽ बी.ए. पास केने अछि, अपने जकाँ सभकेँ बुझै छइ..!”

रतीशक बात सुनि सोहन बजला- “रतीश, उकटा-पैंचीसँ कन्द-मूल तक नइ पहुँच पेबह। हम सभ साहित्यसँ जुड़ल छी, तँए

औगतेने नइ हएत।”

सोहनक बातकेँ दबैत रतीश बाजल- “भाय साहैब, अहाँ गैयाह लोक छी, तँए मारियो-गारि सुनि मनकेँ असथिर रखने रहै छी। मुदा अहीं कहू जे जे प्रश्न आगूमे औत तेकरा उत्तर तखने देब नीक कि रहि-सहि कऽ?”

सोहन बुझि रहल छैथ जे ई तँ नजैर-नजैरिक खेल छी। अपना जगहपर रतीशो सहिये अछि मुदा जगह-जगहमे सेहो अन्तर अछिए। जगहो तँ जगह छी जे केतौ मग्गह बनल अछि तँ केतौ बग्गह आ केतौ अग्गह सेहो अछिए। रतीशक विचारकेँ रोकैत सुमंगल बाजल-

“रतीश भाय, अहूँक विचार प्रश्ने भेल। मुदा पहिलुक नम्बर हमर प्रश्नक अछि। मानि लेलौं जे अहाँ अपन विचार अगुरवारे दऽ देलिऐ।”

टेम्पूमे पाँचो गोरे, अपन-अपन जगह ठिकिया-ठिकिया बैस गेला। बैस तँ सभ गेल छला मुदा ड्राइवर पान-पराग-शिखर लेब बिसैर गेल छल। सएह अनैले दोकान चलि गेल छल। ओना, ड्राइवर भोरे–गाड़ी चलबैसँ पहिनहि शिखर-पराग भरि दिनक डेढ़ दर्जन एक्के बेर कीन लइए मुदा आइ ओकर कोनो आन ड्राइवर झंझारपुरमे चाह पीबैकाल निकालि नेने छेलइ। मधुबनी जाइसँ पहिने जखन अपन खर्चाक मुँह-मिलानी करए लगल तखन ने पान-पराग देखलक आ ने शिखर। मुदा कियो चोरा लेलक तइ दिस ड्राइवरक नजैर नइ गेल, अपने दिस अँटकल रहल। मन मानि नेने छेलै जे भरिसक केतौ जरकीन-तरकीनमे खसि पड़ल। एक तँ ओहुना भरि दिन निमहिये गेल छी। चारि-पाँच पुड़ियासँ काज चलि जाएत। टेम्पूमे बैसल चारू गोरेक बीच सुमंगल आ सोमेश्वरक बीच भेल बात तेना झंझ-मंझमे ओझरा गेल जे सुमंगलक बात सोहनक मनमे धकिया-धुकिया गेलैन जइसँ प्रश्नक रूपे-रेखा बदैल गेल, तँए

प्रश्नकेँ पुन: सोझरबैक खियालसँ सोहन बजला- “सुमंगल फेरसँ अपन बात बाजह?”

सुमंगल बाजल- “जखन घरपर सँ मधुबनी-ले विदा भेलौं कि दच्छिन दिससँ सोमेश्वर अबै छल। ओ पुछलक जे केतए जाइ छह? हम कहलिऐ जे मधुबनीमे साहित्यिक कार्यक्रम छी, ओतै जाइ छी। जैपर ओ कहलक- कोन लपौड़ीमे पड़ल छह।”

सुमंगल मुहसँ सुनल बातक गहींरता दिस सोहन तकलैन तँ उत्तर देब नमहर बुझि पड़लैन। अखन रस्ता चढ़ल कार्यक्रममे जा रहल छी, ओहू सम्बन्धमे विचार करैक अछि। तैठाम जँ अपन गमैये गीतमे[53] गति गमा देब से नीक नहि। अखन जइ रणमे जा रहल छी, तेकर रणकौशल की हएत, मूल प्रश्न अछि। तँए कम-सँ-कम शब्दमे अपन प्रश्नक उत्तर देब अछि जइसँ समय बचत तँ आगूक विचार करब।

सोहन बजला- “सुमंगल, अपना समाजसँ जमीन्दारी प्रथाक मालगुजारी जमीन्दारसँ ससैर सरकारक हाथ गेल। जमीन जे छल ओ राय-छित्ती भेल। मुदा विचारक जे रस्ता छल ओ अखनो जीवित अछि, तही आधारपर तोरा सोमेश्वर एहेन बात कहलखुन, तँए बेसी चिन्ताक विषय नइ भेल। एकरा अधमरू साँपक फुफकार जकाँ फुफकार बुझह।”

बिच्चेमे सतीश बाजल- “सोमेसरा मर्द अछि ते चारि आखर लिखि कऽ देखा दिअ!”



शब्द संख्या : 2196, तिथि : 12 अक्टूबर 2018

यादास्त

आसिन इजोरियाक चारिम चान जकाँ जीवानन मास्टर साहैबक रूप आइ भोरे-भोर देखलयैन। देखिते मन तिरपित भऽ गेल। तिरपितो केना ने होएत, जइ समाजमे माए-बापक पुछाड़िये छुटि कऽ पुछे समाप्त भऽ रहल अछि, तइ समाजमे जँ पैंसैठ बर्खक अवस्थामे बेटा कहि देलकैन जे ‘जहिना अपने स्कूल-कौलेजसँ पढ़ाइ छोड़लौं आ तेकर लगले हाइ स्कूलमे पढ़ौनी शुरू केलौं, जे साठि बर्खक अवस्थामे हाथसँ छीना गेल, आब अहाँ बुते शेष जिनगी-ले फेरसँ रिंच-हथौड़ी लऽ कऽ इंजीनियर बनल थोड़े हएत, मुदा अकाजक लोककेँ तँ ई दुनियाँ रसपान करबैत तँ अछि नहि, तँए जे काज हाथसँ छीना गेल वएह काज अपन परिवारमे बाल-बच्चाक बीच करू। चारिटा पोता-पोती अछिए। मारेरास अपनो पेंशन भेटते अछि खूब उड़ाउ-पुड़ाउ, फगुओ खेलू आ दिवालियो मनाउ...।’

मास्टर साहैबकेँ देखिते प्रणाम करैत कहलयैन-

“काका, भगवान केकरो परिवार देलैन तँ अहाँकेँ देलैन। तँए सुख-सुविधाक विषयमे किए पुछब। मुदा कुशल-छेम नहियोँ पुछब से उचित हएत तँए पुछै छी, चैनसँ रहै छी किने?”

मास्टर साहैब दोहरी धारक पेटमे पड़ल छथिए, दुनू दिस जहिना धारक पानिक पन पवित्र बुझै छैथ तहिना पनिडुम्मी सेहो आगूए-मे छेलैन तँए मन मानियेँ ने रहल छेलैन जे चैनसँ रहै छी कि

बेचैनसँ, मुदा लोको-लाज तँ समाजमे किछु छीहे। एकरूपेँ ओहो तँ वएह लाज छी किने जेकरा अपन लेहाज नइ छइ। जहिना लोक अपन लाजकेँ छिपा कऽ रखैए तहिना लाजो ने खुलि कऽ कहै छै जे झूठ बजनाइ छोड़ि दे हम तोरे घर बास करब। ओना, मास्टर साहैबक आगूमे अपने बचकन छीहे। मुदा प्रश्न तँ बचकनक नहि चेष्टकनक अछि, माने अपन जीवन, अपन दर्शन, अपन सोच आ अपन विचार केते दूर धरि अछि। ओना, जीवानन काका जहिना दुनियाँकेँ भौगोलिक रूपमे देखि रहला अछि तहिना सेवा निवृत्तिक पछाइत, अध्ययनक विषय बदलने बदलल मनक दुनियाँ सेहो सोझहामे आबिये गेल छैन। असमर्थ मने बजला-

"बौआ, जे चलनसारिक बेवहार अछि तइमे चैन छी मुदा अपन बीतल दुनियाँ जखन देखए लगै छी तखन बेचैन भऽ जाइ छी। तँए की कहबह अपन जिनगी, आम जकाँ पकलो अछि आ काँचो तँ अछिए।"

जीवानन काका बी.ए. पास केलाक पछाइत हाइ स्कूलमे भूगोलक शिक्षक बनला। एकदिस अध्ययनशील लोक छला दोसर दिस परिवारो समटल रहैन, तँए अधासँ बेसी दरमाहा अपने पढ़ै-लिखैमे लगौला। दुनियाँक भूगोलकेँ चाटि गेला। ओना, एक्के विषयक पढ़ौनी जीवानन काका करैत रहला। स्कूलमे बेसी विद्यार्थी, जइसँ सेक्सन फुटौल किलास रहने एक्के विषयकेँ पढ़बैमे अपन ड्यूटी पूरि जाइ छेलैन। ओना, भूगोलक संग-संग आनो विषय सभ पढ़ि कऽ बी.ए. पास केने छला, मुदा अभ्यास छुटने आन-आन विषय मनसँ हेराइत गेलैन, जे अन्तोअन्त तर पड़ि हेरा गेल छैन। ओना, जीवानन काका अपन जिनगीकेँ समेट सभ दिनसँ बितबैत एला अछि...। पुछलयैन- "काका, अहाँ शिक्षक छी तँए डाक वचन जकाँ बोल अछिए मुदा हम तँ से नइ छी, पारिवारिक लोक छी तँए

परिवारेक बात ने जानए चाहब।”

विचारक दुनियाँक ढलानसँ ढुलकैत जीवानन काका बजला-

“बौआ, परिवार देखि मनमे बहुत खुशी होइए जे खाइ-पीबै छी, मौज-मस्तीसँ जीब रहल छी।”

जीवानन कक्काक विचार भाँजपर चढ़बे ने कएल जे की मौज-मस्ती कहै छैथ। पुछलयैन-

“से की काका?”

जीवानन काका बजला- “अपने जे वंश बनेलौं माने शिक्षकक वंश ओ अखनो दनदनाइत आगू बढ़ि रहल अछि। अपनो शिक्षकक जिनगी बितेलौं आ दुनू बेटो सएह भेल।”

बजैक अभ्यासी लोक जीवानन काका सभ दिनसँ रहबे केलाह, तँए की बाजि दइ छैथ से भाँजेपर ने चढ़ैए। तहूमे बजला जे अपनो शिक्षक छेलौं आ बेटो शिक्षक भेल, बड़बढ़ियाँ मुदा ओ तरमुहाँ भेल कि ऊपरमुहाँ, से बुझबे ने केलौं। अपने जीवानन काका हाइ स्कूलमे शिक्षक छला, बेटा कौलेजक शिक्षक भेलैन कि लोअर प्राइमरीक से भाँजपर चढ़बे ने कएल।

कमरसारिक काजे जाइत रही तँए भोरे-भोर जीवानन काकासँ भेँट भेल छल। गप-सप्पक क्रममे जीवानन कक्काक परिवारक भाँज लगल जे दुनू बेटा कहलकैन- जहिना अपन कमाइ पढ़ै-लिखैमे लगबैत एलौं, तहिना लगबैत रहू आ जहिना बच्चा सभकेँ पढ़बैत एलौं तहिना परिवारक बच्चाकेँ दरबज्जापर बैस पढ़बैत रहू। खाइ-पीबै आ कपड़ा-लत्तासँ लऽ कऽ घर-दुआरक कोनो भार अहाँ-ऊपर नहि।‘

जे रोगीकेँ मन भावए से वैद फरमाबए। पढ़ै-लिखैक तेहेन लत जीवानन काकाकेँ लगि गेल छेलैन जे किताब कीनैक पाइकेँ ओ

धर्मक काज करब बुझै छला तँए सुदि-सबाइक भाँज नजैरपर कहियो चढ़बे ने केलैन। अध्ययनक दिशा बदलने माने ई जे जे जीवानन काका भूगौलक विषयमे समयो आ टको खर्च केलैन ओ बदैल कऽ धर्मशास्त्रक विषय दिस आबि गेलैन। तँए वेद-पुराण-उपनिषदसँ लऽ कऽ तुलसीकृत रामायणिक संग चन्दो झा आ लालो दासक रामायण तक कीन अपन बैसार घरकेँ सजबैत आबि रहल छैथ।

ओना, रही कमरसारिक रस्तामे, दुर्गापूजा आबि गेल अछि अखनेसँ ने हँसुआ धनकटनी-ले पीजा धार करा कऽ लोक राखत। गामोक ठाकुर (बरही) की आब ठाकुरे रहल, ओ तँ महाठाकुर बनि गेल। माने ई जे जइ बरही ऐठाम बीसटा हाँसू धार करए पहुँच गेल, तेकरा भरि दिनक काज माने आठ घन्टाक काज लगि जइ छेलइ। किएक तँ हँसुआकेँ पहिने भाथीमे आगि सुनगा ओकरा ताव बनबए पड़ै छेलइ। तइमे हाँसू रखि भाथी चलबए पड़ै छेलै आ जखन हाँसू आगिमे धीप रेतीसँ रेतइ-जोकर भऽ जाइ तखन हाँसूक पुरना धारकेँ तोरि नव धार बनबैले एक-एक हाँसूकेँ रेतैमे दस-सँ-पनरह मिनट समय लगै छेलइ। तैठाम आब ओ बिजलीचालित रेती बना लेलक, जइसँ आब ओकरा हाथक काज मात्र धार कूटब शेष रहि गेल छइ। ओना, ओ बाजल जे मशीन तँ धरकुटियाक आबि गेल अछि जे अखन नइ लगेलौं हेन। मुदा तैयो अहाँक काज लगले भऽ जाएत। ताबे जीवानन मास्टर साहैब लग गप-सप्प करू। अपनो तँ काजेक समयमे ने पलखैत भेट गेल। ओना, हुनको (माने पत्नी) लग तँ उपयोगी समैयक उपस्थिति दर्ज करबै पड़त किने। बुझले छैन जे चारिटा हाँसूक धार करबैमे जलखै बेर भइये जाइ छइ। कहब जे घरवाली लग उपस्थिति किए दिअ पड़ैए। भाय, ऐमे हमर कोनो दोख नइ अछि। समाजमे रहै छी, समाजक जेहेन चालि-ढालि अछि जे

जहिना ज्ञानपर अज्ञानक शासन अछि, तहिना ने अपनो अछि। माने ई जे कोन परिवारक पुरुख एहेन छैथ जे अपने जीवन-सूत्र बुझितो घरवालीक हाथमे धियो-पुता आ परिवारक आनो-आन काज नइ सुमझा देने छथिन। एकदिस भारी शिक्षा प्रतिबन्धित अछि तैपर नवसिक्खूकेँ नव सीखपनक संस्कार युगानुकूल दैत संस्कारिक संस्कारी बनाएब बाल-बोधक खेल तँ छी नहि। परिवारक बीच जँ सभसँ प्रमुख काज अछि तँ ओ छी जे बाल-बच्चाकेँ सम्हारि मनुक्खताक बाटपर आनि ठाढ़ करब। जीवानन काका वैचारिक धरतीक बीच अपन जीवन-यापन केलैन तँए सामाजिक जीवनक धरतीक बोध ओते नइ भेलैन जेतेक खगता छेलैन तँए मनमे आएल जे एक-एक बात जखन तहिया कऽ पुछबैन तखन नजैर जड़ि दिस जेतैन जइसँ धरतीक तड़ी भेटतैन। जाबे तड़ी नइ भेटतैन ताबे फड़ीक फल थोड़े बुझता...। बजलौं-

“काका, बच्चा सभकेँ जे पढ़बैक भार परिवारमे लेलौं से कि आब ओ सभ गुदानत। तँए पहिने बेटा-पुतोहुसँ गुदानैक कहा-बधी करा लेलौं किने?”

जीवानन काका सुनि कऽ गुम भऽ गेला। मोन पड़लैन अपन केजरीवाल स्कूलक शिक्षणक ढाठी। विद्यार्थी सभकेँ छड़ीसँ मारै छेलिऐ। पढ़बैक ओ लूरि ने हमरा अछि, मुदा आइ तँ पढ़बैक पद्धति बदैल गेल अछि तैठाम..? मुदा अखन धरिक जे परिवारक ममत्व छेलैन ओइ अनुकूल जीवानन काका बजला-

“बौआ, परिवारमे जँ एना कहा-बधी कऽ कऽ काज हएत तखन बिसवासक जगह केतए रहत?”

अपन वैचारिक विचारक हिसाबे जीवानन काका बजला, तँए विचारकेँ आगू बढ़बैत बजलौं- “काका, बच्चा सभ पढ़ैमे बढ़ियाँ

अछि किने?”

हमर प्रश्न सुनि जीवानन कक्काक मन जेना चनिएलैन। चनियाइते चैनक झलक आबए लगलैन, बजला-

“बौआ, की कहबह। एक परिवारक चारू बच्चा छी। दूटा अबोध अछि जे पढ़ैक जगह अबै धरि ठीठिआइए। मुदा दूटा जे कनी चेष्टगर अछि तइमे एकटाक यादास्त नीक अछि आ दोसरक कमजोर।”

‘कमजोर’ कहि जीवानन काका गुम भऽ गेला। गुम होइक कारण भेलैन जे एक तँ परिवार सृष्टिजन छी तैपर जिनगी भरि शिक्षण काजसँ जुड़ल रहलौं। स्कूलमे तँ दस गामक दस रंगक विद्यार्थी अबै छल तँए समय कम रहै छल, ठीकसँ ने बुझा पबै छेलिऐ आ ने अपने बुझि पबै छेलौं, समय बीतैत-बीतैत बीत गेल। ऐठाम तँ से नहि अछि, परिवारक बच्चा छी। ऐगला पीढ़ीक तैयार करैक जिम्मा कन्हापर अछि..!

कक्काक मन कड़ुआए लगलैन। जहिना धारमे कड़ूआरिक चालिसँ नाह कखनो थाहसँ अथाह दिस जाइए आ कखनो अथाहसँ थाह दिस अबैए मुदा नाविक तँ मात्र कड़ूआरि चलबैए, तँए कि ओ ई नइ बुझैए जे नाह कखन अथाह दिस गेल आ कखन थाह दिस आएल। से तँ जरूर बुझैए। मुदा तँए कि ओ अपन काज थोड़े छोड़ि दइए। ओ तँ अपन गनतब स्थान पहुँचला पछातिये छोड़ैए।

जीवानन काकाकेँ गुमकी लधैत देखि अपन मन गुम्हरए लगल। मनमे उठल- आइ आसीन मासक इजोरिया पखक चारिम दिनक चारिम चान उगत, मुदा यएह चान जखन चैत मासक इजोरियाक रहैए वा अखाढ़ मासक इजोरियाक रहैए वा माघक रहैए, जैबीच एक्के उत्सवक माहौल रहितो चानक रूप परिवर्तित

भइये जाइए किने। चैतक चान जहिना वायुमण्डलमे उठैत गरदा बालुसँ अन्हरा जाइए तहिना ने अखाढ़ोक मेघ बदरीहनसँ झँपाइये गेल रहैए। तहिना कि माघक चान अवंच रहैए। ओहो तँ शीतक लहैरसँ अपन रूप जमुना धारक कालिदी तीर जकाँ रूप पकैड़िये लइए...।

उगैत-डुमैत जीवानन कक्काक रूप एकाएक बदललैन। बदलैक कारण भेलैन जे, जे पुतोहु, बच्चा विद्यार्थीसँ लऽ कऽ बाबा शिक्षक धरिक इंस्पेक्ट्ररी करै छेली, वएह पहिने लोटामे पानि भरि गिलासक संग पहुँचा गेल छेलैन, पछाइत चाह नेने सेहो पहुँचलैन। भाय, परिवार छी किने तँए अपन-अपन काजक भार अपना ऊपरमे अछि मुदा दोसरक, परिवारक आन-आनक इंस्पेक्ट्ररी जँ नहि कएल जाएत तखन श्रम[6] भँसैक सम्भावनो भइये जाइए।

चाह पीबैत जीवानन काका बजला-

“बौआ! तोरासँ लाथ की, जेकरा पढ़बै छी ओकर यादास्त कमजोर छै, मुदा ओकरो तँ मजगूत बनाएले जा सकैए। ओही परियासमे लागल छी। मुदा...।”

‘मुदा’ कहि जीवानन काका फेर चुप भऽ गेलाह। हुनका मुँह दिस ताकी तँ कोनो थाहे ने बुझि पड़ए। एकाएक अधडरेरपर किए रूकि गेला? एहेन तँ ने भेलैन जे जहिना कोनो औरत मकानक छतपर सँ निच्चाँ अबैकाल आ निच्चेसँ ऊपर जाइकाल बीचक जे ठहराव अछि तैठमा जा बिसैर जाइ छैथ जे ऊपरसँ निच्चाँ सीढ़ीपर अबै छेलौं आकि निच्चाँसँ ऊपर जाइ छेलौं तहिना अपनो मन कहलक। मुदा फेर हुअए जे जहिना बाट चलैत बटोही बाटक ऐगला कटारि देखि अँटैक जाइए तहिना ते ने भेलैन..! कहलयैन-

[6] काजक श्रम

“काका, चाह बड़ सुन्नर बनल अछि!”

पुतोहुक प्रशंसा करैत जीवानन काका बजला- “लूरिक तँ देवी छैथ हमर पुतोहु, मुदा मुँहक जे झनकाहि छैथ तइसँ हुनकर सभ देवीपन...।”

‘देवीपन’ कहि जीवानन काका फेर मुँह मोड़ि लेलैन। बजलौं-

“काका, अहाँ ते तेहेन मोड़पर आनि अपन विचारकेँ छोड़ि दइ छिऐ जे सोलहन्नी भोतिया जाइ छी। तँए कनी...।”

हमर इशारा जीवानन काका बुझि गेला। बच्चाक बात अपना ऊपर लैत जेना समाजमे धिया-पुताक कएल गलतीकेँ माए-बाप अपना ऊपर लैत दोखी मानै छैथ तेना जीवानन काका नइ केलैन। अपन विचार छैन। जइ अनुकूल बुझै छैथ जे बच्चाक गलतीकेँ प्रायश्चित हेबा चाही नहि कि ओकर गलतीकेँ अपना सिर ओढ़ि छोड़ि देबा चाही। तैबीच पुतोहु पान नेने सेहो पहुँचली। पान देखि जीवानन कक्काक मन तेतेक फुला गेलैन जे ओ हमरा केजरीवाल हाइ स्कूलक विद्यार्थी आ अपने शिक्षक बनि गेला। बजला- “बौआ, अपन यादास्त तँ सभ दिनसँ नीक रहल मुदा ओहो आब डोल-पत्ता करैए।”

जीवानन कक्काक विचारक गहींरपन देखि पुछलयैन- “से की काका?”

हीय खोलि जीवानन काका बाजए लगला- “बौआ, सभ दिन भूगोलक शिक्षको रहलौं आ विद्यार्थियो रहलौं। दुनियाँकेँ भूगोलक नजरिये देखैत-सुनैत रहलौं।”

सह दैत बजलौं- “से ते अहाँ मधुमाछी जकाँ जहिना धरतीक फूलक रस लेलिऐ तहिना मधुआ मौधो तँ देबे केलिऐ।”

जीवानन कक्काक मन मधु सुनि मधुआ गेलैन। जइसँ हृदय

पघिलए लगलैन। बजला-

“बौआ, पाँच सालसँ भूगोल पढ़ाएब छुटि गेल अछि। आब अपनो ने पढ़ै छी। जेकर भूगोल छिऐ से अपन जानए।”

‘जेकर भूगोल छिऐ से अपन जानए’ सुनि मन सुरखुराएल। जे भाव जीवानन काका बुझि गेला, तँए बोलती बन्न केने रहला, मुदा अपने किछु बजलौं नहि, वएह बजला-

“बौआ, नारायणी नदीक विषय भूगोलमे पढ़ने छी। महादुष्ट नदी अछि नारायणी। जहिना कमला-कोसी अछि जे गामक-गामकेँ उपटबैत रहल तहिना नारायणी नदी सेहो अछि। अखनो ओहिना मनमे झक-झक करैए। मुदा आब जखन शास्त्रमे नारायणी नदी पढ़लौं आ बुझलौं हेन जे नारायणी नदी पवित्र पाबैनक जलधार छी जइमे नर-नारायण मिलि स्नान करै छैथ, से बुझि जेना अपन यादास्ते चौपट्ट भऽ गेल मुदा केकरा कहबै!”



शब्द संख्या : 1870, तिथि : 15 अक्टूबर 2018

हमर मेला चोरि भऽ गेल

भोरुपहर टहैलते रही कि जीयालाल काकार्कें देखलयैन। आइ धरिक अपना ऐठामक परम्परा रहल जे बच्चा (विद्यार्थी) अपन श्रेष्टजनसँ बिना पूर्व आदेशोक किताब-कॉपी नेने पहुँच जाइए आ अभिवादन करैत अपन समस्या रखि बुझै-समझैए। परम्परो तँ परम्परा छी, एकरा निमाहब खेल नइ छी। तहूमे जखन परिवर्त्तनक तेज दौड़ रहल तखन तँ ओ आरो डोल-पत्ता करए लगैए। से कि कोनो आइये भेल अछि आ पहिने नहि भेल सेहो बात नहियेँ अछि। खाएर जे भेल, जेतए भेल से जानए। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ रखत आकि अनका माथापर हाथ दइले ताकत।

जीयालाल कक्काक संग आनसँ भिन्न परम्पराक बेवहार निर्वहन करैत रहलौं। ओही अनुकूल जीयालाल काकार्कें देखिते प्रणाम करैत बजलौं-

“काका, आइ तँ शारदीय नवरात्रक नौमीक मेला छिऐ?”

ओना, बजैसँ पूर्व जीयालाल काकार्कें किछु फरिक्केसँ देखने छेलिऐन तँए नीक जकाँ चेहराक रंग-रूप नहि देखि सकल छेलौं। जे लग एलापर देखलयैन। मन मलिन बुझि पड़ल। मुदा मुहसँ तँ निकैल चुकल छल। गुणवानक जे गुण होइ छै ओइ अनुकूल जीयालाल काका बजला-

“बौआ, हमर मेला तँ चोरि भऽ गेल।”

कोनो प्रश्नकेँ बिनु सोचने-विचारने जँ टेटियाहा सुग्गा जकाँ धाँइ-दे प्रश्न-मे-प्रश्न रोपि प्रश्नकेँ समूल नष्ट कऽ देब नीक नहि बुझि पड़ल। आगूमे अपन मलिन चेहरा नेने जीयोलाल काका ठाढ़ रहैथ आ अपनो ‘मेला चोरि भऽ गेल’ तेकर सोच-विचार करए लगलौं। कोनो थाहे ने बुझि पड़ए। जखन अथाह दिस जाइ आ जीयालाल काकापर नजैर दिऐन तँ बुझि पड़ए जे ओ अपने हेल रहल छैथ। जेहेन प्रश्न छल तेहेन ओकर उत्तर तकैमे जेतेक समय लगैत तइसँ तीन गुणा समय जखन बीत गेल तखन बजलौं-

“काका, अपनेक विचार नइ बुझि पेलौं।”

जेना दुखीजन अपन बेथाक कथा दोसरकेँ सुनबए लगैए आ जेना-जेना सुनबैत जाइए तेना-तेना सुख-जान आबए लगै छै, तहिना जीयालाल कक्काक मनमे सेहो आबए लगलैन। बिहुसैत बजला-

“बौआ, दस घौर केरा करजानमे छल आँठी-आँठी जुआएल छल। मनमे रोपने छेलौं जे गाममे भगवतीक पूजा होइए, ओइमे एते सहयोग हमरो रहत। मुदा भेल तेकर उन्टा..!”

जे सोभाव जीयालाल कक्काक छैन तइ अनुकूलतामे ने केतौ कमी बुझि पड़ल आ ने बेसियाएले बुझि पड़ल। तखन एहेन बात जँ जीयालाल काका बजला तँ जरूर किछु बात मनमे रखि कऽ बजला अछि। मुदा ओ तँ तखन ने निकलत जखन ओइमे खोरनी देबइ। बजलौं-

“काका, से की?”

ओना, जीयालाल कक्काक मनमे आरो बहुत बात रहैन, तेकरापर सँ मन छिलकबैत अपन जड़ि पकैड़ बजला-

“बौआ, देखिते छहक ने जे बाघक खोल जकाँ मेलाक रूप बनि गेल अछि। बजरूआ देखा-देखी गमाउमे सेहो हुअ लगल

अछि। जइसँ पूजो आ मेलोक रूप पाइ दिस बढ़ि रहल अछि।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“से तँ भेबे कएल अछि। जेकरा पाइ अछि तेकर पूजो आ मेलो, जेकरा नइ पाइ ओ ठेला आ ठेलो भइये रहल अछि। जखने ठेल-ठेला हएत तखने ने ओ गेल-गेलहा सेहो भइये जाएत।”

ओना, हम कहबी रूपेँ बाजल छेलौं। अखनो गाम-घरमे हजारो कहबी चलिये रहल अछि जे बजैत तँ सभ अछि मुदा बजबेटा करैए। ने ओकर शब्द रूप बुझैए आ ने चलनसारिक रूपकेँ जनैए। मुदा जीयालाल काकाकेँ जेना मनकेँ छुबैत मन्दिरमे विचार प्रवेश कऽ गेलैन जइसँ अधकल चेहराक रूप पुनकए लगलैन। पुनगैत शब्दमे बजला-

“बौआ, अपनो समाजमे देखिते छहक ने जे सभ बजैए-अनकर जे चोरा कऽ केरा काटत ओ ओकर बरद बनि हर बहतै।”

जीयालाल कक्काक विचार एते सोहन्तगर लागल जे मुड़ी डोलबैत कहलयैन-

“हँ, से हर बहबे करत।”

बजैक क्रममे तँ बजा गेल मुदा जखन पाछू उनैट तकलौं तखन देखलौं जे अपना तँ एको बीट केरा नइ अछि, तखन ओइ चोरीक फलाफल की बुझब। ओना, अखन तक मनमे विचार बैस घर केनहि छल जे जे चोरा कऽ केकरो केरा काटत ओ ओकर बरद बनि हर बहत...। मुदा फेर लगले जेना मन घुसैक गेल, तहिना मन पटपटाए लगल। पटपटाए ई लगल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल जे बच्चेसँ सुनैत पढ़ैत आएल छी जे शिकारी अबैत रहत जाल बिछबैत रहत, चारा छिटैत रहत आ चिड़ैसभ ओइमे फँसैत रहत। तरे-तर मन मुड़िया-मुड़िया मरौ लगल आ जगौ लगल। जगबो केना

ने करैत। हमरेटा एहेन बात बुझल अछि आकि आनो सभकेँ बुझल छैन्हे जे मनुक्ख मरला पछाइत फेर जनम लेत। फेर मरत फेर जनम लेत। जखन एहने बात विचार छै तखन जँ कियो मरै-जीबैक विचार अपने करत, एकरा बुड़िपना छोड़ि की कहबै। हमहूँ की ऐ समाजक ऐ विचारसँ अलग छी जे बिसवास करैत नइ जीअब। मुदा समाजो तँ वेद-विचार सम्मैत अछिए। एक दिस जहिना समाज महान हस्ताक्षर पैदा करैक गर्भशक्ति रखने अछि तहिना दोसर दिस कुकुर-बानर-बनमनुख गढ़ैक शक्ति नइ रखने अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो तँ अछिए। ताजमहल सन महल बनौनिहार मनुक्ख जहिना प्रेमक एक सीमापर अछि तहिना कलशक (डाबाक) गरदैनमे मूजक जौड़क डोरी बान्हि पतालसँ पानि निकालि पीएनिहारक प्रेमकेँ की ताजमहलक प्रेमीसँ कम आँकल जाए सेहो तँ बेइमानीए ने हएत। प्रेम तँ प्रेम छै, तुलसी पात जकाँ जे छोट रहह कि पैघ मुदा भगवानक सिर (माथ) चढ़ैक अधिकारी सभ अछि। मुदा जीयालाल कक्काक पहचान तँ समाजमे दोसर रूपमे छैन। अपन गणितीय जीवन बना चलि रहल छैथ। ने दुनियाँक जनजालसँ मतलब रखने छैथ आ ने ओइ जनजालक डरसँ पड़ाइक विचार...। भाय, सबहक दुनियाँ छी, जखन दुनियाँमे जन्म लेलौं तखन जिनगी भरि रहबोक तँ अहीमे ने अछि।

एकाएक मन ताड़क गाछपर सँ डाबा नेने खसल पासी जकाँ निच्चाँ खसल। हाड़-पाँजर टुटल खसन्ता जकाँ मन केंकियाइत विचार देलक। बजलौं- “काका, अपने सन-सन जँ दसटा लोक समाजमे भऽ जाथि तँ गामक बेरा पार भऽ जाएत।”

अस्पतालमे जहिना हथटुटा रोगी पैरटुटाकेँ पुछै छै ‘भाय, की हाल-चाल?’ तहिना जीयालाल काकाकेँ बुझि पड़लैन। हथटुटा जकाँ मिड़मिड़ाइत बजला- “बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह तँए नेनमैत

छह। जइसँ बहुत बातो आ बहुत काजो सिखैक जरूरत छहे।”

जहिना वाल्मीकिजीक आगू क्रोच पक्षी खसने भेलैन तहिना जीयालाल कक्काक बुझि पड़ल। सौनक उमड़ैत-घुमड़ैत करियाएल-कजरियाएल मेघ जकाँ कक्काक मनक विचार टप-टप करैत देखि बजलौं-

“काका, की कहलिऐ जे मेला चोरि भऽ गेल?”

अपन बेथा-कथा कहने जेते अपन दुख मेटाइए तइसँ केतेबर बेसी अनकर बेथा-कथा सुनने सेहो तँ मेटाइते अछि। मरजादक भोजखौककेँ जँ ओछाइनपर बरियातक बेथा-कथाक कथकिया अपन कथा नइ सुनौत तँ भोजखौकेँ भोजक भोग केना करोटिया लेत। तँए, दुखहँसीक मुँहक रूप बनबैत बजलौं- “काका, सभ दिन अपन सबहक पुरखा अभागल रहला जइसँ..?”

हमर बात जेना जीयालाल कक्काक हृदयकेँ बेध कऽ छेद देलकैन तहिना धाराक प्रवाह रूपमे बाजए लगला-

“बौआ, अपन जिनगीक संग समाजक जिनगीकेँ जोड़ि पाँच कट्ठा केराक खेती केने छी।”

तही बीच मिश्रीलाल सेहो पहुँच गेल। अपन विचारकेँ रोकैत जीयालाल काका बजला- “भने मिश्रीलाल तोहूँ आबि गेलह।”

मिश्रीलाल जीयालाल कक्काक आँखिखुल्ला भक्त। भक्त एहेन जे जीयालाल कक्काक झूठो बातकेँ सत्य मानि लइए। सोलहन्नी भक्ति, मिसियो भरि अभक्त मिश्रीलाल जीयालाल कक्काक नहि छैन।

बहकैत जीयालाल काकाकेँ देखि जहिना छोर तानि सवारीकेँ बहलमान रोकैए तहिना जीयालाल कक्काक विचारक वाणकेँ छोर तनैत बजलौं- “काका, एना जे लत्ती जकाँ गिरहे-गिरह मुँह छोड़ब तँ

पैछलाक तँ मुँह छोहैने ने भऽ जाएत!"

जीयालाल काका बुझि गेला। आगू बजला- "बौआ, गाममे अखन जेतेक लोक केराक गुण बुझि अपन भोज्य पदार्थमे गनि लेलक अछि, ओते केराक खेती असगरे केने छी।"

ओना, मनमे उठल जे सभ पूजामे केरा शीर्ष स्थान पबैए से मोन पाड़ि दिऐन मुदा जीयालाल कक्काक पेटक बात बुझए चाहै छेलौं। तँए अपन विचारकेँ पेटेमे रोकि चुप रही, तइ बिच्चेमे मिश्रीलाल बाजल-

"काका, पहिने जड़ि बता देब तखन ने जहिना अहाँ जड़ि ताकए जाएब तहिना हमहूँ ताकब, जँ से नइ बुझल रहत तँ पानिक ऊपर उपजल केचली जकाँ सौंसे पोखैर पसैर भरि-पोख फुलाएब मुदा अपन जड़िक केतौ पते नहि रहत..!"

जेना-जेना मिश्रीलालक मुहसँ बात निकैल रहल छल तेना-तेना जीयालाल कक्काक मन सेहो टुसिया रहल छेलैन जइसँ मुँहक टुसकी सेहो खिलए चाहि रहल छेलैन। मुदा अपने मिश्रीलालक बात बुझबे ने केलौं जे ओ की बाजल। मुदा दोहरा कऽ पुछबोमे तँ दहसैत भइये रहल छल जे अखने विचारक मुड़ियाएल मुड़ी दिस धियान दिआ काकाकेँ आगू दिस बढ़ैक इशारा केलिऐन आ अपने लसैक गेलौं मिश्रीलालेक बातमे...। साँप-छुछुनैरक पइर भऽ गेल। दुनू दिस अपने नोकसान बुझि पड़ए। ऐहेनठाम तँ लोक आत्म-समर्पण कइये लइए। मुदा तइसँ यएह नीक हएत जे जहिना अदौसँ लोक बुझैत आबि रहल छैथ जे काबिल लोकक विचार सुनि ओकरा मक्खन जकाँ जेते मक्खब तेते नीक घी बनत। तँए ऐठाम चुपचाप बैस सुनबे नीक। तहूमे जीयालाल कक्काक तेहेन भक्त छथिन मिश्रीलाल जे अभक्त करब कठिन अछिए। जहिना जीयालाल कक्काक

जीवनक्रिया छैन तहिना मिश्रीलाल सेहो अपन बनौनहि अछि, तैठाम किछु बाजब अनेरे मुँहकेँ दुइर करब हएत। तँए मनमे चुपी साधि मुँहकेँ बन्न केने रहलौं।

मिश्रीलालक उत्तर दैत जीयालाल काका बजला-

“मेला चोरि भऽ गेल मिश्रीलाल!”

जीयालाल कक्काक मुँहसँ निकैलते मिश्रीलाल बाजल-

“काका, जेहेन अपन ओकाति रहत तेहने ने अपना लिये भगवती सेहो छैथ। दूटा बीट केरा रोपने छी जइमे तीनटा घौर खूब जुआएल रखने छेलौं जे दुर्गापूजामे बेच कऽ मेलो खर्च पूरा लेब आ अपन रोपल परसाद (केरा) गामोमे बँटा जाएत। ऐसँ बेसी हमराबुते भइये की सकै छै जे करबै।”

बजा गेल-

“तइमे की भेल?”

मिश्रीलाल बाजल-

“भाय की कहबह, तीनू घौर कलशथापनसँ एक दिन पहिने केदैन चोरा कऽ काटि लेलक!”

जीयालाल काका आँखि उठा मिश्रीलालपर देलैन मुदा बजला किछु ने। अपन मन छटपट करए लगल जे कनी नीक जकाँ बुझि ली जे की भेल, केना भेल, केरा के कटलक। तेते जिज्ञासा मनमे जागल जे मुहसँ निकैल गेल-

“कनी सेरिया कऽ मिश्रीलाल कहियौ।”

टटका घटना रहने मनमे टकटकी जहिना आबि जाइ छै तहिना मिश्रीलालकेँ सेहो आबिये गेल छेलइ। बाजल-

“की कहबह दिनेश भाय, अखन तक जेते गाँजमे भाँज चढ़ल

तइमे डेढ़ साए घौर, माने सौंसे गामक अधासँ बेसी केराक घौर कटि गेल। जेना-जेना कानमे अबैत गेल तेना-तेना मन छुब्ध होइत भाँसि रहल छल। जे एक दिस गाममे भगवतीक आराधना भऽ रहल अछि आ दोसर दिस ई की भऽ रहल अछि!"

जीयालाल काका बजला-

"मिश्रीलाल, जे दिनक केलहा छेलह से दिनो ने बीत गेल, अनेरे चिन्ताक प्रश्न सोझामे अनबह। संतोष बान्हि बुझैक परियास करह जे चोरो-चहारक अपन आराधना छीहे किने।"

जीयालाल कक्काक विचारमे हूँहकारी दैत मिश्रीलाल बाजल-

"जाबे जमीन रहत ताबे जालो रहबे करत। मुदा ओहू जालकेँ तँ काले ने खाएत। छोड़ू ऐ दुनियाँ-जहानकेँ। अपन विचारपर आउ। काका, मेला चोरि भऽ गेल। तइमे चोरिसँ पहिने ने 'मेला' शब्द अछि। मेला की?"

अपन मन हुअए जे बाजी। मुदा अखन तक जे जीयालाल काका आ मिश्रीलालक बीचक विचार-विनिमय भेलैन तइमे अनेरे तीनफीट्टा बौना जकाँ किए धरैन उठबए जाएब। तँए मुँहकेँ बन्ने राखब नीक बुझि चुपे रहलौं।

तैबीच जीयालाल काका बजला-

"मिश्रीलाल, पहिने तँ गामकेँ देखए पड़तह जे ने सभ गाममे एक्केरंग सभटा खाली खलीफे अछि आ ने सभटा विद्वाने अछि। तहूमे सुनै छी जे कहाँदन पण्डितक वंश तीन पीढ़ीसँ अधिक नइ बसैए।"

किछु थाहे ने बुझि पबी जे हमहूँ ओहने गाममे छी तखन किए ने अखैन तक बुझि पेलौं। मुदा ईहो मनमे बिसवास रहबे करए जे जहिना अभियास करैत-करैत मुरुखो पण्डित भऽ सकैए, होइतो

अछिए। किएक तँ बच्चामे सभ अबोधे रहैए जे रसे-रसे सबोध बनैत-बनैत एक सीमापर आबि पण्डित बनि जाइए। तँए, चुपे-चाप सुनि-सुनि ओकर जड़ि दिस भँजिया कऽ ताकब बेसी नीक बुझलौं। ओना, जीयालाल कक्काक बात मनमे फरिछेबे ने कएल जे 'पण्डित' शब्द तँ जहिना 'विद्वान'क उपाधि छी तहिना कुम्हारक सेहो छी। एना किए विधाता एक्के उपाधि दू गोरेकेँ दऽ देलैन? से नइ तँ जीयेलाल काकासँ पुछि लेब नीक हएत। मुदा लगले मनमे भेल जे जहिना नोनी सागकेँ डाँरमे दमो रहै छै तैयो ने आन लत्ती जकाँ लत्तीए बनल आ ने ठरगाछ जकाँ जमीनक ऊपर ठाढ़े होइए, भरिसक तहिना तँ ने अपनो छी। मिश्रीलाल चेला छिऐन, जखन मिश्रीलालोक बात फरिछा कऽ नहि बुझि पेबै छी तखन जीयालाल कक्काक बात केना बुझब। मुदा मन से कबुल नइ केलक। एकाएक जेना नवरात्राक दशहारा जकाँ आत्मशक्ति जगि गेल तहिना बुझि पड़ल। मोन पड़ल पैछला पुरखाक विचार जे 'समझदार लोकक बीचक विचारकेँ सुनि कऽ बुझब आभूषण छी।' किए ने हुनके सबहक विचार मानि परम्पराकेँ निर्वहन करैत चली। तँए, ने हारि मनमे आएल आ ने जीत। जी-जाँति कान पाथि सुनए लगलौं।

अखन तक जेना मिश्रीलाल अपन दुख बिसैर गेल हुअए तहिना मनमे मिसियो भरि कलेश नइ रहलै। ठुमकी चालि पकैड़ बाजल- "काका, जेहने लोक अपने रहैए तेहने ओकर गामो रहै छइ। तँए, छोड़ू ऐ बातकेँ। पहिने गाममे मेला की सोचि केना शुरू भेल, आ अखनो जे गाममे चोर-चहार राक्षसी वृत्ति अपनौनहि अछि तखन गाम पवित्र केना बनत आ जेते दूर शंखक आवाज जाइए तेते दूरक काल-कण्ठ केना भागत?"

सभ चीजक सह सेहो होइए आ असह सेहो होइते अछि। 'सह' भेल आगूमुहेँ सहिआरब आ 'असह' भेल पाछूमुहेँ सहिआरब।

ओना, पैछला मुँह दू-दिसिया अछि। एकटा अछि, जे जानि-जानि पाछू दिस सहिआरब आ दोसर अछि हाथ-पएर जोड़ि चुपचाप बैस नजैर हटा लेब। मुदा ऐठाम से नहि, मिश्रीलालक मनक खुशीकेँ आरो खुशीक सह दैत जीयालाल काका बजला-

“बौआ मिश्री! आइ नमीए छी, दसमी काल्हि हएत। तँए, आइ एतबे रहऽ दहक।”

अपना जनैत जीयालाल काका पाला झाड़ए चाहलैन मुदा मिश्रीलालक भक्तपन बढ़ए नइ देलकैन। दोहरबैत बजला-

“बौआ, मेला साधारण उत्सव नइ छी। बेकती-परिवार आ समाजक बीचक जुड़ावक कड़ी छी। मुदा ओ निर्भर करैए गामवासीपर। तँए आइ एतबे।”

जीयालाल कक्काक समटल बात सुनि माघ मासक सुर्ज जकाँ जे बेरुका रौदक आनन्द दैत अपने झँपा जाइए तहिना भेल।



शब्द संख्या : 2062, तिथि : 19 अक्टूबर 2018

गरदैन हलैल गेल

कोजागराक हकार पूरए रघुवीर भाय ऐठाम पहुँचते फनैतलालपर नजैर पड़ल। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर पचीसी चलैत रहइ, जैठाम फनैतलाल सेहो बैसल रहए। पचीसीक पाशापर चारि गोरे बैस खेल रहल छल। अपनो विचार भेल पचीसी खेली। किएक तँ औझुका पाबैनक एकटा बीध ईहे छीहे। जखन चौकी लग पहुँचलौं तँ चारू दिस चारू गोरेकेँ खेलैत देखि बगलमे बैसलौं। खेलेनिहार सबहक नजैर अपन कौड़ीक भाँजपर छल मुदा अपन बेकारी देखि मनमे भेल जे अपनो किछु रोजगार करी। ठिकिया कऽ फनैतलालपर नजैर अँटकेलौं तँ बुझि पड़ल जे फनैतलाल हारिक मारिसँ घायल भेल अछि तँए मुँह लटकल छइ।

ओना, अपना ऐठामक चलैनमे पचीसी खेलक पाबैन कोजागरा छी, किए तँ महादेवक संग पार्वती सेहो कोजगरे दिन पचीसी खेलली। अपन पाबैन विधुआएले रहि गेल। विधुआएलक माने भेल जखन चारि गोरे पाशापर बैसले छैथ तखन अपने केतए बैसब? ओना, आजुक राति लोक पचीसीएटा नहि, जुआ सेहो खेलत। किएक तँ जुआक उद्घाटनक पर्व सेहो आइये छी, जे दिवाली दिन बिसरजन हएत। जुआ केना खेलल जाइ छै सएह ने बुझल अछि, तखन मन ओमहर जेबै किए करैत। मुदा लगले ईहो हुअए जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल जे सभ सखी झुमैड़ खेलए आ नकपीची कहए हम बाँकीए रहि गेलौं..! मनमे कनी लाजो हुअए जे

सभ कियो किछु-ने-किछु कइये रहल अछि आ अपने हाथ-पर-हाथ रखि बैसल छी। मन नै मानलक, अपन छान-पगहा तोड़ि बजैक रूपमे फनैतलालपर नजैर उठल।

रघुवीर भाइक जेहेन दरबज्जा नमगर-चौड़गर छैन तेहने आगूमे अगवास सेहो छैन्हे। नमगर-चौड़गर बैसैक ओरियान हकार पुरैबला लेल केनहि छैथ। जहिना रंग-रंगक समेना टँगने छैथ तहिना दू-अढ़ाइ साए कुरसियो सजौनहि छैथ। सजेबो किए ने करता, ने मखानक कमी छैन आ ने पानक। आजुक पाबैनियो तँ सएह छी। रघुवीर भाय अपने पोखरिया असामी छैथ, तँए पानो आ मखानोक भाँज अपने छैन। पोखैरमे मखान होइ छैन, महारपर पान उपजबैले मनखप जमीन पान उपजौनिहारकेँ देने छैथ। तेहने जोड़ाक समधियो छैन्हे। पचीस बोरा मखान आ पचास ढोली पानक ओरियान सर-समाज-ले करि कऽ रखने छैथ।

फनैतलालपर नजैर गड़िते बुझि पड़ल जहिना छुट्टा हाँसूकेँ ठौर-ठेकान नइ रहै छै तहिना भरिसक फनैतलालकेँ सेहो नइ छै आ अपनो तँ नहियेँ अछि। मन एते जरूर मानि लेलक जे लोक जहिना अपन सुखक सुखियाएल बात नइ बजैए, भलेँ ओ बिसैर जाए वा लाजे नइ बाजए मुदा दुखक दुखाएल चोट तँ दोसराइतेकेँ कहलासँ ने कमत। फनैतलालकेँ कहलिऐ-

“फनैत, जहिना तूँ बेंटछुट्टा हँसुआ जकाँ छह तहिना ने हमहूँ नारिछुट्टा खुरपी जकाँ छी, चलह कातमे बैस गप-सप्प करब।”

फनैतलालो भरिसक सहए सोचै छल तँए खाँच-मे-खाँच बइसैमे देरी नइ लागल। बिना किछु बजनहि फनैतलाल फनैक कऽ उठल। अपनो उठि पहिने दरबज्जाक ओसारपर हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे केतेको ग्रुपमे खेल चलि रहल अछि। मनमे बखुबी

खुशी भेल। खुशियो किए ने होइत, पान-मखान सन अमृत वस्तु जँ खेलैत-धुपैत भेटए तँ एहेन काजो आ विचारो केकरा अधला लगत। ऐ साल जेकर बिआह भेल, तेकर कोजागरा छी। गाममे तँ साएसँ ऊपर बिआह-दान ऐ साल भेल अछि। मुदा कोजागरा तीनियेँ गोरेक ऐठाम किए छैन? सबहक बिआह तँ एक्के पोथी-पतरासँ ने भेल अछि तखन एक्के समाजमे दू रीत किए अछि? मन ठमैक गेल! तैबीच दुनू गोरे (माने हमहूँ आ फनैतोलाल) एक भागमे दूटा कुरसीपर बैस गेल छेलौं। ओना, मन घुरियाइते छल जे एक समाजमे जखन एक वैवाहिक पद्धति अछि तखन बेवहारक रीत किए दू रंग अछि? ओना, दुइये रंग नहि, अनेको रंग अछि मुदा से रंग अखन नहि। बजलौं-

“फनैत, खूब जमल अछि कोजगरा पाबैन।”

जहिना अपने टोकारा दैत बाजल छेलौं तहिना शिकारी जकाँ फनैतोलाल बाजल-

“पाबैन तँ कोजगरा ने, भारक-भार पान-मखान, दही, केरा, मिठाइसँ घर मँह-मँह करए लगैए।”

ओना, फनैतलालक बात सुनैमे कथा जकाँ नीक लागल मुदा आँखि गड़ियाए लगल। गड़ियाए ई लगल जे की सोचि फनैतलालकेँ एककात बजा गप करए चाहै छेलौं आ केतए मन चूरा-दही, केराक भारपर लटैक गेल। कोजागरा पाबैन छी, जखने पान-मखानक बिलहा-बाँट हुअ लगत कि अनेरे धिया-पुता तेते हल्ला करत जे एकांती लोक की करत। ऐठाम रहबो कठिन भऽ जाएत। मुदा मनमे ईहो दहसैत होइत रहए जे एकाएक फनैतलालकेँ हँसैत मुँहक मुस्कान केना बदैल कनैक दिशामे बहि गेल? मुदा जँ से पुछबै तँ अनेरे मन बिस-बिसाइन हेतइ, तँए अपन विचारकेँ मनेमे रोकने

रहलौं। रोकैक दोसर कारण ईहो मनमे उठल जे अखुनका लोकक कोनो ठौर-ठेकान अछि, पुछबै नीक बात नीक-ले आ उत्तर देत जे अपन बापक कमेलहा लूटाइये देबै तइमे केकरो बापक की जाएत। तखन तँ अनेरे कोसी बान्हक मुसक बिहैर जकाँ भऽ जाएत जे चुरुक-चुरुक पानि खसैत बड़का भोमहार फोड़ि बान्हे तोड़ि दइए, आ गामक-गामकेँ दहा-भँसा दइए। तँए, मूल प्रश्न दिस नहि बढ़ि कात-करोटसँ झटहा फेकैक चेष्टा करैत बजलौं-

"फनैत, ऐ बेरक समयक रूखि नीक नइ बुझि पड़ैए।"

मुदा अनठेकानल झटहा जकाँ सुतरल। सुतरल ई जे फनैतेलाल बाजल-

"दुनियाँक समय-सालसँ हमरा कोन मतलब अछि। ठनका ठनकैए ते कियो अपना माथपर हाथ दइए।"

सह पेब सहठियाइत बजलौं-

"तखन?"

फनैतलाल बाजल-

"जहिना तूँ परिवारमे छह तहिना ने हमहूँ परिवारेमे छी। जेकर भार अपना ऊपर सभकेँ रहै छइ।"

बिच्चेमे टोकारा दैत कहलिऐ-

"एकरा के काटत।"

जहिना पानिक टगहार सहिटमे मध्यम गति आ ढलानमे तेज गति पकैड़ लइए तहिना फनैतलालक विचार बुझि पड़ल। एक मास पूर्व, माने दुर्गापूजासँ पहिने अपन बेकारी मेटबै दुआरे फनैतलाल केराक बेपार शुरू केलक। ओना, फनैतलाल बी.ए. पास ग्रेजुएट अछि, जेकरामे किछु करैक ललक छइ। पैछला साल एकटा केराक

बेपारीक ऐठाम फनैतलाल पहुँचल आ एक दर्जन केरा कीनलक, दोकानदारकेँ पनसैया हाथमे धरेला पछाइत जे बीचक समय भेटलै तैबीच केराक बेपारक बहुत बात बेपारीसँ जानकारी भेलइ। गाममे दुर्गापूजाक उत्सव होइते अछि। सबहक मनमे किछु करै-धड़ैक विचार उठिये जाइए, फनैतलालक मनमे सेहो उठल। जे एक पंथ दू काज भऽ जाएत। मेलो मना लेब आ किछु कमाइयो लेब आ कमाइक लूरि सेहो सीख लेब।

भादवक पूर्णिमाक परातेसँ फनैतलाल बेपार करैक पाछू पड़ि गेल। गाममे अपनाकेँ पहिल बेपारी देखलक। पहिलक माने ई नहि जे सभसँ नमहर पूजीक बेपारी, पहिल बेपारीक माने गाममे पहिल-पहिल ओहन लोक जे नव बेपार दिस बढ़ल। हाँजीपुरक केरा बगानसँ लऽ कऽ केराक बेपारी सभसँ गप-सप्प करैत अबै-जाइक गाड़ी भाड़ा तकक जानकारी फनैतकेँ भइये गेल। जखन केकरो नजैरमे अपन काजक मर्म गड़ि जाइ छै तँ ओ ओइ काजकेँ निष्ठापूर्वक करिते अछि। असगरमे अपन केतेटा कारोबार चलि सकैए, तइमे फनैतलाल देखि नेने छल जे असगरो गाड़ीसँ गाम तक केरा आनि सकै छी। गाम आबि गेला पछाइत समाजक बीच कारोबार आबि जाएत। कोनो बाहरी खतरा सेहो नहियेँ रहत।

मनमे एक गाड़ी माल (केरा) अनैक विचार फनैतलाल फाइनल कऽ लेलक। केराक तँ पाबैनिये दुर्गापूजा छी, सनेससँ प्रसाद धरि। मौसमो अनुकूले रहैत अछि। पाँच साए घौर केरा अनैक विचार फनैतलाल ई सोचि केलक जे छोट-पैघ घौर मिला पचास हजार छिम्मैर जरूर हएत। पहिल खेपक कारोबार तँ ट्रेनिंगे प्रीएड छी, अधिक-सँ-अधिक जानकारीक दिशा भेटत। काजो करैक तँ अपन रस्ता अछिए किने। कियो काजसँ काज सीखैए तँ कियो सिखौलासँ सीखैए। तेसर पूजा दिन फनैतलाल अपन समान गाम

लऽ अनलक। केरा पकबैक दवाइयो हाँजीएपुरसँ नेने आएल।

जहिना-जहिना फनैतलाल अपन कारोबारक सूत्रपात केलक तहिना-तहिना रभसलाल सेहो केलक। मुदा ओकर सूत्र दोसर छेलइ। ओ गाँजा पीबैए, नशाबाज सभसँ सम्बन्ध छइ। नव तूरक छौड़ा-माड़ेर सबहक आगमन सदिकाल रभसलाल लग होइते रहैए। नव पीढ़ीक नव शक्तिक नब्ज पकैड़ आठ गोरेक ग्रूप बनौलक। रभसलाल बनि गेल बड़का बेपारी, माने थौक विक्रेता। गामक करजानमे जेतेक केरा छल सभटाकेँ राता-राती कटबा अदहा दाममे कीनि लेलक। गाममे केरा कटनिहारकेँ ने कियो देखलक आ ने केकरो भाँजपर चढ़लै। ओहुना लोकक मनमे दण्ड स्वरूप विचार छइहे जे जे चोराकेँ केरा काटत ओ बरद हएत।

ओना, रभसोलाल आ फनैतोलालक कारोबारक जानकारी मुहाँ-मुहीं तँ नहि भेल छल, माने ने फनैतेलाल कहियो किछु कहलक आ ने रभसेलाल। मुदा गामो तँ गाम छी, नीक कि बेजाए काजक भाँज लोककेँ कोनो-ने-कोनो सूत्रे भेटबे करै छइ। भलेँ ओ सही जानकारी हुअए कि घोरल-घारल हुअ आकि सोल्होअना मटियाएले हुअ। गामेक भाँजमे हमरा जे पता लगल से बुझै छेलौं। वएह बात फनैतलालसँ मुहाँ-मुहीं जानए चाहै छेलौं। मनोमे दू रंगक विचारो आ काजो रहिते अछि। माने ई जे जइ काजक बोध अछि ओहो बोध मनमे संचित रहिते अछि आ तैसंग कल्पनाश्रित काज सेहो रहितो अछि आ जगितो अछिए।

अखन धरिक जे अपन जानकारी छल ओ कल्पनाश्रित छल, किए तँ लोकक मुहसँ अनेको रंगक बात सुनियेँ चुकल छेलौं। कियो फनैतलालक एक ट्रक समानकेँ पाँच ट्रक बाजल छल आ कियो बाजल छल जे 'यएह छी तकदीरक खेल जे जे फनैतलाल हाकिम

बनैत से गाममे केरा बेचत!’ एहेन-एहेन विचारक गिनती एकाइमे दहाइमे नहि सैंकड़ोमे अछि।

ओना, अखनो धरि फनैतलालकेँ अपन कारोबारक बात पुछैक साधंस नहि भेल, किए तँ फनैतलालक चेहराक रंग बेदरंग बुझिये पड़ि रहल छल। तँए घुमा कऽ पुछैत बजलौं-

“फनैतलाल, आइ पुरनिमा छी। औझुके मास दिन पहिने जे बिदेसर बाबा ऐठाम जाइकाल बेलाराहीमे भेटल रहह तेकर बाद आइये भेटलह हेन। मास दिनक गप-सप्प दुनू भैयारीमे बाँकी अछि। भने निचेनमे भेँट भेलह। ऐ कोजागरासँ अपना सभकेँ कोन मतलब अछि जानए घरैत आ जानए बरैत।”

हमर बात फनैतलालकेँ जेना नीक लगलै तहिना मुँहक रोहानीसँ बुझि पड़ल। पैछला पुर्णिमाक नाओं मोन पड़िते फनैतलालक मनमे अपन संकल्पशक्ति सेहो जगि गेलइ। बाजल-

“भैयारी, अपना सभ तँ एकतुरिया भेलौं, अपने सभपर ने परिवारो, समाजो आ देशो-दुनियाँ ठाढ़ अछि...।”

ओना, फनैतलालक बजैक लड़ीक बिच्चेमे मन तेना कछमछा गेल जे मुहसँ बलजोरी निकैल गेल-

“से तँ अछिए। अपने सभ ने युवाशक्ति देशो-दुनियाँक छिऐ आ समाजो-परिवारक तँ छिऐहे।”

अपना जनैत फनैतलालक विचारकेँ अपन पूरक विचारक रूपमे बाजल छेलौं मुदा फनैतलालक मनमे अपन संकल्पशक्ति जगि चुकल छेलइ। संकल्प छेलै, जे भादवेक पुर्णिमा दिन बिदेसर बाबा लग बाजि आएल छल जे अपन बाहुँबलक बले जीवन बनाएब। जइसँ बेपार करैक चेतना जोर मारलकै। हमरा विचारकेँ अनसून करैत फनैतलाल बाजल- “पचास हजार केराक छिम्मैड़

खरीद-बिकरीक योजना बनेलौं।"

फेर बलजोरी मुहसँ निकैल गेल-

"हँ, हँ सींगहें अनुकूल ने लोक सींग्हौटी बनबैए।"

फनैतलाल फेर हमर विचारकेँ अनसून करैत आगू बाजल-

"भादवक पुर्णिमा दिन जे बिदेसर स्थान गेल रही ओकर परातेसँ केराक बेपार दिस डेग बढ़ेलौं।"

बजलौं-

"वाह, तोरे-हमरे सन-सन लोक ने समाजमे नव विचार, नव काज शुरू कए कऽ समाजमे नवपन आनि युगानुकूल समाज बनौत।"

तइ बिच्चेमे मखान बँटनिहार लग धिया-पुता हल्ला केलक जे बारीक बेइमानी करैए। केकरो बाटीसँ दइए तँ केकरो मुट्ठीसँ। मुदा घरवारी- रघुवीर भाय, तेते तत्पर रहैथ जे हल्ला होइते मखानक दोसर चंगेरा अपने आनि धिया-पुताकेँ कहलखिन जे 'लइ जाइ जो अपने हाथे।' एक तँ औझुका परिवेशे एहेन बनि गेल अछि जे कियो देहपर अंगोछा नइ रखैए तहूमे धिया-पुता तँ आरो बेसी खेलौड़िया होइए, हेराइ दुआरे ओ किए राखत। तँए, मखान रखैले केकरो किछु रहबे ने करइ, तहूमे अखन मखानेटा बँटाएल अछि, मिठाइ आ पान-सुपारी तँ पुछुआएले छइ, ओकरो रखैले जगह चाही। मुदा तइमे दू-चारिटा छौड़ा सतरकी केलक। सतरकी ई केलक जे दू-चारि फँक्का हाँइ-हाँइ मुँहमे दबलक जइसँ आरो जे भेल से तँ भेबे कएल जे पण्डालमे शान्ति पसैर गेल।

ओना, पान-परसाद भेला पछाइत एका-एकी लोक उठि-उठि विदाहो हुअ लगल जइसँ अपनो मन अपनाकेँ चरियाबए लगल। मुदा संजोग बनल छल जे अखनो धरि मखानो परसनिहार आ पानो-

मिठाइ परसनिहार किछु दूर फरिक्के छल, जइसँ बीचक समय खलियाएल छेलैहे। फनैतोलाल देखि रहल छल जे पान-परसाद लेला पछाइत लोक उठि-उठि जाइयो रहला अछि तैठाम जँ अपने बैसले रहि जाएब सेहो नीक नहियेँ हएत। अनेरे ने घरवारीक मनमे शंका जगतैन जे भरिसक ई सभ केरा-दहीक सुगन्ध पेब लेलक अछि, बिनु खेने ससरत नहि। तँए, अपन विचारमे फनैतलाल तेजी आनि रहल छल।

जेना कोनो गणतव्य स्थानपर पहुँचला पछाइत निर्णायिक मोड़ अबैए जैठाम लोक देखल वा बिनु देखल स्थान जेबाक रस्ता पकैड़ लइते अछि, व्यासोजीकेँ सएह भेलैन जे महाभारतक रचना करैकाल साएम श्लोकपर पहुँचला पछाइत जहिना गणतव्य बुझि पड़ैन तहिना फनैतलालक मनमे सेहो उठल। निर्णायिक दौड़मे पहुँच फनैतलाल बाजल-

“भैयारी, अखन तक माए-बापकेँ खरचे करबैत एलौं हेन। जहिना स्कूल-कौलेजमे सीखैले केलौं तहिना समाजोमे सीखैयेले केलौं।”

फनैतलालक विचार लोहियाक जिलेबी जकाँ एकसंग सभ पेनी नइ छोड़लक तँए विस्मित होइत बजलौं-

“से की भैयारी?”

फनैतलाल बाजल-

“भैयारी, जइ मनसूबासँ काज करैले डेग उठेलौं से नइ भेल, मुदा गरदैन नइ हलल सेहो बात नहियेँ अछि। ओ त हललबे कएल।”

फनैतलालक विचार सुनि मन घुरमुड़िया काटए लगल जे ई की फनैतलाल बाजल जे ‘जइ मनसूबासँ केलौं से नइ भेल आ

गरदैन नइ हललल सेहो बात नहियेँ अछि!’ जखन गरदैनकट्टी नइ भेल तखन बढ़ी तँ भेबे कएल, मुदा सेहो ने भेल। फेर भेल जे जखन फनैतलाल हमरा विचारकेँ अपना विचारसँ कात कए रखिये दइए तखन अनेरे मुहोँ दुइर करब नीक नहि। मुहोँक तँ अपन मोल अछिए तेकरा अनेरे लन्द-फन्दमे गमाएब नीक नहि। बजलौं- “से की भैयारी?”

फनैतलाल बाजल- “भैयारी, अपने जे केलौं से ते करबे केलौं जे कि साल भरि तँ नहियेँ बिसरब, तँए दोसर दिन कहबह। आइ दोसर बात कहबह जे नवसिरासँ भेटबो कएल आ बिसरैयोक डर अछि।”

‘नवसिरासँ दोसर बात भेटल’ सुनि अपनो मनमे सुनबो आ अख्यियासो करैक उत्सुकता जगल। उत्सुक होइत बजलौं-

“भैयारी, की नवसिरासँ भेटलह?”

फनैतलाल बाजल-

“भैयारी, यएह नफ्फा भेल जे भविसक गरदैन हललबसँ सतर्क कऽ देलक।”

बात खुजल नहि, मुदा फनैतलालक चपचपी बढ़िते गेल। ओना, अपना मनमे ईहो उठैत रहए जे जखन फनैतलालक मन हालक चपचपीकेँ अपन पेटमे समेट रखने अछि तखन ओइमे पैदाइसी शक्ति हेबे करतै। तँए ओकरा निहल वा बेहल करब नीक नहि, मन कनी टुसियाएल। टुसियाएल मन जहिना टुसकी दैत आ तहिना देलिऐ।

हीय खोलि फनैतलाल बाजल-

“भैयारी बहुत बात देखैयो-सुनैक आ बरो-विचार करैक अवसर तँ भेटबे कएल। ऐ मास दिनमे अपना संग जे घटित भेल

जइसँ कारोबारमे जे जबरदस्त धक्का लगल ओते तँ अनुभव भइये गेल। मुदा ईहो तँ देखिये लेलौं जे जहिना हम अपन तरीकासँ कारोबार शुरू केलौं तेकर ठीक विपरीत पाशापर दोसर कारोबार गाममे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल!"

बुझैक जिज्ञासा जहिनमे छेलएहे, बजा गेल-

"से की भैयारी?"

फनैतलाल बाजल-

"गामक करजानमे[7] जेते जुआएल केरा छल ओकरा ठिकिया कऽ रभसलाल आठ गोरेक ओहन मेड़िया बनौलक जे एक्के रातिमे सभटा केरा चोरा कऽ काटि सकै छल। गामक सभ केरा कटि गेल आ ओ भऽ गेल विरोधमे ठाढ़। मुफ्तक माल छेलैहे, दाम तोड़ि तेहेन धक्का मारि देलक जे खसैत-खसैत कहुना कऽ जान बँचेलौं। मुदा मन अखनो कहैए जे बेवहारिक क्रिया रहितो ओइमे झाँपन देल गेल अछि कि नहि!"

तैबीच मखानो परसनिहार आ पानो परसनिहार आबि पान-मखान देलक।



शब्द संख्या : 1922, तिथि : 23 अक्टूबर 2018

[7] केरावाड़ीमे

दिवालीक दीप

कातिकक पनरह दिनक अन्हारक (सामुहिक, समूहक दिन) अमावस्या छी, आइये रातुक पहिल पहर आ दिनक पाँचम पहरमे 'लक्ष्मी पूजा' आ दिनक छठम-सातम पहर आ रातुक दोसर-तेसर पहरमे 'काली पूजा' सेहो छी। कातिक मासक दुख-धन्धामे भरि दिन वौआएल रहलौं। साँझक आगमन होइते गोसाँइ स्थानसँ (गोसाँइ आगू) सँ लऽ कऽ अपन घर-ओसार, आँगन-दरबज्जा सहित माल-जालक घर, थैर, जल-जलाशय आ धार-धारा होइत समुद्रक घाटपर सेहो दीप जरत।

सूर्यास्त होइपर आबि गेल। ओना, श्रम करैक शक्ति सेहो शरीरमे शेष छल आ जिनगीक अग्रिम क्रिया सेहो शेष छलहे। क्रियाक सरदर नियम यहए ने अछि जे एक काजक पछाइत दोसर काज रोपी। तँए कटबी नियम नहि अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। ओहो तँ अछिए जे काजक सघनताक बीचक जे जिनगी अछि, ओइमे समयानुकूल आ आवश्यकतानुकूल घटबी-बढ़बी करए पड़ैए। मुदा ऐठाम ने घटबीक प्रश्न अछि आ ने बढ़बीक, प्रश्न अछि जिनगीकेँ सुचारू ढंगसँ संचालित करैक, जइसँ समयपर दीपो जरा सकी आ पाबैन सेहो मना सकी।

दरबज्जापर पएर दइते पत्नी बजली-

"कृष्णदेव भैया लछमी पूजाक हकार दऽ गेला अछि।"

बजलौं- “कहलयैन नइ जे अपने किम्हरोसँ अबिते हेता तैबीच चाहो पीब लेब आ मुहाँ-मुहीं गप्पो भऽ जाएत।”

“जहिना माछी-मच्छरक नंग-चंगसँ मन कछमछाए लगैए तहिना कृष्णदेव भैयाकेँ कछमछाएल देखलयैन।” : पत्नी बजली।

मनमे भेल जे अनेरे जे झिंगाक झाँगि मनमे बन्है छी से नीक नहि। सभ साल कृष्णदेव भाय कातिकक दिवाली दिन लक्ष्मीक पूजा करिते छैथ आ पान-मखान-मिठाइक हकार दइते छैथ, जेबो करिते छी। तहिना आइयो जाएब। पुछलयैन-

“और किछु बजला?”

पत्नी बजली-

“रस्ते-रस्ती बजैत गेला जे एम्हरे होइत उदयलाल ऐठाम होइत घरपर जाएब।”

मनमे भेल जे साँझुक पहिल पहरक पूजा ‘लक्ष्मी पूजा’ छी तखन अनेरे जे गप-सप्पमे समय गमा लेब तँ समयपर पहुँच केना पएब। मुँह बन्न करैत अपन साँझुक नियमित क्रियाकेँ अपनबैले मुड़िते रही कि रस्तापर अबैत उदयलालपर नजैर पड़ल। जखन कानमे आबि गेल जे कृष्णदेव भाय लक्ष्मीपूजाक हकारक मादे ऐठामसँ उदयलाले ऐठाम विदा भेला तखन जँ हम कृष्णदेव भाइक साती हकारक जानकारी दऽ देबै तँ ओ दुनू सिरे ने नीक हएत। बजलौं-

“उदयलाल, कृष्णदेव भाय ऐठाम आने साल जकाँ लछमीपूजा छिऐन, हकार छह। पहिल साँझक पूजा छी, तँए समयपर पहुँचैले अखन बेसी गप-सप्प नहि करह। तोंहू तैयार हुअ ग आ हमहूँ तैयार होइ छी। ओत्तै निचेनसँ गप-सप्प करब।”

ओना, उदयलाल मजकिया लोक अछि, तँए ओकरो अपन

भावनाक संग भावलोकक भवन छइहे। कठिन-सँ-कठिन आ गम्भीर-सँ-गम्भीर विचारकेँ मजाक-मजाकमे उड़ाइयो दइए आ पुराइयो तँ दइते अछि। उदयलाल अगुताएलेमे बाजल-

“परसादमे पाने-मखानटा बँटता आकि नवको किछु बँटता?”

उदयलालक बात सुनि नहलापर दहला फेकब वा बीबीक संग बादशाहक जोड़ा लगाएब नीक नहि बुझि चुपे रहलौं।

हमर चुपी देखि आकि अपन मनमे उदयलालकेँ कोनो उद्गार रहै से तँ वएह जानए, मुदा उदयलाल फेर बाजल-

“भाय साहैब, पग-पग पोखैरकेँ जहिना कमला-कोसी खेलक आ पान-मखानकेँ परवासी भाय लोकैन खेलैन तहिना आब एकरा किताबे-कैसेटमे रहऽ दियौ।”

ओना, मनमे भेल जे बाजी- ‘किताबो पढ़निहार कि आब अछि, आब तँ कैसेटसँ बेसी लोक पढ़ैए। जइसँ एते तँ लाभ भेबे कएल जे मिथिलाक शब्दमे अंग्रेजीक बाढ़ि एने शब्दकोश बढ़बे कएल अछि।’ मुदा फेर भेल जे जखने किछु बाजब कि उदयलाल फेर कोनो तेसर बात चालि देत। तँए, चुप्पे रहलौं। ओना, उदयलालकेँ समैयक पैबन्दी तँ नहि, मुदा काजक पैबन्दी रहने जिनगीक गाड़ीक गति असथिर छइहे। ओना, उदयलाल मजकियल चालि पकैड़ चलनिहार लोक जकाँ हँसी-चौल करिते अछि मुदा तेकरा ओ गपे-सप्प तक रखने अछि। गपोक कि कोनो आड़ि-धुर अछि लोकक मन जे फुरै छै से बजैए। मुदा जिनगीक खेल तँ किछु और छी, ओ तँ गति-विधिक क्रियासँ चलैए, जइसँ उदयलालक जेहने बुधि सकताएल छै तेहने काजो सकताएल चलिते छइ। तँए बिसवास पात्र अछिए। ओना, एहेन दोख उदयलालमे नहि अछि जइसँ मन दुखी नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। कोन क्रियाक लेल

केते उच्चारण हएत से वेचारामे नइ छइ। एकर माने ओ स्कूल-कौलेज नइ देखलक सेहो बात नहियेँ अछि। हँ, एते जरूर छै जे व्याकरण नइ पढ़ने भाषा-बोधमे कनी कमी रहिये गेल छइ। ओना, पत्रिकामे पढ़ने छल जे अरस्तूए लगसँ भाषा आ समाजक विचार होइत आएल जे केहेन शिक्षाक खगता समाजकेँ अछि जइसँ ओकर जिनगी प्रगतिक पथपर गतिशील रहत। खाएर जे अछि तइसँ उदयलाले आकि अपने कोन मतलब अछि। मतलब अछि औझुका जे क्रिया अछि तइमे केना समयपर पहुँच पूजामे शामिल हएब। जँ उदयलालकेँ दरबज्जापर छोड़ि अपने चलि जाएब सेहो केहेन हएत। हँसी-खुशीसँ उदयलाल अपने ने आगू बढ़त।

तइ बिच्चेमे उदयलालक प्रति दोसर विचार उचैड़ कऽ एकाएक मनमे चिड़ै जकाँ पाँखि फड़कौनहि खसि पड़ल। अपना आगूमे खसल विचारकेँ देखि मन तिलमिला गेल। तिलमिला ई गेल जे उदयलाल सन नवजुवक जे आजुक युवाशक्तिक अंश अछि ओ तँ भगवानेक अंश जकाँ ने युवोमे युवाशक्ति अछिए। उदयलाल समाजमे चाहे जे हुअए मुदा काजसँ बेसी काजक विचारकेँ बिकछबैमे समय लगैबते अछि तँए कालक दोखक दोखी तँ अछिए मुदा झड़-झड़ाहो लोक ओकरा नहियेँ कहल जा सकैए। झड़-झड़ाह ओ भेल जे समय अबैसँ पहिने धान जकाँ फुटि कऽ तैयारो भऽ जाइए आ पकैसँ पहिनहि पकि कऽ झड़िये जाइए। संजोग बनल उदयलाल बाजल- “पाँच मिनटमे तोंहू तैयार भऽ जा आ हमहूँ तैयार भऽ जाएब। मुदा तैयार भेला पछाइत हम तोहर रस्ता नइ तकबह। सोझे कृष्णदेव भाय ऐठाम चलि जेबह।”

ओना, उदयलालक समैयक बान्ह ओतेक सक्कत नइ बुझि पड़ल मुदा संजोगो तँ सेजोग छी। जँ कियो ओकरा रस्तामे एतबो पुछनिहार भऽ जाइ जे ‘भाय! बड़ अगुताएल देखै छिअ’, तेकर

जवाब ओ कखन तक देत तेकर ठीक नहि, तँए बान्ह हल्लुक बुझि पड़ल। मुदा जँ कियो नइ भेटतै तँ जहिना बाजल तहिना ओ आगू बढ़ि कृष्णदेव भाइक दरबज्जापर पहुँचते दरवारी जकाँ घरवारी बनि बोकियेबो नइ करत सेहो बात नहियेँ अछि।

पत्नियो सभ बात सुनि मने-मन अपनो काजक आ हमरो काजक गोरा-गपसा बैसाइये नेने छेली। जँ किछु अवरोध मनमे होइतैन तँ बजबे करितैथ, मुदा से सभ किछु ने अखन धरि बजली। एकर स्पष्ट माने यएह ने भेल कृष्णदेव भाइक ऐठाम समयपर पहुँचबक आदेश दइये देलैन।

जहिना पाँच मिनटक समय उदयलाल देने छल तहिना तैयार भऽ घरसँ निकललौं। ओना, कहब जे उदयलालक घर कृष्णदेव भाइक घरसँ लग अछि तँए पहिने पहुँचत सेहो बात नहियेँ अछि। किए तँ जेते समय हमरा ऐठामसँ उदयलालकेँ जेबाकाल लागत तेतबे समय ने हमरो जाइमे लगत। मुदा समय तँ ओइसँ पहिने निर्धारित भऽ गेल, तँए मोटा-मोटी दुनू गोरेकेँ एक्के रंग समय भेटल।

जहिना कृष्णदेव भाय ऐठाम हम पहुँचलौं तहिना उदयलाल सेहो पहुँचल। दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिने दुनू गोरेक भेँटो भऽ गेल। संगे दुनू गोरे दरबज्जाक आगूमे प्रवेश केलौं। कृष्णदेव भायकेँ देखलयैन जे दुनू परानी हल-चल, हल-चल कऽ रहला अछि।

हलचलीमे पड़ल दुनू परानीमे सँ किनको नजैर हमरा दुनू गोरेपर नहि पड़लैन। ओना, अपना बुझि पड़ल- भलेँ दुनू परानी कृष्णदेव भाइक नजैर हमरा सभपर नहि पड़ल हुअए मुदा सभकेँ अपन-अपन नजैरिक संग आँखियो तँ अछिए। जइसँ सोलहन्नी ईहो मानि लेब जे कृष्णदेव भाइक नजैर नहियेँ पड़ल हेतैन सेहो मानब ठीक नहि। किएक तँ आँखि रहितो कियो चश्मा लगा देखैए आ कियो बिनु चश्मेक ओकरासँ बेसी देखैए...। मन असमंजसमे पड़ि

गेल। मुदा तइ बिच्चेमे उदयलाल बाजल- “गौरी भाय, भरिसक कृष्णदेव भाइक नजैर अपना सभपर नइ पड़लैन।”

बजलौं-

“केना बुझै छहक?”

उदयलाल बाजल-

“जहिना अपना सभ हकरिया भेलिऐ तहिना ने कृष्णदेवो भाय हकवाह भेला। जँ कनियोँ नजैर पड़ल रहितैन तँ ओ जरूर किछु-ने-किछु कहबे करितैथ।”

उदयलालक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल। फेर भेल जे कृष्णदेव भाय घरवारी छैथ, हुनकर नजैर नहि पड़लैन मुदा अपनो दुनू गोरे तँ समाजक संग हकरियो छीहे, तखन किए ने अपन हाजिरी हुनका लग दर्ज करा ली। बजलौं-

“उदयलाल, अपना सभ आबि कऽ केतौ चुपेचाप बैस जाएब सेहो नीक नइ हएत, तँए अपन उपस्थिति दर्ज करा लएह।”

उदयलालोक मनमे सएह विचार उठि रहल छेलइ। स्वीकारैत बाजल-

“कृष्णदेव भाय लग चलि कऽ चेहरा देखा देला पछाइत केतौ बैस कऽ गप-सप्प करब।”

आगू बढ़ि कृष्णदेव भाय लग दुनू गोरे पहुँचलौं। पहुँचते उदयलाल कृष्णदेव भायकेँ कहलकैन-

“भाय साहैब, हाथी चढ़ि अहाँ गौर पुजने छी जे भौजी सन संगी हाथ लगल।”

ओना, कृष्णदेव भाय पत्नी दिस ताकए लगला मुदा मुहसँ किछु बकार नहि फुटलैन। बजलौं- “भाय, केते काज पछुआएल

अछि?”

कृष्णदेव भाय बजला-

“समयानुसार काज अपन रस्तेपर अछि मुदा सूर्यास्तो होइमे दू-चारि मिनट बाँकी अछिए।”

उदयलाल बाजल-

“भाय साहैब, ऐठाम हमरा सभकेँ रहने अहूँ दुनू परानीकेँ काजमे[8] किछु-ने-किछु बिथुते हएत आ तैसंग हमहूँ दुनू गोरे शरमाएब जे जेठ भऽ कऽ कृष्णदेव भाय दुनू परानी खटि रहल छैथ आ हम सभ ठाढ़ भेल मुँह देखै छी।”

कृष्णदेव भाय बजला-

“तोहर की विचार?”

उदयलाल बाजल-

“अहाँ दुनू परानी अपन पूजाक तैयारी करू आ हम दुनू गोरे दरबज्जाक दुआरपर बैस हकरिया सबहक आगवानी करब।”

कृष्णदेव भाय किछु ने बजला। बुझि गेलौं जे आदेश भेट गेल। दुनू गोरे दरबज्जाक आँगनमे कुरसीपर बैस गप-सप्प करैक विचार केलौं। ओना, गप-सप्पक क्रममे उदयलाल कखनोकाल झुझुआन जकाँ बुझि पड़ल। मुदा वास्तवमे ओ गहींरगरो आ गम्भीरगरो तँ अछिए। बजैक ढंग भलेँ ओ बदलने अछि, सदिकाल हँसि-हँसि बजबो करैए आ गम्भीर-सँ-गम्भीर विषयकेँ हँसीए-मे उड़ाइयो दइए आ पुराइयो तँ दइते अछि।

सूर्यास्त भेल। बिजलीक इजोतसँ सौंसे जगमगाएल। कृष्णदेव भाय सेहो घर-आँगनमे बिजली लगौनहि छैथ। तहूमे आइ बेसी

[8] पूजाक तैयारीमे

ओरियान सेहो केनहि छैथ। बजलौं- “उदय, बुधि बपजेठ होइए। भलेँ तूँ उमेरमे छोट छह मुदा तूँ बहुत होशियार छह। लोक लगमे हँसि-हँसि कऽ बाजि लइ छह, मुदा..?”

‘मुदा’ सुनि उदयलाल जेना एकाएक गम्भीर हुअ लगल, एकाएक जेना गम्भीरता हृदयसँ ऊपर आबए लगलै, जहिना धरतीमे गम्भीरता एने ओकर सृजनशक्ति एते क्रियाशील भऽ जाइए जे ओइमे भाँगक बीआ छीटू आकि बथुआक, ओ बड़बड़ा कऽ जनैम जाइए तहिना उदयलालमे बुझि पड़ल। ओना, उदयलाल बाजि किछु ने रहल अछि मुदा जहिना करियाएल मेघ समुद्रमे लटैक अपन संगी-समुद्रसँ उठैत वादल-कैँ पकैड़ संगे विदा होइए तहिना बुझि पड़ल। बजलौं-

“उदय, बिजली बौलक इजोतकेँ दिवालीक दीप..?”

जहिना समुद्रमे जुआर उठैए, धारमे बाढ़ि उठैए, पोखैर-इनारमे पानिक उछाल उठैए तहिना उदयलालक मनमे जग-जुआर उठल। उठिते बाजए लगल-

“भैयारी, तखन ने भय-अरि (भय+आरि) होइए जखन सभ भाँइ एक-मुँह, एक-बोल बना एक-एक विचारो आ एक-एक काजो करैत आगू दिसक समय दिस बढ़ब। नइ तँ केतौ हृदयमे दीप जरत आ केतौ बिजलीक प्रकाशसँ प्रकाशित हएत। जइसँ जे दीपक ज्योति पर्व छी ओ तर पड़ि जाएत आ बिजलीक प्रकाशक पाबैन जगजिआर होइत रहत।”

ओना, धरमागती बुझी तँ उदयलालक विचार सोलहन्नी नइ बुझलौं, मुदा ओकर वाणीक जे प्रवाह रहै ओकरा रोकि दिशा-हीनो करब नीक नहि बुझि बजलौं- “हँ, से..?”

जेना हमर बातकेँ अधडरेड़ेपर उदयलाल लोकि लेलक। धीपल

ताबा जहिना पानिक छिटका लोकि लइए तहिना लोकि लेलक। ओना, कहब जे पानियोँसँ पातर ओस होइए जेकरा दुभि अपन जीवनामृत बना माथपर ताधैर धेने रहैए जाधैर सुर्जक प्रकाश ओकरा अर्घ नहि कऽ लइए। मुदा से सभ बात नहि छल, अपना मनमे दिवालीक दीपक ज्योति पर्व बनल छल। उदयलाल बाजल-

"आइ आधाकातिकक सीमापर छी। आगू सेहो आधा शेष अछि। कातिककेँ लोक तेरहम मास कहै छइ। किए? कोनो माससँ जँ मासक गिनती शुरू होइ तँ ओ मास तेरहम भइये जाइए।"

मनमे जेना घोड़दौड़ शुरू भेल, तहिना हुअ लगल। हिसाब तँ ठीके उदयलाल कहैए मुदा बुझल तँ कातिकेटा अछि, जेकरा लोक तेरहम मास कहैए। आन-आन मासकेँ कहाँ कियो 'तेरहम'मे गिनती करैए। तँए, अपन विचारकेँ नहियेँ बाजब नीक बुझलौं। किए ने उदयलाले अपन पनचैती अपने करैत चलत। मुदा उदयलालक बात हम नीक जकाँ सुनलौं आकि अनठाएल-मनठाएल जकाँ सुनलौं बुझलौं, सेहो तँ उदयलालकेँ इशारासँ बुझाएब जरूरी अछिए। तँए उदयलालेक स्वरमे अपनो स्वर मिलबैत बजलौं-

"हँ, से तँ कहिते अछि।"

उदयलाल बाजल- "कातिक मास तँ किसानी जिनगीक ओ मास छी, जे बरसातक विभिषिकासँ तुरत-तुरत उबड़ल रहैए। विभिषिकाक अनेको रूप अछि, केतौ धारक कटनिया, तँ केतौ अन्हर-तूफानक संग झटवाहिक जइसँ जान-मालक संग, चीज-वस्तुक क्षति होइए, तँ केतौ बाढ़ि बनि गामक-गामकेँ मेटा दइए, इत्यादि-इत्यादि। तँए, कातिककेँ दोबर भारी मास मानल गेल अछि। ओहुना फसलक उपजक हिसाबसँ सेहो चैतिक रब्बी-राइक पछाइत उपजक आठम मासक दूरीमे सेहो अछिए।"

तैबीच कृष्णदेव भाय सेहो लगमे आबि बजला-

“पूजाक समय भऽ गेल, तँए अहूँ सभ तैयार भऽ जाउ। जखने हम शंख फूकब कि अहाँ सभ देवस्थलपर पहुँच जाएब।”

ओना, उदयलालोक मनमे रहबे करै जे कृष्णदेव भाइक ऐठामक पूजामे शामिल होइले एलौं हेन, हुनकर कृत्तिकल्प छिऐन तँए ओ अपना विहिते जे करता, हम सभ तहीमे ने पाछू-पाछू संग पुरबैन। बजैक क्रममे उदयलाल मस्तीसँ झूमि रहल छल, जहिना संगीतक अन्तिम मोड़पर एला पछाइत संगीतज्ञ झूमए लगैए तहिना। मुदा कृष्णदेव भाइक वाणीक अन्तिम लड़ीक कड़ीमे कड़ी जोड़ि उदयलाल बाजल-

“औझुकेँ पनरहम दिन कातिकक पूरणिमा हएत, जइ दिन कातिक अपन अन्तिम सीमापर पहुँच भाए-बहिनक पाबैन–सामा-चकेबा–करैत अगहन दिस (धानक मास) अग्रसर हएत।”

उदयलालक मुँहक मीठगर बोल सुनि-सुनि मनमे जेना मीठ-मीठ सुआद आबए लगल। ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे कहीं बिच्चेमे ने कृष्णदेव भाय शंख फूकि दैथ जइसँ आगूक विचारक बाटे रूकि जाए! उदयलाल मने-मन ठिकिया लेलक जे जाबे कृष्णदेव भाय शंख फुकैक सुर-सार करता तइ बिच्चेमे अपन विचारकेँ सीमापर पहुँचा देब। मुदा तइ बिच्चे बजा गेल-

“उदयलाल, आइ तँ अनहरिये पखक ने पाबैन छी?”

जहिना प्रश्न उठेलौं तहिना उदयलाल जवाब दैत बाजल-

“अनहरिया पखक सामूहिक रूपक अन्तिम दिनक पर्व छी। अन्हारमे सभ किछु हरेबे नइ करैए, भेटबो करैए। वएह भेटब छी ज्योति पुंज। जे पबैक पर्व छी दिवाली दिनक दीप पर्व।”

ओना, उदयलालक विचार सुनि मनक कूह-काह छँटए लगल

मुदा कूहो-काह की साधारण अछि, ओ तँ मैल वस्त्र जकाँ अछि, जेकरा जेते बेर साबुन लगा धौबै तेते ओकर मैल छँटैत जाएत आ चमक अबैत जाएत। मुदा तैसंग मनमे ईहो शंका तँ उठिये रहल छल जे तँए बुझै-सुझैक संग करैले समय चाही, जे अपना गतिये तेना पड़ाएल जाइए जे ओकरा पकैड़ चलब कठिन अछि। ओना, विचारो आ क्रियोक अपन गति अछिए मुदा से गति निर्भर करैए कर्तापर। जेहेन कर्ता भर्ता करैए तेहेन धर्ता धारण करिते अछि...।

बजलौं- "उदय, अही प्रकाश पुंजकेँ..?"

आगूक विचार पेटेमे छल कि तइ बिच्चेमे उदयलाल आगूक विचारकेँ लोकैत बाजए लगल-

"भाय, पहिल साँझ लक्ष्मी पूजा छी, दिवा रातिमे काली पूजा सेहो हएत आ भोर होइते गोबरधन पूजाक आगमन सेहो भइये जाएत। माल-जालक घरो आ बाहरोमे दुभि-धानक संग फूलो-पातसँ भरल-पूरल बखारक पूजा सेहो छीहे।"

बजलौं- "हँ, से तँ छीहे!"

उदयलाल बाजल- "तँए कि पाबैन विसरजन भऽ जाएत। प्राते भने दोसर दिन भरदुतिया छी, जे भाए-बहिनक भरै-पुरैक पाबैन अछि। सभ बहिन नौतहारिनी भेली आ सभ भाए नौतपूरा भेला।"

ओना, जइ सुढ़िये उदयलाल बजै छल तइ सुढ़िये अपने नइ बुझै छेलौं मुदा भकुआएल लोककेँ जेना-जेना भकुपन कमैत जाइ छै आ मन फरीच होइत जाइ छै तहिना हुअ लगल, जइसँ उदयलालक विचार सुनैमे नीक लगिये रहल छल। बजलौं-

"हँ, से तँ छीहे!"

उदयलालक विचारकेँ जहिना सह भेटल, तहिना सहटैत सहीटमे आबि बाजल- "भाय, परिवारक आँगनक बीच आँगनमे

अरिपन साजि आसन ओछा दुनू हाथमे सिनूर-पीठार लगा पानक पात पसारि फूल-मखान आ अच्छतसँ दुनू भाए-बहिन अपन सम्बन्धकेँ पूजित करिते छैथ।”

बजलौं- “ई तँ अदौसँ पूजित होइत आबि रहल अछि।”

उदयलाल बाजल- “भाए-बहिनक पावनिक संग चित्रगुप्त पूजा सेहो छी।”

बजलौं तँ किछु नहि, मुदा मुड़ी जरूर डोला देलिऐ। जेना उदयलालकेँ अपन विचारमे सहक संग समरथन सेहो भेटल होइ तहिना भेलइ। मुस्की दैत बाजल-

“भरदुतियाक प्रातेसँ छठि पावनिक विधिकरण शुरू हएत। माछ-मड़ुआ बाड़बसँ विधिकरण शुरू होइत उगैत-डुमैत दुनू सुर्जक अर्घदान होइत, सामा-चकेबाक सम्बन्धक सोहर-समदाउनक शुरूआतक संग आँगनमे अरिपनक बीच हर-कोदारि, खुरपी, हाँसूक संग खराम सेहो पूज्य होइत देहधारी देवक आगमनक बीच देवोत्थान (देवउठान) सेहो होइते अछि। तेकर लगले पछाइत हनुमान जन्मोत्सवक सटले कोसी-कमलाक स्नानक संग सामा-चकेबाक विदाइ होइत कातिकक उसरन होइए।”

तही बीच कृष्णदेव भाय महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फूकि देलखिन। दुनू भाँइ उठि कऽ विदा भेलौं।



शब्द संख्या : 2422, तिथि : 29 अक्टूबर 2018

हारि केना मानब

शारदीय नवरात्र चारि दिन पहिनहि समाप्त भऽ गेल, काल्हि पुर्णिमा छी। सुभ्यस्त समय रहने नवरात्र धूम-धामसँ सम्पन्न भेल। सूर्यास्त भऽ गेल, ब्रह्माजी गायित्री जप शुरू ऐ दुआरे नहि केने छला जे इन्द्रासनसँ कौल्हुका भारक आदेशपत्र नहि आएल छेलैन।

सूर्यास्त होइते, होइते किए तहूसँ पहिनहि चान अकासमे बिनु रश्मियोक ओहिना उगल छल जहिना खखरियाएल धान बिनु चाउरक होइए। हँ, एते जरूर भेल जे सूर्यास्त होइते मनोक रंग आ रंगोक मनमे ब्रह्माजीकेँ लालिमा बढ़ए जरूर लागल छेलैन। तहूमे आइ चतुरदशीक चान छी। होइतो अहिना छै जे 'उगै चान कि लपकी पूआ..!' यएह चान ने भोरक सीमापर पहुँचते पूर्णिमा बनए लगत आ साँझ होइते पूर्णिमाक रंग-रूप पकैड़ उगि कऽ जगमगा जाएत, जे बारहो चानसँ–माने बारहो मासक चानसँ–अवल-धवल, शीतल, शीतचरक संग कोजागराक कौड़ी पाश[9]पर बैसल जुआरी सभकेँ सेहो केकरो हँसेबो करत तँ केकरो कनेबो करबे करत। खाएर जे करत, ओकर राति छिऐ, जे मन फुरतै, जेना मन फुरतै तेना अपन करत। नँगटे नाचह आकि नाँगट बनि नाचह से ओ जानए।

ब्रह्माजी ऐ दुआरे गायित्री-बन्धन नहि कए पबै छला जे अपन ब्रह्म-मुहूर्तक हिसाब नहि मिलि रहल छेलैन। ओ हिसाब छी, आजुक

---

[9] पचीसी

जिनगीक बिसरजन क्रियाकेँ काल्हुक क्रियामे जोड़ि एकसूत्रता बनाएब। तही बीच इन्द्रक सिपाही आबि ब्रह्माजीक हाथमे एकटा चिट्ठी थम्हा, नमस्कार करैत विदा भऽ गेल।

चिट्ठी उनटा जखन ब्रह्माजी देखलैन तँ पहिने हँसी लगलैन मुदा राज्यादेश[10] मानि राजपत्रक फाइलमे रखलैन। फाइलकेँ पुन: उनटा चिट्ठी निकालि दोहरा कऽ पढ़लैन। लिखल अछि- ‘ओहन मनुक्खक निर्माण करैक अछि जे काल्हुक अनुकूल हुअए।’

‘आइक दिन केहेन छल आ काल्हि दिन केहेन बनत’ ई विचार असगरमे करब ब्रह्माजी ठीक नहि बुझलैन। तेकर कारण ई नहि जे ब्रह्माजी विवेकवान् नहि छैथ, भरपूर छैथ। ठीक-ठीक[11] कोनो विषयक मूल्यांकन करैक क्षमतामे कमी नहि छेलैन जइसँ निर्णय करैमे बाधा होइतैन। मुदा एते तँ मनमे शंका छेलैन्हे जे देवगण सभ एहेन जाबीर तँ छथिये जे धरती परहक मनुक्खकेँ निरमबैकाल मुँह देलिऐ खाइ-पीबैले, दाँत देलिऐ काटैले, कण्ठ देलिऐ घोंटैले आ ठोर देलिऐ ओकर टाट-फरक लेल तखन जे बलजोरी ओकरा सभसँ अक्षर निकालि बजेबो केलैन आ अपनो बजै-भुकैक मुँह बना देलैन तइमे हमर कोन दोख। तँए नीक हएत जे भने चतुरदशीक चान सेहो उगले अछि, इमानो-धरम आ बुधियो-विवेककेँ बजा विचारि लेब नीक हएत। बेकतीगत क्रिया जरूर छी मुदा ओहूमे तँ परिवार अछिए। पाँच मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। हमरा मनुक्ख निरमबैक मात्र भार भेटल अछि आकि ओइ मनुक्खकेँ बिआह केतए हएत आ बरिआती केते जेतै सेहो भार कि हमरे अछि। ओ विधाताक जिम्मा छैन। तँए ओ अपन पोथी-पतरा देखियो कऽ आ लिखियो कऽ करता।

---

[10] शासनक आदेश

[11] सोलहअना

बारहो मासक चानसँ बारहो मासक मौसमक रूप वर्णित होइते अछि। तँए चानोक चैतन्य रूप-रंगपर मनसूनक प्रभाव सेहो पड़िते अछि। तइमे सभसँ सुभ्यस्त मनसून आसिनक चानकेँ राति भरि भेटैए।

चारू गोरेकेँ–माने इमनदारो भाय, धरमदेवो, बुधिनाथो आ विवेकोननकेँ–समाद ब्रह्माजी पठा देलैन।

जाबे ओ चारू पहुँचला तइ बीचमे जे खाली समय मन पेलकैन तइमे उपैक गेलैन जे अनेरे विधाताक काजक भाँजमे पड़ि गेलौं! अपन काजक ने जवाबदेह अपने छी आकि दुनियाँक ठीकेदारी अछि। जखन हुनका (विधाताकेँ) छुट्टी भेटतैन तखन ओ बर-कनियाँ कपारमे लिखैत रहता। कियो अपने बुधि-विवेकसँ ने अपन काज करै छैथ। कियो काज केलाक पछाइत छुट्टी पबैए आ ओ (विधाता) छुट्टी भेलेपर काज करै छैथ। ओहन-ओहन देवगणक भार हमरा बुते उठत। गणो तँ गणे छी किने, खुशामद करि कऽ काजो करा लेता आ उनटा कऽ बजबो करता जे ई काज फल्लाँकेँ हमहीं सिखौने छिऐ किने। भाय! जब एते सिखबै-पढ़बैकक लूरि-बुधि अपने अछि तखन अपन-अपन जिनगीक काज अपने सम्हारैत चलू। जिनगी कोनो अफ्रीका बोनमे आकि कैलाशक पहाड़क झाड़मे नुकाएल अछि जे नइ देखब। देखिते छी जे एक बीघा खेतबला दू बीघा बनबए चाहै छैथ, हाइ स्कूलक शिक्षक कौलेजक प्रोफेसर बनए चाहै छैथ। एकटा करखानाबला दोबर बनबए चाहै छैथ इत्यादि-इत्यादि सभ चाहिते छैथ। एते तँ दुनियाँकेँ एक्के नजैरमे देखि जाइ छी मुदा अपन जे आँखियो आ नजरियो भरिदिन संगेमे रहैए से देखबे ने करै छी! हँ, तखन ईहो बात अछिए जे आँखि ने केकरो अपना कपारमे सटल रहैए मुदा नजैर से थोड़े रहैए, ओ तँ नजैरवाने लक ने रहैए।

ब्रह्माजीक समाद पबिते इमनदार भाय अपन सभ काज छोड़ि दौड़ले पहुँचला।

ओना, इमनदार भाइक मनमे ब्रह्माजीक आदेश रहैन तँए मानै छला जे जे कहता से करब। मुदा ब्रह्माजी तँ परिवारक अंग बुझि सभकेँ विचार करैले बजौने छेलखिन तँए बाँकी तीनूक- धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकाननक प्रतीक्षामे प्रतीक्षारत् छथिए, तँए किछु बाजि नै रहल छैथ। जइसँ किछु बजै नइ छला। संजोग बनल, तीनू गोरे–माने धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन–संगे पहुँचला।

चारू गोरेक बीचमे ब्रह्माजी अपन राज्यादेशक राजपत्र रखि बजला-

“एकरा पढ़ि कऽ सभ बुझियो लाए आ विचारो दाए जे ‘औझुका मनुक्खक निर्माण केहेन करब?”

चिट्ठीकेँ बुधिनाथ पढ़लैन आ सभ कियो सुनला। ओना, सुनि-सुनि जहिना इमनदार भाय बिहुसै छला तेना ने विवेकानने बिहुसै छला आ ने बुधिनाथेकेँ ओहन बिहुसी एलैन। मुदा धर्मनाथक मन कोठीक गोरा तरमे राखल चुनक कोहीक मुँह जहिना चुन सन रहै छै तहिना होइत रहैन। बाजैथ किछु ने मुदा तरे-तर मन मसकैन जे घरसँ लऽ कऽ दुनियाँ धरिमे जँ केकरो गरदैनकट्टी भेल तँ हमर भेल हेन। चिड़ै जकाँ एकोटा पाँखि देहमे सटल ई समय नहि रहए देलक। मुदा तँए कि हारि मानि लेब! जखन धरतीपर जनम लेलौं, धरती सबहक माता छैथ तँ हमरो ने छथिए। माए-बच्चाक सिनेह तँ दुनू दिस ने हएत।

चिट्ठी सुनि सभ कियो गुम्म भऽ विचार करए लगला जे समय-सापेक्ष मनुक्ख बनै आकि मनुक्ख-सापेक्ष समय बनै, आजुक मनुक्खक मुख्य रूप छी। ओना, ब्रह्माजी विचारकेँ विचारि मने-मन

मनेमे रखि नेने छला। मुदा समैयक प्रभाव तँ देखिये रहल छला जे परिवारमे बेटा माए-बापकेँ कहैए जे तूँ हमर की केलह? जँ पुतोहु एहेन बजै तँ उचित छै, किएक तँ ओकर जन्मो आ सेवो ओकर माए-बाप केलकै-देलकै। सियान भेला पछाइत दोसर घर आएल। मुदा बेटा जँ एहेन बजैए ते जरूर कोनो बाल विद्यालयक पढ़ाइक ज्ञान छीहे। सतरह बापूतक सतरह रंगक कोचिंग अछिए, जइमे सतरह रंगक बुधि-विचारक मनुक्खो बनबे करत।

आँखिक टुसकीसँ ब्रह्माजी इमनदार भायकेँ पुछलैन। जेना रस्तेसँ इमनदार भाय विचारैत आएल होथि तहिना धाँइ-दे उठि कऽ ठाढ़ भऽ बजला-

"कान खोलि सभ सुनि लिअ, ब्रह्माजी जे एकरंग मनुक्ख गढ़बो करता तैयो ओ बेदरंग हेबे करत जइसँ लड़ाइ-झगड़ा करबे करत। जइसँ आइ धरिक इतिहासमे छोट-पैघ लगा कऽ चौदह हजार लड़ाइ भेल अछि, ओ भेल अछि कहियो देव-दानव कहि तँ कहियो रक्षा-राक्षस कहि। ई भेल अतीत, आगू अछि भविस आ बीचमे अछि वर्तमान।"

इमनदार भाइक बात सुनि धर्मनाथक चुनियाएल मन कनी-कनी पुनियाए लगल। पुनियाइत धर्मनाथक मनक तामसमे पुनपन आबए लगलैन, बजला-

"अतीत भेल बेतीत आ बेतीतसँ जे अपरतीत भेल से भेल प्रीतक पूर्व अवस्था- परपरतीत।"

तही बीच नारदबाबा वीणा नेने बिनु समादे पहुँच गेला। परिवारोमे अहिना होइए जे जँ कोनो विचार करए परिवारजन बैसब आ जँ कियो बाहरी लोक आबि गेला तँ पहिने हुनकर विचार सभ सुनिते छी।

ब्रह्माजी नारदबाबाकेँ कहलैन-

“भने अहाँ आबिये गेलौं। अहोभाग हमरा परिवारक। देश-दुनियाँक की हाल अछि?”

नारदबाबा पहिने वीणाक तारक जड़िकेँ कनेठी दऽ कऽ ठीक केलैन। किएक तँ मनमे उठि गेल छेलैन, हाथमे जे वीणा अछि ओ छी कोन, मुहसँ फुकैबला सपहरिया सबहक आकि सरस्वती मैयाक हाथक? सारसत्त्वक मन रहितो असारसत्त्व केतए-सँ आबि जाइए..! नारदबाबा अपन विचार मंथन जे करए लगला तइसँ वीणोक हाथ रूकि गेलैन आ मुँहक वाणीकेँ सेहो धियानी धऽ लेलकैन जइसँ ब्रह्माजीक द्वारा पुछला पछातियो नारदबाबाक मुँह बन्ने रहलैन।

नारदबाबाकेँ चुप देखि बुधिनाथ टुसकी दैत बजला-

“बाबा, अहाँ तीनू भुवनसँ टहैल-बुलि कऽ देखि-सुनि एलौं हेन मुदा तैयो किए मुँह..?”

ओना, बुधिनाथक इशारा नारदबाबा बुझि गेला मुदा बुधियार लोक लेल ईहो तँ आफत अछिए जे नीको बात कि विचारकेँ सभठाम नइ बाजल जाइए...। अपन दिन-दुनियाँ देखैत नारदबाबा बजला-

“बौआ, पेटमे विचारक लहैर उठल अछि जइसँ बजैले मन तनफनाइए जरूर, मुदा अपन हारल.., लोक, लोक लगमे बजबो केना करत!”

ओना, ब्रह्माजी नारदबाबाक विचार सुनि मुस्की मारैत टुस्की दैत रहथिन मुदा विवेकाननक नजैर बुधिनाथपर टिकल छल आ धर्मदेवक नजैर इमनदार भायपर, जइसँ नारदबाबाक बात कियो ने सुनबे केलैन आ ने बुझबे केलैन। जहिना एकटा ऋृषि अपन इमानकेँ धरम बुझि सत्यक बाट धेने चलैत रहला। एकटा शिकारी एकटा

गाएकेँ खेहारने आबि रहल छल। गाइयक दशा देखि हुनका मनमे दयाक सागर उमैड़ गेलैन। जान बँचौने गाए पड़ाएल जाइ छल। रस्ताक ओझलसँ आकि बोन-झाड़क ओझलसँ गाए शिकारीक नजैरसँ हटि गेल। शिकारी ऋृषि लगमे आबि गाइयक जानकारीक बात पुछलकैन। स्पष्ट शब्दमे ओ ऋृषि जवाब देलखिन जे जे देखलक से बाजत नहि आ जे बाजत से देखलक नहि, तहिना भेल। चुपा-चुपी देखि इमनदार भाय बजला-

"से की बाबा?"

अपन मजबूरीसँ बेवस भेल नारदबाबा बजला-

"बौआ, बाल-बोधसँ कोनो विचार छिपाएब पाप छी। तँए तोरा सभसँ किछु ने छिपेबह।"

नारदबाबाक उमड़ल मनक सागरकेँ विवेकोनन, बुधिनाथो, धर्मदेवो आ इमनदार भाय सेहो टकटकी लगा देखए लगला।

नारदबाबाक मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-पाछू होइक कारण भेलैन अपन तीनू भुवनक रूप-चित्र देखब। नारदजीक रूप-चित्र छैन, भक्तिक तीन पद्धतिमे–माने व्यास पद्धति, हनुमन पद्धति आ नारद पद्धति–एक पद्धतिक दाताक रूपमे नारदबाबा अपनो छैथ मुदा दोसर रूप जे देखि रहल छला तइमे गाम-घरक पुरुख-पातरसँ लऽ कऽ मौगी-मेहैर धरिक बीचक छेलैन, जे नारदबाबा एक नम्बर झगड़लगौन छैथ। घरोबला आ घरोवालीकेँ सुख-चैनसँ रहऽ नहि दइ छैथ। एक गोरेकेँ कहै छथिन अहाँक पति नोनियाह भऽ गेल छैथ आ दोसरकेँ कहै छथिन पत्नी अहाँक देह चटै छैथ। से ओ चाहे मर्त्य-भुवनक हुअए आकि देव-भुवनक।

ब्रह्माजी नारदबाबापर नजैर फेड़लैन। नजैर फेड़ाइते नारदबाबाक मन फुरफुरेलैन। बजला- "बौआ, नीक काज तँ नीक

होइते अछि जे अधलो काज कखनो नीक भऽ जाइए। तहिना नीको काज केतौ अधलो भऽ जाइए! बुझिये ने पेब रहल छी जे नीक की आ अधला की भेल।"

धर्मदेव बिच्चेमे टपकल- "जेना?"

नारदबाबा बजला- "बुद्धदेव आ महावीर जैनक नाम सुनने हेबहक?"

"हँ! इतिहासक किताबोमे पढ़ने छी।"

"दुनू सन्त छला, जहिना भोजनमे सादगी तहिना वस्त्रमे सागदी आ तहिना विचारक संग बेवहारोमे सादगी दुनूकेँ छेलैन। अपन विचारक विद्यालयमे अध्ययनसँ केकरो परहेज नहि करै छला। खुलल किताब जकाँ दुनूक विचारो आ बेवहारो छेलैन।"

"हँ, से तँ छेलैन्हे।"

"दुनू एक्के युगमे भेला, एक्केरंग दुनू युगद्रष्टा सेहो छला।"

"हँ, से तँ छेलाहे।"

"मुदा..?"

"यएह जे एकगोरे 'बहुजन हिताय' आ दोसर गोरे 'सबजन हिताय' मानै छला।"

ओना, 'बहुजन हिताय' आ 'सभजन हिताय'क भाँजमे चारू गोरे– इमनदार भाय, धर्मदेव, बुधिनाथ आ विवेकानन–ओझरा गेला। तँए मने-मन सभकियो विचारए लगला। जेकरा बुझि कऽ ब्रह्माजी मने-मन मुस्की मारि रहल छला। सभ अपने-अपने विचारमे तेना फँसि गेला जे वक्ता कियो रहबे ने केलाह। जइसँ चुपा-चुपी पसैर गेल।

ब्रह्माजीक मनमे भेलैन जे एना जँ कोनो विचार करए बैसी आ

कियो बजनिहारे ने रहता तखन विचार की हएत! नारदबाबाकेँ चरियबैत बजला-

“नारदजी! इन्द्रासनसँ आदेशपत्र आएल अछि, आजुक मनुक्ख निरमबैक, तइमे..?”

नारदबाबाक मन दुनू दृष्टिसँ कड़ुआएल छेलैन्हे, पहिल- चलैत-चलैत तेतेक थाकि गेल छला जइसँ मन कड़ुआ गेल छेलैन आ दोसर- तीनू भुवनक चालि-चलैनिक बेवहार देखि मन तेना अगिया गेल छेलैन जे विचार करिया गेल छेलैन। ओही कड़ुआएल- करियाएल मनक बीच ब्रह्माजीक प्रश्न छेलैन। नारदबाबा बजला-

“आजुक जेहेन दुनियाँ अछि तइमे सभसँ उत्तम कोटिक निर्माण (मनुक्खक निर्माण) ओ हएत जे निर्माणाधीनकेँ (जेकर निर्माण करब) पूजी (पाइ) अनुकूल माने गरीबीमे नेपाली भतहा दारू अमीरीमे कनाडियन सरहा दारू पीआ मोटर साइकिलक सवारीपर चढ़ा, एक हाथमे मोबाइल आ दोसर हाथमे सिगरेट धरा जइसँ सवारीक हेण्डिलकेँ छोड़ि अन्हा-गाँहींस बाटपर चलैत रहत, सभसँ नीक निर्माण यएह हएत।”

ब्रह्माजी बुझि गेला जे नारदजी खिशिया कऽ विचार देलैन। ओना, हुनको विचारकेँ सोल्होअना नहियोँ मानब नीक नहियेँ हएत। किएक तँ अपने ने बैसल-बैसल निरमबै छी, मुदा नारदजी तँ तीनू भुवनकेँ टहैल-बुलि देखै छैथ तँए देखलाहा बजला अछि...। अपन विचारकेँ बेवहारिक बना ब्रह्माजी बजला-

“नारदजी, अहाँक विचारसँ सहमत छी तँए समर्थन करै छी, मुदा एहेन मनुक्खसँ तँ जग-हँसार हएत! किछु छी ते जवाबदेहीमे छी किने।”

ब्रह्माजीक विचार सुनि नारदजी अपन क्रोधकेँ मने-मन घोंटए

लगला। मुदा जहिना डुमैबला वस्तु पानिमे जाइते डुमए लगैए आ बिनु डुमैबला अथाहो पानिमे अलगले रहैए, तहिना नारदबाबाक मनमे उठैत रहैन। अपन पल्ला झाड़ैत बजला-

"लोको की लोक छी, जहिना बिनु सींग-सींग्हौटीक अछि तहिना बिनु नाँगैर-पुछड़ीक सेहो तँ अछिए, तेहने...।"

ब्रह्माजी बजला-

"बदनामी हएत..!"

नारदजी बजला-

"जे बदनाम करत ओ तँ अपने बदनाम अछि, तखन बदनामीक लाज केकरा हएत? हमरे कियो पद्धतिकर्ता कहैए आ कियो घर-जरौन कहैए, तेकरा हम की करबै।"

ब्रह्माजीकेँ नारदजीक विचार जेना जँचलैन। जँचिते मनमे खुशी उपकलैन जइसँ मुँह मुस्कियाए लगलैन। मुस्की दैत नारदजी बजला-

"तखन?"

"तखन की! अहींकेँ लोक की बुझैए से बैसल-बैसल बुझबै, कियो बेइमान कहैए आ कियो नशाबाज..!"

"से केना?"

"जेकरा घरमे बेटीक बाढ़ि अबैए ओ बेइमान कहैए आ जेकर बुधि भँसिया जाइ छै ओ भँगपीबा कहैए।"

"ऐमे हमर कोन दोख?"

"से अपना मने बुझने हएत। बजबै जे भाय हम तँ दुनियाँकेँ नजैरमे नर-नारीक सृजन करै छी, तहिना बुधि-विवेकक सेहो करै छी। मुदा तइसँ लोक मानत। ओ थोड़ै बुझत जे मकान बनौनिहार तँ

पहुँच गेल, मुदा केतौ सीमेंट कम रहल आकि बालुए कम रहल, तइ दुआरे मकान बनौनिहार कामै हएत। ओ तँ कमो-बेसी करि कऽ मशाला तैयार कइये लेत।”

ब्रह्माजी-

“तखन?”

नारदजी-

“तखन यएह जे केतौ बदनामी हएत तँ कहबै जे भाँग कनी बेसी पीआ गेल छल। तँए, हारि थोड़े मानि लेब।”

❑

शब्द संख्या : 2054, तिथि : 02 नवम्बर 2018

❑❑❑

❑❑

❑

Notes